INDIAN RAILWAYS
भारतीय रेल
सेलम ज्योति
दक्षिण रेलवे, सेलम मंडल
2022-23
अंक -10

बिनीता सोय, राजभाषा अधिकारी, सेलम

सेलम ज्योति 2022-23

संरक्षक
श्री पंकज कुमार सिन्हा
मंडल रेल प्रबंधक

सह संरक्षक
पी. शिवलिंगम
अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक
सुश्री बिनीता सोय
राजभाषा अधिकारी

संपादक मंडली
राजभाषा अनुभाग,
सेलम

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। इससे संपादक मंडली का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

संपर्क कार्यालयः राजभाषा अनुभाग, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, दक्षिण रेलवे, सेलम मंडल, सेलम – 636005 रेलवे फोन—65030/32, बी.एस.एन. एल. फोन - 04272336833, ई-मेल - ra@sa.raillnet.gov.in

उपलब्धियां

दक्षिण रेलवे
SOUTHERN RAILWAY

सेलम मण्डल
SALEM DIVISION

महाप्रबंधक का वार्षिक निरीक्षण / GENERAL MANAGER's ANNUAL INSPECTION

जोलारपेट्टै जंक्शन से ईरोड जंक्शन तक / From Jolarpettai Junction to Erode Junction

दिनांक / Date: 21.09.2022

योग्यता प्रमाण पत्र एवं नकद पुरस्कार / Merit Certificate cum Cash Award

श्री/श्रीमती/कुमारी/ग्रुप Rajbasha team / SA division
Shri / Smt / Kum / Group

पदनाम/स्टेशन
Designation / Station

को रुपए Rs 5,000/-
is awarded Rupees

उनके उत्तम कार्यनिष्पादन की सराहना में प्रदान किया जाता है / in recognition of her / his / their meritorious work.

दिनांक / Date : 21.09.2022

(वी जी माल्या / V.G.Mallya)
महाप्रबंधक / General Manager.

राजभाषा में उत्तम कार्य निष्पादन हेतु राजभाषा अनुभाग को महा प्रबंधक द्वारा योग्यता प्रमाण पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

RAJBHASHA OUTSTANDING AWARD

विजेता / WINNER

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सेलम की ओर से मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय/सेलम, दक्षिण रेलवे, को राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य-निष्पादन के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भारत सरकार
रेल मंत्रालय
(रेलवे बोर्ड)
प्रमाण–पत्र

श्री एम. सतीश, मुख्य कर्मचारी व कल्याण निरीक्षक, कार्मिक शाखा, सेलम मंडल, दक्षिण रेलवे को वर्ष-2020 में अपना अधिकांश कार्य हिंदी में करने के लिए रेल मंत्रालय की ''राजभाषा व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना'' के अंतर्गत 3000/– रुपये के पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र से सम्मानित किया जाता है।

नई दिल्ली
दिनांक : 13.12.2022

डॉ. वरुण कुमार
निदेशक, राजभाषा
रेलवे बोर्ड

आधार वर्ष - 2020 के लिए श्री एम. सतीश, मुख्य कर्मचारी व कल्याण निरीक्षक, कार्मिक शाखा, सेलम को हिंदी में अधिकाधिक काम करने के उपलक्ष्य में रेलवे बोर्ड के व्यक्तिगत नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भारत सरकार
रेल मंत्रालय, दक्षिण रेलवे
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, सेलम मंडल
सेलम - 636005

संरक्षक की कलम से....

दक्षिण रेलवे, सेलम मंडल से प्रकाशित वार्षिक गृह पत्रिका "सेलम ज्योति" के रोचक और आकर्षक रचनाओं से परिपूर्ण 10 वें अंक आप सभी को सौंपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है।

देश और जनता की सेवा करने तथा उन्हें जोड़ने में रेल और राजभाषा हिंदी की भूमिका अति महत्वपूर्ण रही है। रेल जहां सुदूर प्रदेशों को जोड़ती है, वहां राजभाषा हिंदी रेलवे में कार्यरत विभिन्न प्रांतों के कार्मिकों को जोड़ने के साथ- साथ रेल में सफर करने वाले विविध भाषा-भाषियों के लिए संपर्क सूत्र का काम भी करती है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में इस पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। मुझे आशा है कि पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से हिंदी भाषा के प्रति पाठकों की रूचि बढेगी और रेल कार्मिकों द्वारा कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में और वृद्धि होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(पंकज कुमार सिन्हा)
मंडल रेल प्रबंधक
दक्षिण रेलवे, सेलम मंडल

भारत सरकार
रेल मंत्रालय, दक्षिण रेलवे
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, सेलम मंडल
सेलम - 636005

सह संरक्षक की कलम से....

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि हिंदी गृह-पत्रिका सेलम ज्योति के 10 वें अंक का प्रकाशन हो रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में यह एक आशावादी कदम है। यह पत्रिका मंडल की प्रमुख गतिविधियों और उपलब्धियों की सूचना के साथ रेल कार्मिकों के साहित्यिक अभिरूचि को भी प्रदर्शित करती है। इस तरह की पत्रिकाओं के निरंतर प्रकाशन से कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में कार्य करने का एक सकारात्मक माहौल बनता है। इससे कार्मिक अपनी भावनाओं और विचारों को कलम की मदद से व्यक्त कर पाता है।

मुझे पूर्ण आशा है कि राजभाषा विभाग द्वारा मंडल में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासों एवं उपायों से राजभाषा हिंदी के प्रयोग में वृद्धि होगी और इस तरह के रचनात्मक कार्यों से कार्मिकों की छिपी हुई साहित्यिक प्रतिभा निखर कर सामने आएंगी। इस पत्रिका में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों और पूरे संपादक मंडल को पत्रिका के प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

15/3/23

(पी. शिवलिंगम)
अपर मंडल रेल प्रबंधक
दक्षिण रेलवे, सेलम मंडल

भारत सरकार
रेल मंत्रालय, दक्षिण रेलवे
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, सेलम मंडल
सेलम - 636005

संपादक की कलम से....

सेलम मंडल की गृह-पत्रिका 'सेलम ज्योति' का 10वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेशों के अनुपालन में कार्यालय में हिंदी में कार्य करने का सकारात्मक माहौल तैयार करने में इस तरह के प्रकाशन अहम भूमिका निभाती है। अपने विचारों को शब्दों में व्यक्त करना एक कला है और यह गृह-पत्रिका रेल कार्मिकों को हिंदी भाषा में विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करती है। यह सिर्फ लेखन प्रतिभा में निखार ही नहीं लाती अपितु हिंदी भाषा में मूल रूप से सोचने की शक्ति को भी बढ़ाती है। ऐसे प्रयासों से हिंदी में काम करने में सहजता आती है और हिचक व संकोच धीरे-धीरे दूर हो जाती है। सेलम ज्योति गृह-पत्रिका के इस अंक में भिन्न-भिन्न विषयों को शामिल कर इसे रोचक और पठनीय बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। आशा है कि इस गृह-पत्रिका के सभी रचनाएं आपको पसंद आएंगी। सभी पाठकों से विशेष आग्रह है कि इस गृह-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं पर अपनी टिप्पणी एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं और अगले अंक को अधिक रोचक व आकर्षक बनाने में अपना योगदान दें।

मैं उक्त पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए समस्त लेखकों तथा संपादक मंडल को शुभकामनाएं देती हूँ।

(बिनीता सोय)
राजभाषा अधिकारी
दक्षिण रेलवे, सेलम

सेलम ज्योति

	शीर्षक	लेखक	पन्ना सं.
1.	आजादी का अमृत महोत्सव- भारतीय रेल की भूमिका	पवन कुमार वर्मा, मंडल पर्यावरण गृह व्यवस्था प्रबंधक	9
2.	हर पल जीवन का आनंद ले (लघु कहानी)	बिनीता सोय	15
3.	स्टार्टअप इंडिया (लेख)	पी. शिरंजीवी राव	16
4.	बाढ - विवाह (हास्य कथा)	एन.गुरुमूर्ति	20
5.	कार्यालयी कार्यों में हिंदी की प्रगति (लेख)	मोहन	23
6.	भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिला सेनानी (लेख)	के.वी. निमिता	25
7.	स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका (लेख)	रूपा मंडल	29
8.	जीवन मूल्य (लेख)	जी. भुवनेशवरी	32
9.	मैं और मेरा बटुआ (कविता)	जयसन ए. फिलीपोज	35
10.	क्यों जरूरी है भारत में समान नागरिक संहिता (लेख)	अमित कुमार मिश्रा	36
11.	गरीबों की बस्ती (कविता)	विजय महतो	40
12.	हस्त लिखित संविधान (लेख)	सपना सोनी	41
13.	जिंदगी की चाय (कविता)	पी. शिरंजीवी राव	43
14.	मां एक रिश्ता (लेख)	बलिराम प्रसाद	44
15.	भारत में विभिन्न व्यंजन और युवाओं में रेस्टोरेंट में खाना खाने की प्रवृत्ति(लेख)	इमरान खान	47
16.	गौतम -आह्वान (कविता)	वीरेंद्र कुमार शर्मा	51
17.	ऑनलाइन शिक्षा (लेख)	सूरज	52
18.	स्वामी विवेकानंद(लेख)	पी. अशोकन	54
19.	पेट की भूख (लेख)	भरत कांत	56
20.	वार्किंग इन साइक्लोपीडिया (लेख)	आर. रेखा	58
21.	तारमंगलम कैलाशनाथर मंदिर (लेख)	एम.कनिमोढ़ि	60
22.	मेरे ख्वाब (कविता)	के.वी. निमिता	62

केवल निशुल्क वितरण के लिए

आजादी का अमृत महोत्सव- भारतीय रेल की भूमिका

पवन कुमार वर्मा, मंडल पर्यावरण गृह व्यवस्था प्रबंधक

प्रस्तावना

किसी विचारक ने क्या खूब कहा है कि **स्वतंत्रता का अभाव** ही असली स्वतंत्रता का एहसास कराता है अर्थात जब आपसे आप की स्वतंत्रता छीन ली जाती है उस समय असली स्वतंत्रता का एहसास होता है । समाज में देशभक्ति की भावना जगाना ही '**आजादी का अमृत महोत्सव**' का उद्देश्य है । अमृत महोत्सव प्रगतिशील भारत की आजादी के 75 साल को मनाने और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को याद करने के लिए भारत सरकार की एक पहल है । प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 12 मार्च 2021 को साबरमती आश्रम, अहमदाबाद से '**दांडी मार्च**' को हरी झंडी दिखाकर '**आजादी के अमृत महोत्सव**' का उद्घाटन किया था । उन्होंने यह भी कहा था कि राष्ट्र का गौरव तभी जागृत होता है जब हम अपने स्वाभिमान और बलिदान को याद करते हैं और उसे अगली पीढ़ी को भी बताते हैं ।

इस वर्ष 2022 में भारत को आजादी के 75 वर्ष पूरे हो जाएंगे जो कि सभी के लिए एक गर्व की बात है । लेकिन भारत की वर्तमान युवा पीढ़ी आजादी के संघर्ष को इतना बेहतर ढंग से नहीं जानती है कि भारत को आजाद कराने के लिए किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा था और क्या-क्या कुर्बानियाँ देनी पड़ी थीं । भारतीय रेल ने देश के अनेकों स्थान पर विभिन्न क्षेत्रों में कई योजनाओं का शिलान्यास किया है । जिसके माध्यम से लोगों को प्राचीन वस्तुओं का महत्व और उसकी गुणवत्ता का पता चला है, जिस पर आज की आधुनिक समाज की बनावटी और चकाचौंध कर देने वाली दुनिया ने पूरी तरह से पर्दा डाल दिया था ।

आज भारत को एक बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश कहा जाता है क्योंकि भारत में युवाओं की संख्या बहुत अधिक है जो अपनी काबिलियत से लगातार तरक्की कर रहे हैं और देश के विकास में सहायता कर रहे हैं, लेकिन भारत ने एक बुरी अर्थव्यवस्था का दौर भी देखा है जब आजादी के बाद भारत को बटवारा देखना पड़ा और उस समय के बाद भारत की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से टूट चुकी थी लेकिन फिर भी लगातार प्रयास के बाद और देश प्रेम के दम पर भारत एक बार फिर अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत करता नजर आया और विश्व में अपनी जगह भी बनाई।

विषय विस्तार

आज जिन भी कारणों से हमारा देश हर दिशा में युवाओं की प्रतिभा, कड़ी मेहनत और लगन के माध्यम से निरंतर नई-नई ऊंचाइयों को छूता जा रहा है आत्मनिर्भर भारत, आजादी का अमृत महोत्सव, स्वच्छ भारत आदि उसी किताब के कुछ पन्ने हैं । स्वतंत्रता पाने की इच्छा एवं स्वतंत्र रहने की इच्छा प्राणियों का प्रकृति प्रदत्त गुण है। इसी भाव को व्यक्त करने वाली संस्कृत की एक पंक्ति का हिंदी अनुवाद कुछ इस प्रकार है: "तोता सोने के पिंजरे में बंधा हुआ भी प्रसन्न नहीं दिखाई देता है" ।

आजादी का अमृत महोत्सव

जिस तरह तलवार की धार को बनाये रखने के लिए उसे निरंतर रेतना पड़ता है ठीक उसी प्रकार हर पीढ़ी को आजादी के अमृत महोत्सव रुपी यन्त्र से रेतकर जागरूक करना पड़ेगा ताकि उन्हें पता चल सके कि आजादी को हासिल करने में भारत को कितना संघर्ष करना पड़ा था, कितने बलिदान देने पड़े थे। उसके बाद कहीं जाकर भारत को आजादी मिली।

आजादी का अमृत महोत्सव 'आत्मनिर्भर भारत' की भावना से प्रेरित है। महोत्सव स्वतंत्रता की हमारी 75वीं वर्षगाँठ से 75 सप्ताह पहले शुरू हुआ और 15 अगस्त, 2023 को समाप्त होगा। 'आजादी का अमृत महोत्सव' के माध्यम से भारत, अपने लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास का जश्न मना रहा है। आजादी का अमृत महोत्सव भारत की प्रगतिशील, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक पहचान का एक अवतार है।

आजादी का महोत्सव किसी विशेष जाति, धर्म अथवा राज्य के लिए नहीं अपितु संपूर्ण भारत के लिए महत्त्वपूर्ण है। आजादी का अमृत महोत्सव एक राष्ट्रीय महोत्सव है।

आजादी का इतिहास एवं नई पीढ़ी

भारत एक लंबे समय तक अंग्रेजों का गुलाम रहा और उनके दिए गए आदेशों और निर्देशों पर काम करता रहा, लेकिन सभी देशवासियों के मन में स्वतंत्रता प्राप्त करने की इच्छा थी जो एक दिन आत्मविश्वास और जुनून में बदल गई। अंग्रेजो से भारत को मुक्त कराने के लिए सौ वर्षों से अधिक समय तक देशवासियों को अनेकों आंदोलन चलाने पड़े, अपने सुख साधनों का परित्याग करना पड़ा और अनेकों अवसरों पर अपना रक्त बहाना पड़ा। असंख्य कुर्बानियों के पश्चात ही अंग्रेजो ने भारत की बागडोर भारतीयों को सौंपी थी।

देश के प्रथम प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्रता पाने की घोषणा की थी। चारों ओर हर्ष और उल्लास की लहर दौड़ उठी, मिठाइयां बटीं, दीप मालाओं के प्रकाश से पूरा भारत जगमगा उठा, सरकारी भवनों पर राष्ट्रीय ध्वज फहरा उठे, राष्ट्रीय धुनों, गीतों, और नारों के मध्य पूरा भारत झूम उठा।

आज आजादी को 70 साल से भी अधिक हो गए हैं लेकिन अभी भी ऐसे बहुत सारे युवा हैं जिनकी उम्र 20 से 30 वर्ष के बीच में है वह आजादी के संघर्ष और बलिदान की कहानियाँ नहीं जानते हैं। इसलिए आजादी के महोत्सव के माध्यम से उन सभी लोगों को आजादी के सही मायने बताने बहुत जरूरी है।

हालांकि किताबों के माध्यम से आज की पीढ़ी ने थोड़ी बहुत जानकारी हासिल की है परन्तु आजादी के संघर्ष को करीब से नहीं जान पाए हैं इसीलिए आजादी का अमृत महोत्सव अत्यंत जरूरी है ताकि हम अलग अलग तरीके से आज की पीढ़ी को आजादी और संघर्ष की कहानियाँ बता सकें जिससे उनके मन में देश प्रेम और देश के प्रति जिम्मेदारी बढ़े।

आजादी के बाद की समस्या

हम सभी जानते हैं कि भारत को अत्यंत संघर्ष और बलिदान के बाद आजादी प्राप्त हुई परन्तु आजादी मिलने के बाद भी भारत की मुश्किलें कम नहीं हुई थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद ही देश में बंटवारा हुआ जिससे बहुत सारे लोगों को मजबूरन अपना घर छोड़कर नए देश में जाना पड़ा और यह दोनों ही तरफ से हुआ। इससे भारत की अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा असर पड़ा था। ब्रिटिश सरकार ने जाते-जाते भारत को पूरी तरह से लूट लिया था, ऐसे में दोबारा अर्थव्यवस्था को मजबूत करना और सब कुछ बनाए गए कानूनों के हिसाब से कार्य करना एक बड़ी चुनौती थी।

महोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

देश के विभिन्न स्कूलों में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं और उन कार्यक्रम के माध्यम से आजादी की कहानियाँ लोगों तक पहुंचाई जाती हैं, इसमें देशभक्ति गीत, नाटक आदि शामिल हैं, इसके अलावा स्कूल के अध्यापक आजादी के ऊपर एक अच्छा भाषण देते हैं और विस्तार से स्कूल के बच्चों को सरल शब्दों में आजादी के संघर्ष की कहानियाँ बताते हैं। यह भी बताते हैं कि आजादी पाने के लिए कितनी ज्यादा कुर्बानियाँ देनी पड़ी। इससे स्कूल के बच्चों को काफी कुछ जानने का मौका मिला है और वह आजादी को लेकर अपनी समझ बनाने के साथ-साथ स्वतंत्रता का असली मतलब समझ रहे हैं।

इस महोत्सव को मनाने के लिए प्रत्येक राज्य में विशेष तैयारी की गयी हैं। केंद्र और राज्य के कई स्कूलों, कई केंद्र और राज्य की संस्थाओं द्वारा धूम-धाम से मनाया जा रहा है। इसको मनाने के लिए कई जगहों पर रैलियाँ की जा रही हैं, देश के सभी सरकारी भवनों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराये गए हैं।

आजादी के अमृत महोत्सव में भारतीय रेल की भूमिका

फिट इंडिया फ्रीडम रन

अमृत महोत्सव के तहत 13 अगस्त से 2 अक्तूबर, 2021 गाँधी जयंती तक 'फिट इंडिया फ्रीडम रन' का भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय की देखरेख में आयोजन किया गया।

आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर दक्षिण पूर्व रेलवे मुख्यालय, गार्डनरीच में, उत्तर पश्चिम रेलवे जगतपुरा में, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर में, उत्तर मध्य रेलवे प्रधान कार्यालय की रेल कॉलोनी में, मेट्रो रेल भवन में, पूर्वोत्तर रेलवे स्टेडियम गोरखपुर में, आरडीएसओ आदि संस्थानों में दौड़ का आयोजन किया गया तथा रेल कोच फैक्ट्री कपूरथला में साइकिल रैली का आयोजन किया गया।

रेलवे द्वारा खादी की ब्रांडिंग

अमृत महोत्सव से प्रेरित आत्मनिर्भर भारत के प्रतीक के रूप में रायपुर स्टेशन पर सरकारी निकायों से समन्वय कर हथकरघा/खादी के प्रदर्शनी-सह-बिक्री स्टाल खोला गया। मेड इन इंडिया धारणा को बढ़ावा देने के तहत देश की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली खादी की ब्रांडिंग के लिए वाराणसी स्थित बनारस रेल इंजन कारखाना के कई कर्मचारियों और अधिकारियों ने कहा कि वे 2 अक्तूबर, 2021 से 30 जनवरी 2022 तक हफ्ते में एक दिन खादी के कपड़े पहन कर अपने कार्यालय आएंगे।

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत एलईडी स्टेशन के प्लेटफार्म क्रमांक 01 की ओर ' आजादी से समृद्धि' फोटो प्रदर्शनी 9 से 18 अगस्त, 2021 तक लगायी गयी।

'भारत गौरव' ट्रेनें

आजादी के अमृत महोत्सव से प्रेरित होकर रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने 23 नवंबर, 2021 पर्यटक सर्किट 'भारत गौरव' ट्रेनें शुरू करने की घोसणा की। साथ ही उन्होंने कहा कि इन ट्रेनों से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के भारत और दुनिया के लोगों को भारत की विकसित सांस्कृतिक विरासत व भव्य ऐतिहासिक स्थलों को दिखाने में सहायता मिलेगी तथा भारत की विशाल पर्यटन क्षमताओं के उपयोग में मदद मिलेगी।

भारतीय रेल ने इच्छुक पार्टियों को कोचिंग स्टॉक लीज़ पर देकर आम जनता के बीच थीम आधारित सांस्कृतिक, धार्मिक और अन्य पर्यटक सर्किट रेलगाड़ी के रूप में चलाने के लिए रेल आधारित पर्यटन का विस्तार करने की योजना बनाई है। उदहारण के लिए सिख संस्कृति के अहम स्थलों के लिए गुरु कृपा ट्रेन, भगवान श्रीराम से जुड़े स्थलों के लिए रामायण ट्रेन आदि विषयों पर ट्रेनें चलायी जाने की योजना बनाई है।

'आत्मनिर्भर भारत' अभियान की भावना से प्रेरित अमृत महोत्सव

आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने के तहत इक्कीसवीं सदी की भारतीय रेल भविष्य को ध्यान में रखकर प्रगति की दिशा में अलग ही अंदाज में चल रही है, जिनमें डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर, मुंबई-अहमदाबाद हाईस्पीड रेल परियोजना, विद्युतीकरण आदि प्रमुख योजनाएं हैं। इन परियोजनाओं में देशी तकनीक का अधिकतम उपयोग कर 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान को बढ़ावा दिया जा रहा है। हाल ही में इसका जीता-जागता उदाहरण मुंबई-अहमदाबाद हाईस्पीड रेल परियोजना के लिए स्ट्रैंडल कैरियर और गर्डर ट्रांसपोर्टर का निर्माण कर पेश किया गया है। स्ट्रैंडल कैरियर(50 पहियों पर चलने वाली क्रेन) पहले से तैयार पूरे आकर के गर्डरों को ढालने से लेकर भंडार तक और वहाँ से उसे ऊपरी ढांचे को आधार देने के लिए लगाने तक का काम करता है। गर्डर ट्रांसपोर्टर 27 एक्सेल टायर से चलने वाली ट्राली है जो पूरे आकर के पहले से तैयार गर्डरों को उठाकर लगाए जाने वाले स्थान तक ला सकता है।

आत्मनिर्भर भारत से प्रेरित महोत्सव में डिजिटल इंडिया पहल के तहत कैशलेस ट्रांजेक्शन, कॉन्टैक्टलेस टिकटिंग, ग्राहक सुविधा और अनुभव को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से यूटीएस एप को अब अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी उपलब्ध कराया गया है।

लाभः 1. टिकट के लिए क़तार में इंतजार करने की ज़रुरत नहीं।
2. कागज रहित और पर्यावरण अनुकूल।
3. टिकेट बुक करने के बाद ऑफलाइन मोड में ही टीटीई को दिखाया जा सकता है।
4. चलते-चलते भी बुकिंग की जा सकती है।
5. पूरी तरह नगदी रहित।

आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है:

भारतीय रेल ने आत्मनिर्भरता से प्रेरित होकर दक्षिण मध्य रेलवे में कोविड-19 महामारी जैसे नाजुक हालात में भी पहली बार दो लम्बी दूरी की मालगाड़ियों 'त्रिशूल' और 'गरुड़' का सफलतापूर्वक संचालन किया। सामान्य संरचना से कई गुना बड़ी तथा लम्बी दूरी की यह रेल महत्त्वपूर्ण मार्गों में क्षमता की कमी की समस्या का एक बहुत प्रभावी समाधान प्रदान करती है।

'रेल कौशल विकास योजना'

अमृत महोत्सव के 75 साल के हिस्से के रूप में रेलवे प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से उद्योग से संबंधित कौशल में प्रवेश स्तर का प्रशिक्षण प्रदान करके युवाओं को सशक्त बनाने के लिए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने 'प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना' की देखरेख में गुणात्मक सुधार लाने के उद्देश्य से 'रेल कौशल विकास योजना' का शुभारंभ किया। इस योजना के तहत 50 हजार युवाओं को इलेक्ट्रीशियन, वेल्डर, मशीनिस्ट और फिटर जैसी चार ट्रेडों में प्रशिक्षण दिया जायेगा।

'मिले सुर मेरा तुम्हारा' गीत का नया संस्करण

रेल राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश ने भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष में 'आजादी का अमृत महोत्सव' मानाने और अखिल भारतीय स्तर पर भारतीय रेल की विशिष्ट उपलब्धियों, विकास तथा एकीकरण को प्रदर्शित करने के लिए रेलकर्मियों द्वारा तैयार किये गए गीत **'मिले सुर मेरा तुम्हारा'** का नया संस्करण राष्ट्र को समर्पित किया।

इस अवसर पर श्रीमती दर्शना जरदोश ने कहा, "आजादी का अमृत महोत्सव के एक भाग के रूप में यह गीत विविधता में एकता का प्रतिनिधित्व करता है"। इस गाने का नया संस्करण रेल कर्मचारियों, आने वाली पीढ़ियों के साथ-साथ पूरे देश को भी प्रेरित करेगा। यह गीत 13 अलग-अलग भाषाओं में गाया गया है, ताकि सभी क्षेत्रीय रेलवे में स्नेह की भावना को बढ़ावा दिया जा सके। इस गीत के वीडियो में रेलवे के विभिन्न कर्मचारी, प्रसिद्ध रेलवे खिलाड़ी, टोक्यो ओलंपिक पदक विजेता, प्रसिद्ध हस्तियां, रेलवे अधिकारी, रेल मंत्री तथा दोनों रेल राज्य मंत्री

खिलाड़ी, टोक्यो ओलंपिक पदक विजेता, प्रसिद्ध हस्तियां, रेलवे अधिकारी, रेल मंत्री तथा दोनों रेल राज्य मंत्री नजर आ रहे हैं।

स्वच्छता के क्षेत्र में:

स्वच्छता के क्षेत्र में रेलवे के निरंतर बढ़ते कदम 'अमृत महोत्सव' में चार चाँद लगा रहे हैं । स्वच्छ भारत मिशन के तहत भारतीय रेल पूरे देश के सभी छोटे और बड़े रेलवे स्टेशनों पर बहुत बड़े पैमाने पर स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है । सभी ट्रेनों में बायोटॉयलेट की सुविधा उपलब्ध है जिससे पूरे देश में फैली हुई रेल पटरियों को स्वच्छ रखने में काफी मदद मिली है जिससे आज हर स्टेशन काफी स्वच्छ नजर आता है । आज भी रेलवे के सभी दफ्तरों में हर शुक्रवार को स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है तथा रेलवे में हर वर्ष स्वच्छता पखवाड़ा के समय में अनेकों जागरूकता रैलियों का आयोजन किया जा रहा है जिससे हम लाखों लोगों को जागरूक करके रेलवे परिसर को और स्वच्छ बनाने में लगातार कदम बढ़ाते जा रहे हैं ।

उपसंहार

आजादी का अमृत महोत्सव का महत्व वर्तमान समय में बहुत अधिक है क्योंकि आज आजादी को 70 साल से भी अधिक हो गए हैं लेकिन अभी भी ऐसे बहुत सारे युवा हैं जो आजादी के संघर्ष को करीब से नहीं जानते हैं ।

आजादी का अमृत महोत्सव हमें यह अवसर देता है कि हम अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपने इतिहास को और भी करीब से जाने, क्योंकि जब आप आजादी के संघर्ष के बारे में पढ़ेंगे और उस को करीब से जानने का प्रयास करेंगे तो आपको पता लगेगा कि भारत ने कैसे-कैसे वीरों को जन्म दिया है और उन लोगों में इतना आत्मविश्वास था, और देश को लेकर इतना प्रेम था कि वह अपने प्राण भी त्याग करने को तैयार थे।

इसलिए हमारा इस महोत्सव को मनाना अत्यंत आवश्यक है ताकि हम अपने अंदर के देश प्रेम को जगा सकें और एक समझदार नागरिक के तौर पर भारत का विकास कर सकें। साथ ही आजादी की कहानियां आज के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों तक भी पहुंचाई जा सके और उन्हें बताया जा सके कि आजादी को हासिल करने में भारत को कितना संघर्ष करना पड़ा था, कितने बलिदान देने पड़े थे उसके बाद कहीं जाकर भारत को आजादी मिली तथा आजादी के बाद भी भारत में किन किन चुनौतियों का सामना किया और किस तरह से गिरती हुई अर्थव्यवस्था को भारत ने संभाला ।

भारतीय रेल आजादी का अमृत महोत्सव के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, रेल कौशल विकास योजना, स्वच्छता आदि के क्षेत्रों में निरंतर योगदान दे रहा है जिससे हमारा देश दिन प्रतिदिन तरक्की के साथ-साथ विश्व में अपनी पहचान भी बनाता जा रहा है ।

"हर पल जीवन का आनंद लें"

बिनीता सोय, राजभाषा अधिकारी/सेलम

एक बार एक मछुआरा समुद्र के किनारे एक पेड़ की छाया में बैठकर बीड़ी पी रहा था। अचानक वहां से गुजर रहा एक अमीर व्यापारी उनके पास आया पूछा कि वह एक पेड़ के नीचे बैठकर धूम्रपान क्यों कर रहा है ? कोई काम क्यों नहीं कर रहा है। इस पर गरीब मछुआरे ने जवाब दिया कि उसने एक दिन के लिए पर्याप्त मछलियां पकड़ी हैं।

यह सुनकर अमीर व्यापारी क्रोधित हो गया और कहा: आप छाया में बैठकर अपना समय बर्बाद करने के बजाय अधिक मछलियां क्यों नहीं पकड़ते?

मछुआरे ने पूछा: मैं अधिक मछलियों को पकड़कर क्या करूंगा?

व्यापारी: आप अधिक मछलियॉं पकड़ सकते हैं फिर उन्हें बेचकर और अधिक पैसा कमा सकते हैं, और एक बड़ी नाव खरीद सकते हैं।

मछुआरा: फिर मैं क्या करूँगा?

व्यापारी: आप और गहरे पानी में मछली पकड़ने जा सकते हैं, और भी अधिक मछलियाँ पकड़ सकते हैं और भी अधिक पैसा कमा सकते हैं।

मछुआरा: फिर मैं क्या करूँगा?

व्यापारी: आप कई नावें खरीद सकते हैं और अपने लिए काम करने तथा अधिक पैसा कमाने के लिए कई लोगों को काम पर रख सकते हैं।

मछुआरा: फिर मैं क्या करूँगा?

व्यापारी: आप मेरी तरह एक अमीर व्यापारी बन सकते हैं।

मछुआरा: फिर मैं क्या करूँगा?

व्यापारी: तब आप शांति से अपने जीवन का आनंद ले सकते हैं।

मछुआरा: आपको क्या लगता है कि मैं अभी क्या कर रहा हूं?

सच ही है जीवन का आनंद लेने के लिए बहुत सारे संसाधन होने की आवश्यकता नहीं है।

स्टार्टअप इंडिया

पी. शिरंजीवी राव, मुख्य कार्यालय अधीक्षक, राजभाषा अनुभाग

आज के इस नये दौर में आपने देखा होगा या कही सुना होगा कि स्टार्टअप को लेकर बड़ी चर्चाएं है। स्टार्टअप एक ऐसा शब्द है, जिसके बारे में आज से कुछ सालों पहले तक लोग कुछ नहीं जानते थे। लेकिन आज नौकरी से ज़्यादा लोग स्टार्टअप के बारे में सोचने में लगे हैं। अगर कोई इंसान किसी कंपनी में नौकरी पेशा में है। तब भी आधे दिन उसका दिमाग इसी सोच में लगा रहता है, की काश मेरा खुद का कोई बिज़नेस या स्टार्टअप होता और मैं एक मालिक होता। क्योंकि देश की इतनी बड़ी आबादी में सबको नौकरी मिल जाए ये संभव नहीं। अगर कोई इंसान नौकरी पाने में सफल भी हो जाता है, तब उसके लिए सबसे बड़ी समस्या तो तब सामने आती है जो वो अपनी तनख्वा के बारे में सोचता है। ऐसे में लोग नौकरी के अलावा अब खुद का **बिज़नेस** अथवा **स्टार्टअप** पर काम करना चाहते है। लेकिन वर्तमान हालात में बिज़नेस या किसी स्टार्टअप की शुरुआत करना उतना भी आसान नहीं है। इसमें भी कई सारी मुश्किलें और परेशानियां लोगों को झेलनी पड़ती है।

स्टार्टअप क्या होता है - स्टार्टअप का अर्थ होता है: एक या एक से ज्यादा लोगो द्वारा स्थापित कि गयी कंपनी और इस कंपनी का उदेश्य शुरूआती दिनों में लोगो की समस्याओं को हल करना होता है। आगे चलकर ऐसी ही कंपनियां एक बड़ी कारोबारी कंपनी में बदल जाती है। स्टार्टअप शब्द में ही उसका मतलब छुपा हुआ है, जिसमें **"Start"** का अर्थ है "**शुरू (स्टार्ट) करना"** और **"Startup"** शब्द मतलब किसी चीज को **"शुरू करके चलाना"** होता है। स्टार्टअप एक ऐसा बिज़नेस या कंपनी जिसका उद्देश्य लोगों की सेवा करने के साथ ही उनकी जरूरतों को पूरा कर खुद के लिए मुनाफा कमाना है। यहां ध्यान रखने वाली बात ये है कि किसी भी स्टार्टअप को शुरू करना आसान है लेकिन ये लम्बी रेस का घोडा तब तक नहीं बन सकता जब तक कि आपका आईडिया बाकि सबसे से बिल्कुल अलग और हटकर न हो।

देश में स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने एक क्रेडिट गारंटी योजना (सीजीएस) को मंजूरी दी है। इसके तहत स्टार्टअप कंपनियों को बिना किसी गारंटी के 10 करोड़ रुपये तक का कर्ज मिल सकेगा। सरकार ने योजना को अधिसूचित कर दिया है। कर्ज उन्हीं स्टार्टअप को मिलेगा, जो डीपीआईआईटी की अधिसूचना या समय-समय पर इसमें होने वाले बदलाव के मुताबिक स्टार्टअप की परिभाषा के दायरे में आएंगे। सरकार के इस कदम से देश की स्टार्टअप कंपनियों को पूंजी जुटाने में मदद मिलेगी। इस क्रेडिट सुविधा को किसी अन्य गारंटी योजना के तहत कवर नहीं किया जाएगा।

स्टार्टअप का आईडिया -आसान शब्दों में अगर बात की जाए तो सबसे अच्छा आईडिया वही होता है जिसमें लोगों की समस्याऐं छुपी हो और आप उस समस्या ढूंढ कर लोगों के लिए काम करना शुरू कर दें। ऐसी किसी समस्या को पता करने का सबसे आसान तरीका है कि आप इसे अपने घर से ही ढूंढने की शुरुआत करें। उसके बाद धीरे-धीरे आस-पास के माहौल का अवलोकन करें। ऐसे में आपको कहीं न कहीं कोई ऐसी समस्या अवश्य मिलेंगी जो आपके स्टार्टअप का कारण बनेगी।

स्टार्टअप का आईडिया मिल जाने के बाद सबसे बड़ी समस्या जो हमारे सामने आती है, वो है इसका नाम? आखिर अपने **बिज़नेस का नाम क्या रखें?** नाम को सुनिश्चित करने के लिए निचे दिए गए टिप्स पर अमल कर सकते हैं:-

⇒नाम ऐसा होना चाहिए जो एक बार में याद रहे और लोगों का ध्यान अपनी और आकर्षित करें।

⇒नाम से ही आपके स्टार्टअप की जानकारी लोगों को मिल जानी चाहिए।

⇒नाम सोचते समय उसमें आपके कंपनी के काम का शब्द होना चाहिए।

⇒हमेशा कोशिश करें कि बिज़नेस नाम अधिकतम 9 से 10 अक्षरों तक आ जाए।

स्टार्टअप आयडियाज को रजिस्टर अथवा पेटेंट कराना- स्टार्टअप आयडिया को रजिस्टर अथवा पेटेंट करना ये बहुत ही महत्वपूर्ण चरण होता है। ये चरण अगर आपने पूरा नहीं किया तो आपका स्टार्टअप आयडिया कोई और चुरा सकता है या फिर आने वाले समय में आपको बड़ी समस्या से सामना करना पड़ सकता है। यहां ध्यान रखने वाली बात ये है कि अपने आईडिया को कभी भी किसी से तब तक साझा न करें जब तक की आप उसका पेटेंट नहीं करवा लेते।

पेटेंट करवाने का फायदा

⇒आपका आईडिया केवल आप तक ही सिमित रहेगा।

⇒हूबहू आपके आईडिया पर कोई और काम नहीं कर सकता।

⇒आपके आईडिया चोरी होने से बच जाएंगे।

⇒अगर कोई आपके आईडिया चुरा कर काम करता है, तब उसके खिलाफ कोर्ट में जाने का अधिकार आपके पास सुरक्षित रहता है।

बिजनेस प्लान - किसी भी स्टार्टअप के बिज़नेस प्लान में ये तय करना होता है कि आपके द्वारा दिया जा रहा सर्विस या प्रोडक्ट की डिमांड बाजार में कितनी है। क्या आपका प्रोडक्ट या सर्विस लोगों की जरूरतों को पूरा कर पाएगा? भविष्य में आपके स्टार्टअप से जुडी आपको किन-किन समस्याओं का समाना करना पड़ सकता है। कंपनी के वित्तीय जरूरतों को कैसे पूरा किया जाएगा अर्थात फंडिंग की क्या व्यवस्था होनी चाहिए? शुरूआती दिनों में किस तरह से मार्केटिंग करने की जरूरत पड़ेगी? किसी भी बिज़नेस प्लान को बनाने में आप किसी चार्टेड अकाउंटेड की भी मदद ले सकते हैं।

टीम बनाना - अगर आप ये सोच रखकर अपने बिज़नेस की शुरुआत करते हो कि, आप अकेले ही अपने स्टार्टअप को संभाल लोगे। तब आपको अपनी सोच को बदल लेनी चाहिए। कहीं न कहीं किसी मोड़ पर आगे चलकर आपको एक टीम की जरूरत जरूर पड़ेगी। जो आपके मौजूदगी या गैर-मौजूदगी में भी आपके काम को करती रहे।
किसी भी हालात में आपका साथ दे और आपको सुझाव दे। टीम में केवल वैसे ही लोगों को शामिल करें, जो ईमानदार हो, काम के प्रति सजग हो, समझदार हो और सबसे महत्वपूर्ण बात जो आपकी सोच को समझता हो।

निवेशक खोजना - कोई भी काम की शुरुआत बगैर निवेश के संभव नहीं है। ज़्यादातर स्टार्टअप आईडिया आज भी निवेश या कहें पैसों की कमी के कारण ही अधूरे रह जाते हैं। सरकार के अलावा आज देश में ऐसी कई साड़ी संस्था और कंपनी है जो आपके आईडिया पर पैसे लगाने से बिल्कुल नहीं कतराती। इसके अलावा बैंक भी एक अच्छा माध्यम है शुरूआती फंड इक्कठा करने का।

प्रोडक्ट/सर्विस की मार्केटिंग करें - कितनी भी अच्छी स्टार्टअप क्यों न हो और चाहे कितने भी पैसे इसमें निवेश किये गए हो, कोई बिज़नेस तब तक अस्तित्व में नहीं आता, जब तक लोगों को उसके प्रोडक्ट या सर्विस की जानकारी नहीं होती । लोगों को किसी बिज़नेस या स्टार्टअप वाले प्रोडक्ट की जानकारी तभी होगी जब इसकी मार्केटिंग की जाएगी। इसलिए मार्केटिंग किसी भी बिज़नेस प्लान का सबसे महत्वपूर्ण कारक माना गया है। खुद से केवल मार्केटिंग करने से भी काम नहीं बनता, इसके लिए शुरूआती समय में बाजार में पहले से स्थापित किसी मार्केटिंग एजेंसी की मदद ली जा सकती है । वर्तमान समय के ट्रेंड को देखते हुए मार्केटिंग के लिए डिजिटल मीडिया का उपयोग अवश्य करें।

फायदे - वर्तमान स्तिथि को देखते हुए ये कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा की, भारत में अब स्टार्टअप शुरू करने की होड़ सी मची हुई है। इसका अर्थ ये है कि कहीं न कहीं स्टार्टअप शुरू करने के फायदे जरूर होंगे, तभी तो भारी संख्या में लोग इसमें रूचि दिखा रहे हैं । इसलिए जानते हैं आखिर स्टार्टअप के फायदे क्या हैं, जिससे लोग स्टार्टअप की ओर आकर्षित होने लगे हैं।

किसी भी स्टार्टअप के शुरूआती कुछ सालों में काम की तेज़ी इतनी ज़्यादा होती है । कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होने स्टार्टअप किसी ऐसे मिशन पर लगा हुआ है। जो अभी पूरा नहीं हुआ तो कभी हो सकेगा । वैसे भी ज़्यादातर स्टार्टअप की यही कोशिशें होती है की वो अपने समाज के लिए कुछ अच्छा और भला कर सकें । इसलिए ये बातें थोड़ी लाजमी है कि, यहां होने वाले काम शुरूआती दिनों में किसी मिशन की ही तरह होता है। अगर कभी गूगल ने बगैर उद्देश्य के अपने काम को किया होता तब वो आज सफलता के इस बुलंदी पर नहीं आते जहां वो आज हैं।

स्टार्टअप की सबसे बड़ी खासियत ये है की चूँकि ये शुरूआती दौर में होते हैं, और बाजार में पहले सबसे अलग और बेहतर करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। यही कारण है की ये अपनी प्रोडक्ट और दी जाने वाली सर्विस पर पैनी नज़र बनाये रखते हैं। इसके अलावा जहां तक संभव हो ये ग्राहकों से फीडबैक लेकर, भविष्य में हमेशा बेहतर ही करने की कोशिश में लगे रहते हैं।

स्टार्टअप की शुरुआत करके आप केवल अपने और अपने परिवार के प्रति ही अपनी जिम्मेदारियों को पूरा नहीं करते । बल्कि इसके कारण आप एक बेहतर समाज की निर्माण में भी अपनी भूमिका निभाते हैं । आपके स्टार्टअप के जरिये आने वाले समय में कई सरे लोगों को रोजगार मिलेंगी। केवल यही नहीं अगर आपका स्टार्टअप सबसे अलग कुछ बेहतर करने में कारगर होता है, तब आगे चलकर आपका स्टार्टअप देश की अर्थव्यवस्था में भी योगदान करेगा।

ये तो सौ फीसदी सत्य है की अगर आप किसी आईडिया पर काम रहे हैं और ये आईडिया आपकी है। तब आगे चलकर ये आईडिया अगर बड़े बिज़नेस में तब्दील होने में कामयाब होती है। तब इसके मालिक और बॉस आप ही होंगे। इसके अर्थ ये है की इसपर पूरा अधिकार आपका होगा। अर्थात आपके ऊपर ऐसा कोई शक्श नहीं होगा, जो आपके ऊपर अधिकार जमाये।

नुकसान- दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जिसके केवल फायदे हो और इसमें किसी प्रकार का कोई नुकसान न हो । ठीक ये बात स्टार्टअप पर भी लागू होती है और इससे जुड़े संभावित नुकसान कुछ इस प्रकार है-

⇒ अगर आपका आईडिया बेहतर और सबसे अलग हुआ तब इस बात की उम्मीद काफी ज़्यादा है कि आपके स्टार्टअप के सफल होने की उम्मीद काफी ज़्यादा होगी ।

लेकिन अगर अगर आपकी आईडिया बाकियों से कमजोर और अच्छी नहीं रही तब आपको इससे होने वाले फायदे से कहीं ज़्यादा नुकसान भी उठाना पड़ सकता है। अर्थात स्टार्टअप के फ़ेल होने का खतरा बना रहता है।

⇒किसी भी कंपनी को खड़ी करने में एक या दो दिन का केवल समय नहीं लगता। बल्कि इसे खड़ा करने में काफी वक़्त लग जाता है। स्टार्टअप एक ऐसा करियर विकल्प है जिसमे धैर्य और अनुशासन की काफी ज़्यादा जरुरत पड़ती है। किसी स्टार्टअप को एक सफल बिज़नेस में बदलने के लिए खून पसीना एक करना पड़ता है।

⇒मौजूदा हालात किसी दूसरों की देखा-देखी करना तो अब काफी आम बात हो गया है। कई लोग स्टार्टअप की शुरुआत तो केवल अपनी नौकरी से छुटकारा पाने के लिए भी करते हैं। ऐसे लोग की अपने स्टार्टअप से ये अपेक्षा होती है की केवल चंद दिनों में ही इनका स्टार्टअप आसमान में उड़ने लगेगा। लेकिन देखा-देखी या किसी मजबूरी में शुरुआत किये गए स्टार्टअप की उम्र केवल कुछ महीनों से लेकर चंद सालों की ही होती है।

⇒ किसी भी स्टार्टअप को सबसे बड़ा खतरा वैसे कंपनियों से होती है, जो पहले से बाजार में मौजूद उनसे मिलता जुलता प्रोडक्ट या सर्विस पर काम कर रही हो। चूँकि ये कंपनियां अपने फील्ड के जमे-जमाये खिलाड़ी होते हैं, इसलिए इनके पास किसी भी प्रकार के संसाधनों की कभी कमी नहीं होती।लेकिन वहीं दूसरी तरफ किसी भी स्टार्टअप के पास रातों-रात अचानक से फण्ड और संसाधन की एकदम से उपलब्ध नहीं हो सकता, इसलिए धीरे-धीरे इनके पिछड़ने की संभावना बनी रहती है।

हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी भाषा परीक्षा—नकद पुरस्कार राशि

क	प्रबोध	नकद पुरस्कार की राशि
1	70 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	1600/- रु.
2	60 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	800/- रु.
3	55 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	400/-रु.

ख	प्रवीण	नकद पुरस्कार की राशि
1	70 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	1800/- रु.
2	60 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	1200/- रु.
3	55 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	600/-रु.

ग	प्राज्ञ	नकद पुरस्कार की राशि
1	70 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	2400/- रु.
2	60 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	1600/- रु.
3	55 प्रतिशत या इससे अधिक परंतु 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	800/-रु.

बाढ़ विवाह (हास्य कथा)

मूल रचनाकार : सेलम एस. नंदकुमार

अनुवाद - डॉ एन गुरुमूर्ति, सेवा निवृत्त वरि.अनुवादक

चेन्नै में इस साल भी बाढ़ आई है। चेन्नई का एक प्रांत का नाम है मड़िप्पाक्कम जहां मंगला का घर है । वह कमरे में गहरे पानी में खड़ी थी और कड़ाही में हरा मिर्च का भजिया भून रही थीं । उनके पति वेंकटाचलम अब तक हरा मिर्च भजिया प्रति दस मिलीमीटर बारिश की दर से पन्द्रह भजियां खा चुके थे ।आज मौसम विज्ञानी दूरदर्शन चैनल पर भाषण दे रहे थे कि आज रात और कल दस मिर्च पैटी आकार तक बारिश हो सकती है ।

"यह भजिया लो और अपने बच्चे को दे दो," मंगला ने थाली पकड़ाते हुए कहा। "महाराज कहाँ है?"

"वर्क फ्रोम होम (घर से काम) कर रहा है। ऊपर है ।

मंगला अचानक अपनी आँखें भींचती है । "अब आप अपनी आँखें क्यों भींचती हैं?"

लडकी देखने और उसकी हाथ से भजिया लेकर आनेवाले दृश्य के लिए प्रतीक्षा कर रहा है। अभी तक तो कोई कुंडली भी फिट नहीं बैठती है। वह कब तक इस तरह अकेला रहेगा?"

"आएगा । सौभाग्य से राशिफल अपने आप आ जाएगा । तुम जाकर सोफे पर लेट जाओ । जाओ "

सोफे पर? सोफ़ा कहाँ है? कहीं बाढ़ के पानी में बह तो नहीं गया । मैं दो दिन से बच्चे की तरह झूले में सो रही हूँ"

"मालूम है मुझे । ट्रक के ऊपर बिछाने वाले कैनवास के कपड़े से झूला बनाने वाले पहले व्यक्ति आप हैं" ।

बेटा वरुण ने खाली थाली और चम्मच ऊपर से फेंक दिए । वह पानी में गिर पड़ा । कहीं नीचे चला गया और जल समाधि हो गया । "अजी कठिनाई होने पर भी नीचे के पानी से प्लेट को ढूंढ निकालो"

" मैं थाली भी उठाऊंगा। चम्मच कैसे ढूंढू?तूत्तुक्कुडि मोती स्नान करने वाले ही ऐसा कर सकते हैं

मैंने आपको कई बार चेतावनी दी थी कि यहां घर न बनाएं। आपने इसको इसलिए बनाया क्योंकि आपको ऐसा लगा कि यह उपनगरीय क्षेत्र है। अब घर शिरोपरि पानी की टंकी बन गया है।

"बस मुझे दोष मत दो" "ऐसी परिस्थिति में यहां पर चिन्ह पर एक अलग निशान लगाया गया है ।" जैसे 2004, 2008, 2015, 2021"बाढ़ के समय हमारे घर के जल स्तर "को दर्शाता है ।

"अच्छा... अच्छा... शाम होने वाली है । भगवान के लिए दीपक जला दो"

बस स्टैंड पर जिस तरह गिलास को जंजीर से बांध रखते है उसी तरह भगवान के दीपक को बांध कर रखने से वह बच गया । वरना, वह भंडार कक्ष में जगह पाता था । यह बात रहने दो । दुल्हन हमारे घर कब आनेवाली है? मैं कब तक दीपक जलाती रहूँगी? "

"रोना शुरू मत कर दो कुछ देर बाहर जाकर खड़े हो जाओ । बच्चे वाटरपॉनडी खेल रहे हैं। जाकर इसका आनंद लो" मंगला द्वार पर गई ।

एक लड़की स्कूटी(वाहन) को बाढ़ के पानी में किसी तरह चला रही थी ।

धीरे-धीरे जाओ । दस फुट दूरी पर एक भूमिगत जल निकासी है । अभी-अभी एक आदमी अंदर गिरा, "एक बुजुर्ग ने चेतावनी दी । अरे... क्या ये सब निगम नोटिस नहीं करेगा?" महिला ने कहा।

"इसमें निगमवाला ही गिर गया था" यह सुनकर मंगला को हंसी आ गई। बहुत सारी घास और लकड़ियाँ पानी में तैर रही थीं । अचानक ऐसा लगा कि प्लास्टिक के ढक्कन में कुछ तैर रहा है। जो धीरे-धीरे पानी में बह कर हवा की गति से मंगला के घर में आ गया। इससे बाहर निकालने से पूर्व ही वह धीरे-धीरे नाचते हुए प्रार्थना कक्ष में जाकर

रुक गया। “जी! यहां आइए। कुछ हमारे घर के अंदर घुस गया ”मंगला ने चिल्लाया।
मंगला ने लिफाफे की ओर देखा। प्रमाणपत्र रखने जैसा और साक्षात्कार में ले जाने के लिए एक कवर की तरह था। उसने इसे खोलकर देखा। अंदर एक कन्या का फोटो था। इसके साथ एक कंप्यूटर प्रिंट आउट पेपर भी था।
“कन्या का फोटो। साथ में कुंडली भी”, "कहाँ ? दिखाओ "वेंकटाचलम ने फोटो देखा।
“बहुत खूब! लड़की सुंदर है! भले ही भीगे हो फिर भी परवीन बॉबी की तरह दिखती है!”
“अच्छी ऊंचाई। पौने छह फुट की होगी ”, "क्या आप को पासपोर्ट आकार फोटो में पौने छह फुट यह सब दिखता है क्या? झूठ मत बोलो ”, "आप कुंडली देखो। लड़की का नाम क्या है?"
"वर्षा" "आहा" "क्या आहा?" “वर्षा का अर्थ है बारिश ”
"क्या आप ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि हर साल बारिश होती है?"
"लड़की की कुंडली पानी में तैरते हुए हमारे घर प्रार्थना कक्ष में आई है ,"अब क्या करें?"
"कुंडली पर पता है क्या, देख लो ", “पता है। पल्लावरम पताडाला। क्या पल्लावरम से यहाँ तक ये तैर कर आया?”, "पेरंबूर से भी आता। बाढ़ की वजह से अब पूरा चेन्नई एक ही पिनकोड में है”, शोर सुनकर वरुण ऊपर से नीचे आ गया।" यहाँ क्या हंगामा है? फोन पर बात भी नहीं करने देते हो आपलोग "
"लड़की की फोटो मिली" पिताजी ने कहा। कहाँ ? “ इस लिफाफे के भीतर, आवरण चित्र है क्या?"
" नहीं। रंगीन फोटो ”, वरुण ने कहा, "कहां दिखाओ।", ठीक है। लड़की अच्छी है।
” कन्या महालक्ष्मी का प्रतिरूप है। माँ ने कहा- क्या इससे विवाह संपन्न करेंगे?"
“हम लडकी के बाप से बात करने जा रहे हैं," पिताजी ने कहा।
"हा बात कीजिए। मेरे लिए ठीक है " पिताजी ने कुंडली में दिए नंबर पर कॉल किया।
"नमस्कार..क्या आप तिरुमूर्ति हैं? "हाँ...अब गली की मूर्ति है। मैं अपने घर में पानी की वजह से सड़क पर चल रहा हूं”, आपके द्वारे भेजे गयी लड़की की फोटो और कुंडली आ गयी”
"मैंने इसे कहाँ भेजा?" "क्या आप वर्षा के पिता हैं?" "हां", "आपकी लड़की की फोटो और कुंडली एक कवर में रखे हुए बाढ के पानी में बहते हुए हमारे घर आई। कूरियर शुल्क बचाने के लिए ऐसा किया है आपने"
"महोदय। क्षमा करें। गलती हो गई। आप बस इसे पानी में डाल दें। मैं इसे यहाँ से ले जाऊँगा ”
"महोदय। हमे कन्या पसंद है। क्या, हम रिश्ते के बारे में बात कर सकते हैं?"
"घर आईए", "घर का कोई निशान चिह्न", “घर का नंबर आपको दिखाई नहीं देगा। संख्या बोर्ड पानी में डूब गया है। एक पर्यटक वैन पानी में उल्टा तैर रही है। उसके ठीक विपरीत हमारा घर है”, "आऊंगा। तब तक टूरिस्ट वैन न लें जाए।", वेंकटाचलम एक अच्छी कमीज पहनकर तैयार हो गया।
दरवाजे पर आया। एक नाव पीले रंग में नौकायन कर रही थी
"सर... पल्लावरम जाना है" उसने नाविक से कहा। "क्यों?" "मेल मिलाना"
"अप्रासंगिक बोले रहे है", "तुरंत जाना है सर”, "क्षमा करें श्रीमान। नाव सेवा की खरीदारी के लिए अनुमति है”।
"यह दुकान के लिए है, सर। तो एक किलो काला नमक खरीदना है ” ,"सच में?"
"हाँ .... मैं काला नमक खरीदने के लिए कल्लावरम जाऊँगा। नहीं नहीं क्षमा करें पल्लावरम जाना है? ”
"ठीक है। आ जाइए। "आदिमूलमगली के तरफ से ले चलो। ऐसे जाने पर नजदीक होगा। “यह आदि मुदलियार स्ट्रीट नदी बन गयी है। सुनने में आया है कि मगरमच्छ होगा। "अरे..आप चाहें तो सुलूरपेट घूमकर भी जाओ। हमें सुरक्षित रूप से पहुँचा दो” पल्लावरम पहुंच गए। वैन उलटकर घर के बाहर तैर रही थी और घंटी बजाई।
"आइए। आप सही समय पर आए हैं” "वैन पहचान बता दिया घर की"

"वह ठीक है। क्या आप सेंधा नमक खरीदने मडिपक्कम गए थे?"

क्या तुम्हारे घर में पानी है?" तिरुमूर्ति ने कहा ।

हां। त्रि-आयामी दर्ज करें "

"आज आप जिधर भी देखें, संरक्षणवादी भावना का ज्वार बह रहा है।

"क्या आपने हेलीकॉप्टरसे दही चावल का थैला गिराया?"

हाँ जी । एक नींबू का अचार भी था"

"बहुत अच्छा। पैकेज फिट भी एक मिलन बिन्दु है । क्या अलमारी में पानी घुस गया?"

"हां" लड़का का नाम क्या है?", "वरुण"

मेरी बेटी वर्षा है। वरुण वरुण भगवान। वर्षा वर्षा। क्या बारिश दो लोगों के लिए उपयुक्त है?"

बहुत बढ़िया लोग शादी करते हैं लेकिन बारिश अभी भी ऊपर से थोड़ी है .

"यह सब छोड़ो ! बच्चे का नाम अग्नि हैं क्या नाम में और सुधार कर सकते हैं

" पानी आने पर क्या आपने अपनी वॉशिंगमशीन खराब हो गया क्या ?

"हां। आपके घर में? ", "यहां भी खराब हो गया । तो रिपेयर होना चाहिए "- राहु केतु मिलन की खुशी से जैसे खराब चीज ठीक हो गया हो।दोनों परिवार मिलकर खुश हुए। लड़की को वीडियो कॉल पर बात करने दो। अगले दिन वरुण और वर्षा ने वीडियो कॉल पर बात की और मान गए। वरुण विशेष रूपसे वर्षा के बहुत कायल हो गए हैं। वरुण के लुक्स और भाषण ने वर्षा को मदहोश कर दिया। वह उसकी याद में थी।उसने वरुण को फोन किया।

"बाढ़ ने कई लोगों की जान ले ली है। लेकिन मैं ठीक हूँ । मेरे लिए आप वर्षा की भेंट । आपने मेरा दिल चुरा लिया।" वरुण ने कहा, "ऐसा लगता है जैसे मेरे लिए तुम खुशी बनकर आई हो।" वर्षा मुस्कुरा देती है।

"अब जल्दी से शुभ मुहूर्त तय करने के लिए कहो" वरुण की इच्छा के अनुसार दोनों घरवाले जश्न मनाने के लिए इकट्ठा हो गए। वरुण बीच में आ गए, जबकि वयस्क सोच रहे थे कि वे पंचांग को देखकर तारीख तय कर सके।

"इस तिलक हॉल को देखो" "कहां?" शुभ मुहूर्त तय हो गई। उस तिथि के लिए हॉल को एडवांस दे दिया गया है।

बारिश भी एक तरह से रुकी हुई थी। वे शादी के एक दिन पहले ही हॉल में आ गए। वरुण बहुत ही उत्साहित था।

"क्या आपको कोई समस्या है?" पिताजी ने पूछा- वरुण ने कहा - "पिताजी..अगर वह आएंगी तो मैं मंगलसूत्र बांध दूंगा। भले ही दोपहर हो चुकी थी। अभी नहीं, "उन्होंने उत्सुकता से कहा।

"फोन मत सुनो" वह ठीक है। केवल नब्बे किलोमीटर बचा है, मैं भजिया खाने जा रहा हूँ । "पिताजी डाइनिंगहॉल में गए। रात करीब आठ बजे हल्की बूंदाबांदी शुरू हो गई। धीरे-धीरे तेज बारिश बन गई ।

आधी रात को हॉल में पानी रिस गया था। "अरे ... बारिश आने दो और हॉल में पानी आने दो," पिताजी ने सोटते हुए कहा।

"पिताजी ... मैंने तुमसे कहा था कि यह महत्वपूर्ण है कि कोई आए। यह बारिश है। बारिश की बाढ़ ने ही हमारे घर वर्षा राशिफल भेजा था। इसलिए हम दोनों ने बाढ़ में शादी करने का फैसला किया। सेलफोन में मौसम रिपोर्ट देख कर ही हमने शादी की तारीख को तय किया,"वरुण ने कहा।

अगली सुबह। वरुण ने कमर भर गहरे पानी में खड़े होकर वर्षा के गले में मंगलसूत्र बांध दी ।

दोनों के चेहरों पर खुशी की बाढ़ आ गई।

भाषा विचार का पोषक है- डॉ. जोनसन

कार्यालयी कार्यों में हिंदी की प्रगति

मोहन, कनिष्ठ अनुवादक, डीजल शेड /ईरोड

स्वतंत्रता के इतने वर्षों के पश्चात भी भारत हिंदी को राजभाषा के रूप में वह पहचान नहीं दे पाया है जो दुनिया के देशों ने अपनी भाषा को दी है। इसका मुख्य कारण इच्छा-शक्ति की कमी और अनुवाद पर निर्भरता है। मात्र अनुवाद के सहारे हिंदी लाने का प्रयत्न कभी फलीभूत नहीं हो सकता। आवश्यकता है मूल रूप से हिंदी में काम करने की। एक वृक्ष के स्थान पर दूसरा वृक्ष तभी लगाया जा सकता है, जब पहले वृक्ष को हटाया जाए। यहां पर यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि बड़े वृक्ष की छाया में छोटा वृक्ष पनप नहीं सकता। भाषा प्रयोग के कारण ही विकसित और प्रसारित होती है। भारत सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग के लिए किए गए प्रावधान एवं सुविधाओं के बावजूद, विरोध भले ही प्रत्यक्षतः नज़र न आए, किंतु प्रगति की वास्तविकता सर्वविदित है। संवैधानिक प्रावधानों एवं सरकार की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन की नीति के बावजूद कुछ लोग हिंदी से परहेज करते हैं।

वर्तमान समय में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न भाषा की सरलता और सहजता का है। माना जाता है कि प्रशासनिक हिंदी दुरूह और अस्पष्ट हो जाती है। द्विभाषिक सामग्री में लोग हिंदी की बजाए अंग्रेजी के पाठ को इसलिए पढ़ना चाहते है हैं क्योंकि उसमें उन्हें स्पष्टता अधिक महसूस होती है। जब तक हिंदी भाषा का पाठ अनुवाद के रूप में हमारे सामने आएगा तब तक सहज नहीं हो सकता।

यह आरोप मिथ्या नहीं है कि वर्तमान कार्यालयी हिंदी में यदा कदा एक हद तक कृत्रिमता अथवा अटपटापन भी देखने को मिलता है। सच तो यह है कि शब्द कोई कठिन नहीं होता, वह तो प्रयोग में लाने से अपना हो जाता है। हिंदी भाषा को कठिन महसूस करने की समस्या वस्तुतः मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक अधिक है, वास्तविक शून्य। हिंदी ध्वन्यात्मक भाषा है। जहाँ अंग्रेजी के उच्चारण के लिए भी शब्दकोश को देखने की आवश्यकता हो सकती है, वहीं हिंदी के लिए सिर्फ अर्थ देखने के लिए शब्दकोश की आवश्यकता पड़ती है।

अंग्रेजी शब्दों की स्पेलिंग रटनी पड़ती है जबकि हिंदी के शब्दों की वर्णमाला स्वर व व्यंजन तथा बारहखड़ी को रटने से किसी भी शब्द को पढ़ना लिखना सहज हो जाता है। यहीं कारण है कि हिंदी में किसी भी भाषा को लिखना या उसका उच्चारण करना सरल होता है। इस तथ्य की पुष्टि इस बात से भी होती है कि 'माइक्रोसॉफ्ट' के मालिक बिल गेट्स ने हिंदी भाषा और लिपि को विश्व की अन्य भाषाओं की तुलना में सबसे अधिक वैज्ञानिक माना है

अतः इसमें दो राय नहीं कि राजभाषा हिंदी की सबसे बड़ी समस्या हिंदी में काम करने की प्रवृत्ति अथवा इच्छा शक्ति का अभाव है। अंग्रेजी में काम करके अपने को श्रेष्ठ समझने की मानसिक दासता के चलते हिंदी में काम करने की लगन तो दूर, उत्साह भी पैदा होना संभव नहीं है। यह कठिनाई केवल हिंदीतर भाषियों की ही नहीं, हिंदी भाषियों की भी है। राज्यस्तर पर जो लोग हिंदी में काम करते है, केंद्र स्तर पर तैनात होने पर वे अंग्रेजी का ही सहारा लेते हैं। इस स्थिति में परिवर्तन तभी संभव है, जब हमारी मानसिकता में परिवर्तन हो जाए तथा हम मूल रूप से सरकारी कामकाज हिंदी में करना शुरू कर दें।

हिंदी के प्रयोग में अटपटापन, दुरूहता, जटिलता आदि काफी कुछ इसी अनिच्छा का प्रवृत्ति का परिणाम है। जिसके चलते वे इस भाषा के प्रति अपनापन महसूस नहीं करते हैं, और सहज, सुबोध भाषा का प्रयोग तो दूर सही भाषा लिखने पर भी ध्यान नहीं देते। उच्च अधिकारियों का रवैया निचले स्तर के अधिकारियों और कर्मचारियों को भी प्रभावित करता है। उन्हें लगता है कि यदि वे हिंदी का प्रयोग करेंगे तो यह समझा जाएगा कि वे अंग्रेजी के प्रयोग में अक्षम हैं। इस मानसिकता में बदलाव लाना जरूरी है।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग में आने वाली उक्त कठिनाइयों का समाधान कई छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने से काफी हद तक हो सकता है। किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए अतिरिक्त वाक्य को जोड़ने से परहेज नहीं करना चाहिए। कभी-कभी अंग्रेजी के एक शब्द को स्पष्ट करने के लिए पूरा एक वाक्य भी देना पड़ सकता है। इसे भाषिक संप्रेषण क्षमता की कमी नहीं समझना चाहिए। दूसरी ओर यह भी हो सकता है कि अंग्रेजी भाषा के पूरे वाक्य के लिए हिंदी भाषा का एक शब्द ही पर्याप्त हो। भाषा का स्वरूप निर्धारित करते समय यह ध्यान रखना भी बहुत आवश्यक है कि पत्र का प्रारूप किस व्यक्ति को संबोधित है। उस व्यक्ति की सामाजिक, पदीय स्थिति और हिंदी भाषिक योग्यता के अनुरूप ही शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। छोटे-छोटे वाक्य लिखना सुविधाजनक होता है और वैसे भी कई उप-वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य की रचना करना हिंदी की प्रकृति नहीं है। जहाँ तक हो सके प्रशासनिक कार्यों को सरल अभिव्यक्ति ही देनी चाहिए।

कार्यालयी हिंदी की सहजता कथ्य की स्पष्टता, सरल-सुबोध वाक्यों की रचना और उपयुक्त शब्दों के चयन पर निर्भर करती है। दूसरी भाषाओं के जो प्रचलित शब्द हैं, और आम बोलचाल की भाषा में घुलमिल गए हैं, उन्हें ज्यों का त्यों ही अपना लेना चाहिए। विशेष रूप से ऐसे शब्द अंग्रेजी या उर्दू भाषा से लिए जा सकते हैं। यूँ तो ऐसे शब्दों के विशुद्ध हिंदी रूप भी लिए जा सकते है, परंतु इससे भाषा की सहजता नष्ट होने का डर होता है और भाषा बनावटी प्रतीत होती है। उन्हीं शब्दों को अपनाना चाहिए जो स्वाभाविक लगे। यही गुण कार्यालयी हिंदी को ग्राह्य और लोकप्रिय बना सकते है।

राजभाषा विभाग और हिंदी सेवियों के निरंतर प्रयास के फलस्वरूप आज हिंदी भारतीय भू-भाग से बाहर निकल विश्व धरातल पर दस्तक दे रही है और यह दस्तक पूरी दुनिया में सुनी जा सकती है। भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थानीय भाषाओं का सहारा ले रही है और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ा रही हैं। अपने उत्पाद को ग्राहक के मन में बसाने के लिए उनकी भाषा का सहारा लेना, उनकी मार्केटिंग स्ट्रेटेजी का प्रमुख हिस्सा है। इसके फलस्वरूप ही सैटेलाइट चैनलों पर कई हिंदी समाचार चैनलों का प्रारंभ हुआ। सूचना प्रौद्योगिकी विभाग ने हिंदी के लिए विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर और एप्प विकसित किए हैं। इंटरनेट के क्षेत्र में हिंदी किसी भी मायने में अंग्रेजी से पीछे नहीं है। फिर भी यह हमारी ही मानसिकता है कि आज भी हम हिंदी को वह स्थान नहीं दे पा रहे हैं जिसकी वह सर्वप्रथम अधिकारिणी है। अतः स्पष्ट है कि हिंदी को उसका उचित स्थान सम्मेलनों अपीलों, आदेशों एवं व्याख्यानों मात्र से नहीं मिल सकता। इसके लिए अंग्रेजी का मोह छोड़कर मूल रूप से हिंदी में कार्य करना होगा, उसके महत्व एवं उपयोगिता को बढ़ाना होगा। इसके लिए हम सब को मिलकर हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय एवं सृजनात्मक सहयोग देना चाहिए।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिला सेनानी

के.वी. निमिता, कनिष्ठ अनुवादक , राजभाषा अनुभाग

सदियों की गुलामी के बाद भारत को एक लंबे संघर्ष के बाद ब्रिटिश साम्राज्यवाद से आजादी मिली । स्वतंत्रता कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे अकेले एक व्यक्ति प्राप्त कर सकता है, इसके लिए एक बड़े राष्ट्र की जनता की जिंदगी का कीमत लगा है । संग्राम में भाग लेने वाली महिलाएं भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की ऊर्जा स्रोत थीं । भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास महिलाओं के योगदान का उल्लेख किए बिना पूर्ण कभी नहीं होगा । स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास महिलाओं के बलिदान, निस्वार्थता और वीरता का भी इतिहास है । ऐसे समय में जब यात्रा करने की स्वतंत्रता नहीं थी, देश के विभिन्न हिस्सों से कई महिलाओं ने कई तरह की कठिनाइयों को पार करते हुए बहादुरी से स्वतंत्रता संग्राम की आग में प्रवेश किया । जब अधिकांश पुरुष स्वतंत्रता सेनानी जेल में थे, तब महिलाओं ने आगे आकर संघर्ष की कमान संभाली । सैकड़ों महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हुईं और बहादुरी से लड़ीं और इस आजादी को हासिल करने के लिए विभिन्न यातनाओं, शोषण और कठिनाइयों का सामना किया । महिलाओं ने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाईं । उन्होंने सार्वजनिक सभाएँ कीं, विदेशी उत्पाद बेचने वाली दुकानों पर धरना आयोजित किया, खादी बेची और राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया । भारतीय महिलाएं विभिन्न प्रतिबंधों से बच गईं और अपनी पारंपरिक घरेलू भूमिकाओं और जिम्मेदारियों से बाहर निकल गईं । इसलिए स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय जागरण में महिलाओं की भागीदारी अविश्वसनीय और प्रशंसनीय है । आइए मिलते हैं आज़ादी के अमृत महोत्सव के इस अवसर पर ऐसी ही कुछ बहादुर महिलाओं से ।

झांसी की रानी- झांसी रानी लक्ष्मी बाई प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की अग्रिम पंक्ति की सेनानी थीं । एक बहादुर महिला जिसने ग्वालियर किले पर कब्जा करने की कोशिश करने वाले अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी । उन्हें अंग्रेजों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं में सबसे खतरनाक कहा था। वे एक ऐसी योद्धा थीं जिन्होंने अपने घोड़े पर सवार होकर अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष किया था। वह प्रतिरोध की प्रतीक थीं जिन्होंने

साबित कर दिया कि अगर आपके पास इच्छाशक्ति और साहस है तो किसी भी समस्या का सामना कर सकते हैं । जवाहरलाल नेहरू ने रानी लक्ष्मी बाई को काले परदे पर चमकता उज्ज्वल नाम के रूप में वर्णित किया है । इनके उपर सुभद्रा कुमारी चौहान की किविता खुब लडी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी काफी प्रसिद्ध है।

सरोजिनी नायडू- "भारत की कोकिला" के रूप में जानी जाने वाली सरोजिनी नायडू एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी हैं। उन्होंने गांधीजी के साथ नमक सत्याग्रह के हिस्से के रूप में नमक सत्याग्रह में भाग लिया। गांधी के जेल जाने के बाद धरसाना ने सत्याग्रह का नेतृत्व किया। सरोजिनी नायडू के जन्मदिन को भारत में महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है

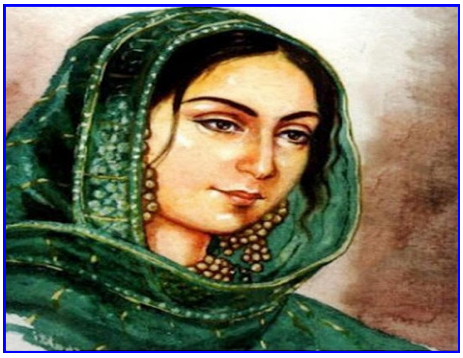

बेगम हजरत महल- बेगम हजरत महल अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह की पत्नी थीं। 1857 में, उन्होंने लखनऊ पर कब्जा करने आए अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष का नेतृत्व किया। उनका संघर्ष स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा गया था।

अरुणा आसफ अली -भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दादी के रूप में जानी जाने वाली अरुणा आसफ अली नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन की नायिका थीं । स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा और जेलों में राजनीतिक बंदियों के शोषण के खिलाफ काम किया । इंकलाब पत्रिका का शुभारंभ किया । अरुणा आसफअली भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास की सबसे शक्तिशाली शख्सियतों में से एक हैं।

मैडम भीखाजी कामा—मैडम भीखाजी कामा भारतीय स्वतंत्रता इतिहास की सबसे बहादुर महिला हैं । वे इंडियन होम रूल सोसाइटी के संस्थापकों में से थी । उन्हें भारत की पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी माना जाता है। उन्होने स्वराज के लिए आवाज उठाई और नारा दिया - हम भारत के लिए हैं और भारत भारतीयों के लिए हैं । सातवीं अंतर्राष्ट्रीय सोशलिस्ट कांग्रेस में भारत का प्रथम तिरंगा राष्ट्रध्वज फहराने के लिए सुविख्यात है।

रानी गेन दीन लियू - मणिपुर के मूल निवासी लियू एक नागा आध्यात्मिक और राजनीतिक नेता हैं जिन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया । आजादी के बाद भी उन्होंने लोगों की भलाई के लिए काम किया ।

रानी चेन्नम्मा— चेन्नम्मा, जो कर्नाटक के चित्तूर क्षेत्र की रानी थीं, भारत में स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले प्रमुख लोगों में से एक थीं । उन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ एक सशस्त्र युद्ध छेड़ा और परिणामस्वरूप उन्हें कैद कर लिया गया ।

पार्वती गिरि - पार्वती गिरि ओडिशा की एक स्वतंत्रता सेनानी थीं। उन्होंने बहुत कम उम्र में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया था । वह ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों में प्रमुख थीं। पार्वती गिरि को पश्चिम ओडिशा की मदर टेरेसा के नाम से जाना जाता है। वे गांधी जी की अगुवाई वाले भारत छोडो आंदोलन का हिस्सा बनीं । उन्होने 1942 के बाद बडे पैमाने पर पूरे देश भर में अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन के लिए अभियान चलाया।

प्रीति लता वडेदार - प्रीतिलता एक बंगाली क्रांतिकारी थीं और उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। पहाड़थली ने यूरोपीय क्लब को जलाने का नेतृत्व किया, जहां बोर्ड ने लिखा था कि कुत्तों और भारतीयों को अनुमति नहीं दी जाएगी।

कनकलता बरुआ -असम की इस महिला कार्यकर्ता ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया, जिसे अंग्रेजों ने गोली मार दी और उसकी छाती के पास तिरंगा लेकर मृत्यु स्वीकार ली।

सावित्री बाई फुले - सावित्री बाई फुले महाराष्ट्र की एक सामाजिक कार्यकर्ता थीं । ब्रिटिश शासन के तहत महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया।

उषा मेहता - गुजरात के एक स्वतंत्रता सेनानी ने भारतीय संघर्ष के दौरान कांग्रेस के लिए गुप्त कांग्रेस रेडियो नामक एक गुप्त रेडियो स्टेशन शुरू किया।

अमृत कौर - अमृत पंजाब के कपूर खानदान की एक राजकुमारी थीं जिन्होंने यात्रा में भाग लिया था और इसमें भाग लेने के कारण उन्हें जेल हुई थी और भारतीय संविधान की सदस्य थीं।

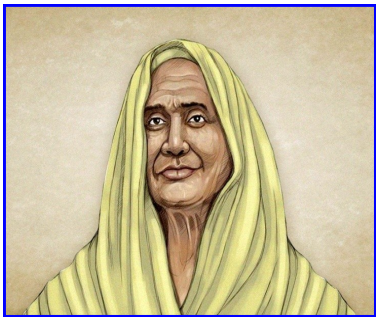

मातंगी हाज़रा - बंगाल के इस स्वतंत्रता सेनानी ने भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया, उन्होंने देश के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया, बहादुर महिला को अंग्रेजों ने गोली मार दी और वंदे मातरम कहकर संघर्ष के साथ आगे बढ़ गई।

अंजलै अम्माल— तमिलनाडु से स्वतंत्रता सेनानी असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली दक्षिण भारत की पहली महिला ने नमक सत्याग्रह में भाग लिया और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई बार जेल गईं।

इनके अलावा कई ज्ञात और अज्ञात महिला रत्न कैप्टन लक्ष्मी, विजयलक्ष्मी पंडित, अक्कम्मा चेरियान, एनी मस्क्रीन, अग्यावती, भीमा बाई होल्कर, जलकारी भाई कस्तूरबा गांधी, कमला नेहरू, एनी बेसेंट, सुचेता कृपलानी, आदि कई महिलाएं हैं जिन्होंने भारत को अपनी मातृभूमि के रूप में देखा, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए काम किया । मौत का डटकर मुकाबला करने वाली वीर महिलाओं को कोटि-कोटि नमन, वे न केवल महिलाओं के लिए बल्कि हर भारतवासी के लिए हमेशा प्रेरणा बने रहेंगे । जय हिन्द । **...**

अनुच्छेद– 351

हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढाए, उसका विकास करें जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द - भंडार के लिए मुख्यतः सस्कृत से और गौणताः अन्य भाषओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका

रूपा मंडल, कनिष्ठ अनुवादक, राजभाषा अनुभाग

हिंदी शब्द अपने आप में एक पूर्ण व्याख्यान है। बस उच्चारण मात्र से ही भारत वर्ष की छवि सामने प्रकट हो जाती है। नाम से ही इसकी परिभाषा ज्ञात हो जाती है जैसे कि हिंदुस्तान । जिस तरह भारत का इतिहास अपने आप में बेजोड है उसी तरह हिंदी भाषा का भी इतिहास है । अनेक प्रभावों से गुजरते हुए अनेक भाषाओं के मिश्रण से विकसित हुई यह हमारी हिंदी इतनी दूर तक फैल गई कि यह अखिल भारतीय भाषा के रूप में पहचानी जाने लगी । कहा जाता है कि अगर हिंदी भाषा न होती तो शायद आज देश अपना 75वीं आजादी का अमृत महोत्सव न मना रहा होता । अमृत महोत्सव का अर्थ प्रगतिशील भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्षों और उसके लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास है । आज इसका श्रेय अगर हम हिंदी भाषा को दे तो यह अतिश्योक्ति न होगी क्योंकि स्वतंत्रता सेनानियों मे ऊर्जा एक मात्र हिंदी भाषा ही जगा पाने में सक्षम हो पाई थी । हमारा देश विविधताओं से भरा है । विविध संस्कृतियाँ, वेश-भूषा, विविध आचार– व्यवहार तथा विविध भाषाएं बोली जाती है। इसी विविध भाषा के कारण ही शायद हमारा देश इतने वर्षो तक गुलामी की जंजीरों में जकडा रहा । अंग्रेजी हटाओ का नारा सुनकर हमे आश्चर्य नहीं होना चाहिए । उन सभी देशों ने आंदोलन चलाया जिन पर किसी न किसी भाषा का वर्चस्व रहा । जिस तरह कि भारत पर अंग्रेजी का।

स्वतंत्रता आंदोलन की इस ज्वाला को लगातार जागृत करने का कार्य पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण, हर दिशा में, हर क्षेत्र में हमारे संत-महंत, आचार्यों ने किया। जिन्होने लोगों को समझाने के लिए हिंदी भाषा का ही प्रयोग किया। रामचंद्र शुक्ल ने इसे सधुक्कडी भाषा की संज्ञा दी। इस तरह से भक्ति आंदोलन ने राष्ट्रव्यापी स्वतंत्रता आंदोलन की रीढ़ तैयार कर ली थी । वह स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी भाषा के माध्यम से ही लोगों को एकजुट करते थे। जन-भागीदारी यानि हमारे देश के विकास में सभी की भागीदार है उसी तरह संस्कृत के बाद हिंदी ने ही पूरब– पश्चिम, उत्तर– दक्षिण के धार्मिक तथा सांस्कृतिक केंद्रों, धामों, मन्दिरों, मठों को जोड़ने तथा कला– कौशल, स्थापत्य, चित्र एवं मूर्ति आदि कलाओं से परिचित करवाने और विभिन्न जीवन– शैलियों, विचारों एवं चिन्तनों को एक– दूसरे तक पहुँचाने में भाषिक मदद की है। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसने भारतवासियों में जागरूकता लाने तथा इससे सामाजिक सुधारों को बढावा देने की प्रेरणा मिली। यह महोत्सव भारत के लोगों को समर्पित है, जिन्होंने भारत को सुदूर विकासवादी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और साथ ही साथ आत्मनिर्भर भारत की सक्रिय भावना से ओत-प्रोत है। हिंदी भाषा की तरह ही यह महोत्सव एक गहन देश व्यापी अभियान है जो जनांदोलन का रूप ग्रहण करके नागरिकों को महत्वपूर्ण राष्ट्रव्यापी भावनावों से जोडने का काम कर रही है।

स्वतंत्रता सेनानियों के उपलक्ष्य में भारत सरकार की ओर से आजादी का अमृत महोत्सव के नाम के साथ विभिन्न स्वतंत्रता कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे हैं और इस कार्यक्रम में चार चांद लगाने का काम हमारी अपनी प्यारी हिंदी भाषा ही कर रही है। क्योकि जैसी सरलता और सुगमता इस भाषा में मिलती है शायद ही अन्य भाषा में हो। भारत के बुद्धिजीवियों को स्वतंत्रता और समानता के महत्व का ज्ञात हो गया था क्योंकि उन्होंने एक भाषा सीखी और यह वही हिंदी भाषा है जिसमे देश के विभिन्न भागों के स्वतंत्रता सेनानी एक दूसरे से बात कर सकते थे । वे हिंदी भाषा के कारण अपने विचारों को ठीक से रख पाते थे। बंगालियों को पंजाबियों से उत्तर भारत के लोग दक्षिण

भारतीयों या पूर्व भारतीयों आदि के साथ कैसे संपर्क करते यदि उन्हें एक आम भाषा का ज्ञान नहीं होता। एक आम भाषा ने उन्हें अपने अनुभवों और विचारों को साझा करने और उनकी आम समस्या को समझने में मदद की ।

उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ से ही हिंदी के पक्ष में जो आंदोलन पूरे देश में हुए, उनका प्रमुख कारण यह था कि स्वतंत्रता संग्राम लडनेवालों को इस बात का पूरा अहसास था कि पूरे देश में उनका संदेश पहुँचाना आवश्यक है। देश जोडने के लिए एक ऐसी भाषा की जरूरत पडी जो राष्ट्रभाषा की अवधारणा की पूर्ति कर सके। सब ने यह अनुभव किया कि गुलामी की भाषा अंग्रेजी के माध्यम से भारतवासियों को चाहे वो बंगाल, महाराष्ट्र, और दक्षिण के प्रांतों के बुद्धिजीवियों के बीच स्वतंत्रता की भावना जागृत नहीं किया जा सकता। इसके लिए अपने देश की किसी एक भाषा को माध्यम बनाना जरूरी हो गया था। और वो भाषा हिंदी ही हो सकती थी। यही कारण था कि बंगाल के नेताजी हिंदी में भाषण देते थे । "जयहिंद" का नारा उन्होने ही दिया। केशवचंद्र सेन जैसे लोगों ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की वकालत की। जस्टिस शारदाचरण मित्र ने देवनागरी लिपि और हिंदी को देश जोडने की कडी बताया। महाराष्ट्र में तिलक जैसे नेताओं ने हिंदी के राष्ट्रभाषा होने का समर्थन किया।

स्वतंत्रता के युग में साहित्यकारों और लेखकों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया । क्रांतिकारियों से लेकर देश के आम लोगों के अंदर लेखकों ने अपने शब्दों से जोश भरा। प्रेमचंद की 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि' उपन्यास हो या भारतेंदु हरिश्चंद्र का "भारत दर्शन" नाटक या जयशंकर प्रसाद का 'चंद्रगुप्त' सभी देश प्रेम की भावना से भरी पडी है। इसके अलावा वीर सावरकर की "1857 की प्रथम स्वाधीनता संग्राम" हो या पंडित नेहरू की "भारत एक खोज" या फिर लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की "गीता रहस्य" या शरद बाबू का उपन्यास "पथ के दावेदार" ये सभी लेख ऐसे है जो लोगों में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। इसके अलावा कवियों ने अपनी कविता से लोगों में देश प्रेम को जागृत किया जिससे लोग घरों से निकल कर स्वाधीनता संग्राम में हिस्सा लिए।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जिस आधुनिक युग का प्रारंभ किया उसकी जड़ें स्वाधीनता आंदोलन में ही पनप गई थी, भारतेंदु और भारतेंदु मंडल के साहित्यकारों ने युग चेतना को हिंदी पद्ध और गद्ध दोनों में ही अभिव्यक्ति दी। जहां एक ओर इन्होने स्वाधीनता सेनानियों की भूरी – भूरी प्रशंसा की वही दूसरी ओर अंग्रेजो की शोषणकारी नीतियों का खुल कर विरोध किया। "अंधेर नगरी चौपट राजा" व्यंग्य के माध्यम से भारतेंदु ने तत्कालीन शासकों की निरंकुशता तथा मूढता का वर्णन किया है। महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिली शरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी ने अपनी रचनाओं से देशवासियों में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाकर उन्हें स्वाधीनता संग्राम में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया। मैथिली शरण गुप्त की "भारत – भारती", माखन लाल चतुर्वेदी की "पुष्प की अभिलाषा" और सुभद्रा कुमारी चौहान की "झांसी की रानी" आदि कविताओं ने स्वाधीनता आंदोलन को तेज करने में अद्वितीय भूमिका अदा की।

इस दौड़ में हिंदी पत्रिका भी कहां पीछे रहने वाली थी, इस संग्राम को दर्शन और दिशा देने का काम पत्रकारिता ने ही किया। हर प्रकार के कीमत चुका कर पत्रकारों ने आजादी की लडाई जारी रखी। 8 फरवरी 1857 को अजीमुल्ला खां ने दिल्ली से हिंदी और ऊर्दू में एक छोटा सा समाचार पत्र निकाला- पयामे आजादी। इसमे उस समय का राष्ट्रगीत की प्रथम पंक्तियां छपी थी-

"हम हैं इसके मालिक, हिंदुस्तान हमारा,
पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा।"

इससे पता चलता है कि इस देश में आजादी की जंग का पहले ऐलान पत्रकारिता ने ही किया। इसके बाद भारतेंदु हरिश्चंद्र के "कवि वचन सुधा" का दौर आया। इस पत्रिका का उद्देश्य था – "सत्य निज भारत गहे, अर्थात इसकी अनेक पंक्तियां देश- देशहित को प्रधानता देने वाली थी। युगल किशोर शुक्ल का "उदंत-मार्तंड", नीलरतन हलदार का 'बंगदूत', शिवप्रसाद सितारे हिंद का "बनारस अखबार" जितना महत्व समाचारों को देते थे उससे कही

ज्यादा लोगों के हितों को । प्रथम दैनिक 'सुधावर्षण' ने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध करने का बहादूर शाह जफर का फरमान छाप कर विदेशी सत्ता को खुली चुनौती दी थी। 1900 से 1920 तक तिलक महाराज का "अग्निपथीय पत्रकारिता" का एक दीर्घ दौर इस काल में चला। युगांतर, गदर, वंदे मातरम, संध्या, स्वराज्य, कर्मयोगी, प्रताप वीर अर्जुन, तेज, मिलाप, कर्मवीर, भारत मित्र इत्यादि केवल नाम ही नहीं थे, ये देशप्रेम में धधकते अग्नि कुंड थे। विपिन चंद्र पाल और हलदर के "वंदे मातरम" ने न केवल बंगाल में बल्कि पूरे उत्तरी भारत में खलबली मचाई थी। 1907 में इलाहाबाद से प्रकाशित 'स्वराज्य' ने तो पत्रकारिता और स्वतंत्रता के इतिहास में पत्रकारिता के साहस और शूरता की एक अद्‌भूत मिसाल कायम की। इस पत्र के आठ संपादकों को कुल मिलाकर 125 वर्ष काले पानी की सजा मिली थी। हर संपादक के सजा के बाद – स्वराज्य में इश्तेहार निकलत-संपादक चाहिए, वेतन दो सूखी रोटी, एक गिलास ठंडा पानी और हर संपादकीय के लिए 20 साल की जेल। स्वराज्य को तब भी संपादको की कमी नहीं पडी। राजा राममोहन राय, बाबू अरबिंदो घोष, युगल किशोर शुक्ल, दुर्गा प्रसाद मिश्र, बाल कृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त, अमर लाल चक्रवर्ती, पराडकर, विधार्थी बाजपेयी ये सभी जान हथेली पर लेकर लड रहे थे। 'कर्मवीर' जैसे कई पत्र थे जिन पर अन्य प्रदेशों में पाबंदी थी फिर भी ये पत्र चोरी – छिपे उन प्रदेशों में पहुँच ही जाते थे।

अत: हम कह सकते है कि हिंदी पूरे राष्ट्र को एकजुट करने में पहले भी एक मील का पत्थर थी और आज भी बनी हुई है। हिंदी को यूही राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त नहीं हुआ, हिंदी की ऐसी कई विशेषताएं है जिसके कारण हिंदी को यह भूमिका सौंपी गई। इसका एक प्रमुख कारण यह था कि इसमें किसी भी भाषा के शब्दों को अपने में समाहित करने का एक विशेष गुण है। इस भाषा में पाणिनी की कृपा से शब्द-निर्माण की ऐसी नैसर्गिक प्रक्रिया है जो आज से नहीं बल्कि 2 हजार वर्ष से चली आ रही है। हिंदी ने जिस प्रकार फारसी, तुर्की, पुर्तगाली आदि भाषाओं के शब्दों को अपनाया उसी प्रकार इसमें अंग्रेजी के शब्द भी घुल मिल रहे है। इस तरह हिंदी का रूप कुछ इस प्रकार निखरेगा कि यह एक ऐसी विराट भाषा बन कर देश ही नहीं बल्कि विश्व पटल पर अपने विराट रूप का साक्षात्कार कराएगी तथा भारत का स्वर्णिम इतिहास हिंदी भाषा से ही बन पाएगा।...

अष्टम अनुसूची में शामिल भाषाएँ
(अनुच्छेद 344 (1) और 351

1.	असमिया	13.	संस्कृत
2.	ओडिया	14.	सिन्धी
3.	उर्दू	15.	हिंदी
4.	कन्नड	16.	नेपाली
5.	कश्मीरी	17.	कोंकणी
6.	गुजराती	18.	मणिपुरी
7.	तमिल	19.	डोंगरी
8.	तेलुगु	20.	बोडो
9.	पंजाबी	21.	संथाली
10.	बंगला	22.	मैथिली
11.	मराठी		
12.	मलयालम		

जीवन मूल्य

जी. भुवनेश्वरी, मुख्य आरक्षण पर्यवेक्षक/सेलम

मूल्य एक ऐसा गुण या आदर्श है जिसे हम एक लक्ष्य की तरह हासिल करने का प्रयास करते रहते हैं। वे हमें सिखाते हैं कि हमें विभिन्न परिस्थितियों में कैसे व्यवहार करना चाहिए और हमारे जीवन को कैसे सही दिशा देनी चाहिए। जीवन में, अच्छे मूल्यों वाला व्यक्ति बेहतर प्रभार ले सकता है। मूल्य हमेशा हमारे चरित्र के निर्माण में मदद करते हैं। एक व्यक्ति जो ईमानदारी, वफादारी, विश्वसनीयता, दक्षता, स्थिरता, करुणा, दृढ़ संकल्प और साहस जैसे अच्छे मूल्यों को रखता है, वह एक मजबूत चरित्र का निर्माण करता है। मूल्य समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अच्छे मूल्यों वाले लोग समाज के विकास में मदद करेंगे और इसे रहने के लिए एक बेहतर जगह बनाएंगे।

मूल्य हमेशा विभिन्न चीजों पर आधारित होते हैं। मूल्य एक समाज या उम्र के लिए विशिष्ट हो सकते हैं। अतीत में, यह माना जाता था कि अच्छे नैतिक मूल्यों वाली महिलाओं को घर पर रहना चाहिए और किसी भी चीज पर अपनी राय नहीं देनी चाहिए, हालांकि, यह समय के साथ बदल गया है। हमारी संस्कृति और समाज काफी हद तक मूल्यों का निर्धारण करते हैं। किसी व्यक्ति की पहचान उनके मूल्यों से ही होती है । व्यक्ति के मूल्य हमेशा उसके दृष्टिकोण और समग्र व्यक्तित्व पर प्रतिबिंबित होते हैं।

मूल्यों का निर्माण कैसे होता है?

मूल्य हमारे जन्म के समय से बनते हैं, लेकिन हमें उन मूल्यों को चुनना पड़ता है जो हमारे जीवन में किसी भी मोड़ और स्थिति पर हमारे साथ प्रतिध्वनित होते हैं, जो हमारे लिए सबसे उपयोगी होंगे। मूल्य परिवर्तनशील होते हैं क्योंकि वे समाज और उन लोगों से प्रभावित होते हैं जिनके हम सबसे करीब हैं। **मूल्य जीवन के कई पहलुओं से आ सकते हैं जैसे परिवार, दोस्त, मीडिया, समाज, किताबें और अधिकारियों के माध्यम से जो हमें मार्गदर्शन करते हैं।**

मूल्यों के प्रकार और श्रेणियाँ

दुनिया में बहुत सारे मूल्य हैं जो जाति, राष्ट्रीयता, संस्कृति, धर्म, पंथ आदि में भिन्न हैं।निम्न विभिन्न प्रकार के वर्गीकरण प्रणालियों के अनुसार मूल्यों की एक सूची है जो मुझे उम्मीद है कि मूल्यों के विभिन्न प्रकारों और श्रेणियों को सरल बना देगा। हालांकि पूर्ण नहीं है, आप निम्नलिखित मूल्यों का उपयोग कर सकते हैं जो आपके साथ प्रतिध्वनित करते हैं या आपको प्रेरित करते हैं।

नैतिक मूल्य - ये हमें सही और सही मार्ग का पालन करने में सक्षम बनाते हैं । जैसे ईमानदारी,अखंडता,वफादारी ।

आध्यात्मिक मूल्य - सिद्धांत जो किसी व्यक्ति को दार्शनिक मान्यताओं और विचारों का पालन करने की अनुमति देते हैं। जैसे अहिंसा,करुणा ।

राजनीतिक मूल्य - ये मूल्य किसी व्यक्ति की देशभक्ति की भावना से संबंधित हैं। जैसे देशभक्ति,राष्ट्रीय एकता,लोकतंत्र।

सामाजिक मूल्य - ये मूल्य लोगों को एक साथ और एक-दूसरे के लिए रहना संभव बनाते हैं। जैसे दूसरों की चिंता,दूसरों की देखभाल,सहयोग ।

शैक्षिक मूल्य - यह किसी व्यक्ति के ज्ञान और समझ के विकास की अनुमति देता है। जैसे जिज्ञासा, रचनात्मकता, ग्रहणशीलता ।

सौंदर्य मूल्य- यह सुंदरता और सुंदर चीजों के लिए एक प्रशंसा है। जैसे लालित्य कला, संगीत

वैज्ञानिक मूल्य - यह हमें डेटा, ज्ञान आदि का परीक्षण, विश्लेषण और सत्यापन करने की अनुमति देता है। जैसे ज्ञान, निष्पक्षता, सूक्ष्मता ।

आधुनिक समय में मूल्यों का पतन

आज के उभरते समाज में आधुनिक संस्कृति, औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, भूमंडलीकरण और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रभाव के अलावा अनेक कारकों के कारण मूल्यों के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। मूल्य **मार्गदर्शक सिद्धांत हैं, दिन-प्रतिदिन के व्यवहार में निर्णायक हैं और साथ ही महत्वपूर्ण जीवन स्थितियां भी हैं।**

दुर्भाग्य से इन दिनों लोग पैसा बनाने और एक अच्छी जीवन शैली जीने में इतने तल्लीन हैं कि वे अक्सर मूल्यों के महत्व को अनदेखा करते हैं। जिस उम्र में बच्चों को अच्छे मूल्य सिखाए जाने चाहिए, उन्हें इस प्रतिस्पर्धी दुनिया में लड़ने और जीवित रहने के लिए सिखाया जाता है। उनके शिक्षाविदों और अन्य गतिविधियों में प्रदर्शन को उनके मूल्यों पर महत्व दिया जाता है।माता-पिता के साथ-साथ शिक्षक भी उन्हें सिखाते हैं कि कैसे एक-दूसरे का सामना करना है और किसी भी तरह से जीतना है, बजाय इसके कि उनमें अच्छी खिलाड़ी भावना पैदा की जाए और उन्हें अखंडता, करुणा और धैर्य जैसे मूल्य सिखाए जाएं।बच्चे हमेशा अपने बड़ों को अपने रोल मॉडल के रूप में देखते हैं और यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इन दिनों बड़ों में मूल्यों की कमी है। इसलिए बच्चे भी यही सीखते हैं।

व्यक्तिगत केंद्रवाद का उदय हुआ है और जीवन के सभी पहलुओं में हम से मैं तक आया है। यह स्वार्थीपन किसी को अपने स्वयं के तरीके से परिभाषित करने के लिए प्रेरित करता है कि एक अच्छा जीवन कैसा होगा। बिना दूसरे विचार के, हम कह सकते हैं कि ऐसे मामलों में नैतिक मूल्य पीछे हट जाते हैं।

आजकल यही हो रहा है। जीवन की यह बहुत ही संकीर्ण धारणा व्यक्तियों को पारदर्शिता, जवाबदेही, ईमानदारी और अखंडता जैसे नैतिक मूल्यों से समझौता करने के लिए प्रेरित करती है।समाज में उच्च पदों पर आसीन राजनेता और अधिकारी अपने बेटों, परिवार के लाभ के लिए उस शक्ति का उपयोग करने के लिए मानसिक रूप से तैयार होते हैं।

इस तरह के व्यवहार को नियंत्रित करने के उपाय

1. मनुष्यों की मूल विशेषता एक-दूसरे की मदद करना है, जो इन दिनों गायब है। अब समय आ गया है कि हम अपनी मूल बातों पर वापस जाएं और उन बुराइयों को दूर करें जिनसे हम आधुनिक जीवन शैली के कारण चिपके हुए हैं।इसके लिए दृष्टिकोण में बदलाव लाने की आवश्यकता है। हमें बहुत ही कम उम्र में बच्चों में सही मूल्यों का विकास करना चाहिए।

2. व्यक्तियों में अपराध बोध होगा और वे जीवन में सभी स्थितियों में ईमानदार रहने का प्रयास करेंगे। खुशी केवल भौतिक चीजों के होने में नहीं है, व्यक्ति को नैतिक रूप से जीवन जीने के द्वारा साथी मनुष्यों को अपनी खुशी बांटनी चाहिए और फैलानी चाहिए।हमारे जीवन में, एक अच्छे जीवन को मापने की हमारी बहुत संकीर्ण धारणा है।यह गलत मापदंडों के कारण होता है जिससे हम अपनी खुशी और सफलता को मापते हैं। यह व्यवहार लंबे समय में नैतिक मूल्यों के संकट और संघर्ष का कारण बनता है।

अपने स्वयं के व्यक्तिगत मूल मूल्यों को लिखना

अपने शीर्ष मूल मूल्यों की एक सूची बनाएं। किसी भी विचार या भावनाओं का वर्णन करें जिन्हें आप प्रत्येक मूल्य के साथ जोड़ते हैं। अब अपने मूल्यों को रैंक करें, सबसे महत्वपूर्ण को शीर्ष पर रखें। अपने व्यक्तिगत मूल मूल्यों को लिखने के बाद, आप उन्हें समय-समय पर पुनर्मूल्यांकन कर सकते हैं। प्रत्येक मूल्य की स्थिति बदल सकती है क्योंकि आप अपने जीवन के प्रत्येक चरण के माध्यम से संक्रमण करते हैं। आप एक नया मूल्य भी जोड़ सकते हैं या एक को दूर ले जा सकते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप अपने जीवन में कहां हैं।

अपने व्यक्तिगत मूल मूल्यों को लिखना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जीवन में आपके उद्देश्य के लिए एक संदर्भ बिंदु प्रदान करता है। जीवन में आपके मूल्य और उद्देश्य एक ऐसा जीवन बनाने के लिए एक साथ काम करते हैं जो आपके लिए अधिक खुशहाल और सार्थक हो ।

आपके मूल मूल्य गहराई से जुड़े विश्वास हैं जो प्रामाणिक रूप से आपकी आत्मा का वर्णन करते हैं - जॉन सी मैक्सवेल।

मूल्यों पर अंतिम विचार

मूल्य महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे हमारे व्यवहार और व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं । वे अद्वितीय, आंतरिक विश्वास हैं जो हर किसी के पास हैं। लेकिन वे हमारे जीवन के अनुभवों, रिश्तों और हम समाज से क्या प्राप्त करते हैं, इससे भी आकार लेते हैं।

यदि आप नहीं जानते कि आपके मूल्य क्या है, तो आप खोया हुआ महसूस कर सकते हैं, अपनी पसंद पर संदेह कर सकते हैं, और अपने आप में कम आत्मविश्वास रख सकते हैं। जो लोग जानते हैं कि उनके मूल्य क्या है और उनके अनुसार कार्य करते हैं वे अधिक खुश रहते हैं और अधिक सार्थक जीवन जीते हैं।

शिक्षक : छात्र से पुछा, "तुम अपने पिताजी का नाम रोशन कर सकते हो?"

छात्र : जी, गुरु जी1

शिक्षक : कैसे?

छात्र : घर में लगे उनके नेमप्लेट के चारों ओर LED की चमकदार लडियाँ जलाकर।

मैं और मेरा बटुआ

जयसन ए. फिलीपोज
मुकाधी, कार्मिक शाखा

उस दिन याद है है मुझे, मेरा जन्मदिन था तभी,
मेरे हाथ थमा दिया था, एक सुंदर सा बटुआ मेरे चाचा जी ने
मैं भी चौंक गया, क्या यह कोई सपना तो नहीं,
मैं अपने आप को संभाल ना पाया, सोचा मेरी यह औकात ही नहीं।

मैं तुरंत अपनी तीन बटन वाले आधी पतलून में घुसा डाला,
गर्व से अपनी दस साल का जन्मदिन खुशी-खुशी मना डाला,
बार-बार उस बटुए को अपने यार दोस्तों को दिखाता था.
और उनके आंखों के इर्शालु भाव से सुकून पाकर खुश हो जाता था।

कॉलेज का दिन मैं अब तक भूल न पाया,
लडकियां फिदा थी, मुझ पर नहीं, बल्कि मेरे बटुए पर,
शाम को घर पहुँचने तक पूरा पैसा खाली हो जाता था,
पर अगले दिन अपनी झूठी शान के लिए टॉप-अप कर देता था।

बटुए बदलते रहे, मेरी उमर भी बढता रहा,
एक दिन मेरी भी हुई शादी, अपने घर नई नवेली दुल्हन ले आया,
घर आते ही मेज पर पडा मेरा बटुआ खोल कर उसने देख लिया,
और अपनी एक तस्वीर उसमें दिखने जैसा लगवा लिया।

मैने पुछा क्यों भागवान, ऐसा तूने क्यों किया,
वह बोली, देखिए श्रीमान यह तस्वीर आपको मेरी याद दिलाएगी,
असलियत में वो यह साबित कर रही थी, सिर्फ मुझ पर ही नहीं,
मेरे पैसों पर भी अधिकार जता रही थी।

पुराने बटुए की तरह मेरी भी उमर ढल रही थी,
बटुए को तो फेंक सकता था, पर मेरी बारी अब तक नहीं आई थी,
आज फोन पे, पे टि एम ने पैसे की जगह ले ली है, पर आज भी,
बटुए के बिना कोई भी घर से निकलता नहीं हैं।

आज पैसे भले ही कम है बटुए में, पर आज पतलून के पिछले हिस्से में रख नहीं सकते
अनावश्यक कागजाद से हमारा बटुआ भर गया है, जिसको साफ करने के लिए एक नया बटुआ ही खरीदना है मुझे
बच्चे बडे हो गए और उनके भी बच्चे हो गए सब अपने फुर्सत के अनुसार हमसे मेल मिलाप कर जाते,
यार दोस्तों की तो बात ही और है, जो तब थे वे अब दिखाई ही नहीं दे रहे है।
बचपन के दिन थे सभी, आज यहां तक पहुँच पाया, जितनी उमर उतनी ही सुख-दुख झेले है पमने,
जिंदगी के इस मोड पर जब सभी हमें छोड जाते हैं, एक बटुआ ही तो है जो हमारे साथ हमेशा रह जाते है।

क्यों जरूरी है भारत में समान नागरिक संहिता

अमित कुमार मिश्रा, सहायक ब्रिज/ईरोड

क्या भारत जैसे विविधता मूलक देश में जरूरत है? समान नागरिक संहिता की! *क्या है समान नागरिक संहिता-भारत में दो तरह के कानून हैं (1)सिविल कानूनों और (2)अपराधिक कानून

सिविल कानून दो संगठनों या दो व्यक्तियों के बीच विवादों को सुलझाता है जैसे-संपत्ति, धन,आवास, तलाक, बच्चों की कस्टडी जबकि अपराधिक कानून समाज के खिलाफ़ लिए अपराधों से संबंधित विवादों को सुलझाया जाता है जैसे-आगजनी, डकैती, हमला आदि ।

अधिकांश विषयों में भारत के सिविल कानून में समानता नहीं है ये धर्म और आस्था के आधार पर बदलते हैं ये कानून धर्म के आधार पर बनाए गए हैं। भारतीय अनुबन्ध अधिनियम,भारतीय साझेदारी अधिनियम तथा अधिकांश सिविल मामलों में कानून धार्मिक ग्रंथों के आधार पर तय होते हैं विवाह तलाक और बच्चा गोद लेने का नियम धर्म के आधार पर हैऔर ये सभी धर्मों में अलग-अलग हैइस तरह से हम कह सकते हैं कि अधिकतर मामलों में भारत में धर्म अधिक महत्वपूर्ण है। भारत के संविधान के भाग चार के अनुच्छेद 44 में इसका वर्णन है जो राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत में आता है और सरकार आपको अपना कर्तव्य याद दिलाता है और सरकार की जिम्मेदारी है कि वह इस प्रावधान को ठीक से लागू करें संविधान के अनुच्छेद 44 में लिखा गया है कि राज्य प्रयास करें कि पूरे देश के लिए समान नागरिक संहिता को लागू करें और एक समान नागरिक संहिता बनाएँ जो पूरे देश में लागू हो सके।

*समान नागरिक संहिता में तीन शब्द है इन तीनों शब्दोंका एक बार विश्लेषण करते हैं -

1. सामान:- आपने देखा होगा कि स्कूल में एक समान यूनिफॉर्म बनाए जाते इसके पीछे क्या कारण हो सकता है इसके पीछे का कारण यही है कि बच्चेसभ्य तरीके से आ सके दूसराकिकिसी भी बच्चे में अमीरी गरीबी का अंतर ना हो सकेइसका मकसद है सबको एक कर देनाअब प्रश्न ये उठता है एकरूपता कैसी होनी चाहिए एकरूपता का कतई यह मतलब नहीं है कि कोई काला व्यक्ति है तो उसे गोरा कर देना या कोई गैर व्यक्ति को काला कर देना यह एकरूपता का मतलब नहीं है एकरूपता का मतलब है जहाँ तक यानी की यथासंभव जो हो सके उसे एक रूप में लाना।

2. सिविल(नागरिक):-जब दो व्यक्ति या संस्था या राज्य या एक समूह या एक व्यक्ति या दूसरा समूह या एक व्यक्ति या राज्य या एक राज्य या व्यक्ति

3. संहिता:-इसका मतलब यह है की किसी व्यापक विषय में किसी कानूनों को या किसी नियमों को एक साथ करने का प्रयास किया गया है इसे कहते है कोड आपने देखा होगा कि बहुत लंबे समय से चले आ रहे हैं मौखिक या अलिखित नियमों या प्रथाओं या परंपराओं को जब कोई समाज सोचता है कि हमइसको लिख कर व्यवस्थित कर ले तो इस प्रयास को हम बोलते है संहिताकरण

अब प्रश्न यह उठता है कि भारत जैसे विविधता मुल्क राष्ट्र में क्या समान नागरिक संहिता लागू हो सकता है आए हम इसके होने की संभावनाओं को तलाशें

(1) सभी को अलग अलग कानून चलने दें अगर किसी का कानून अलग हैं तो इसमें क्या सोचना या इसमें क्या छेड़छाड़ करना

(2) हम सबके अलग अलग कानून चलने दे लेकिन अलग कानूनों में से जो कानून भेदभाव पैदा करते हैं उन भेदभाव भरे कानूनों को हटा दें और प्रोग्रेसिव कानून बना दें उन्हीं के समाज के लिए।जैसे हमें पता है कि भारत के मुस्लिम महिलाओं को कुछ अधिकार कम मिलते हैं जैसे हिंदू महिलाओं को अधिकार है कि उसका पति दूसरा विवाह न कर सके मुस्लिम महिला का पति चार विवाह कर सकता है और वह उसमें कुछ नहीं कर सकती जो मुस्लिम पर्सनल लॉ में जो भेदभाव उस महिला से हो रहा है उसको केवल हटा दें और कानून वही चलने दें तब हम कहेंगे कि हम समानता की ओर जा रहे हैं या समानता दिला दी उस भेदभाव वाले हिस्से को हमने हटा कर एक प्रोग्रेसिव रास्ता चुना जो समान नागरिक संहिता की ओर ले जाता है।

(3) एक समान नागरिक संहिता बना दें जिसमें एक कानून विवाह का हो जिसमें यह वर्णन हो कि किसी भी धर्म जाति का विवाह संबंधित कानून इस में बनाए गए कानूनों से ही लागू होगा।
अब प्रश्न यह उठता है कि भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में यह कैसे चल सकता है हमको तो थोड़ा बहुत विविधता को सम्मान करना ही चाहिए उसको देखना ही चाहिए उसके अनुसार कानून बनाना ही चाहिए जैसे उदाहरण के लिए हम हिंदू समाजको ही ले ले आपको पता होगा कि कुछ राज्यों में गोत्र बहुत बड़ा महत्त्व रखता है अगर एक ही गोत्र के दो लड़के लड़कियां विवाह कर लें तो समाज उसे नहीं अपनाता।जबकि गोत्र की धारणा मुस्लिम समाज में नहीं है अगर आप केरल तमिलनाडु या दक्षिण के राज्यों को देखें तू यहाँ धारणा नहीं के बराबर है इन राज्यों के हिंदू समाज के लोग अपने मामा की लड़की से शादी करते हैं जबकि आप यह प्रथाबिहार यूपी एमपी जैसे राज्यों में नहीं के बराबर देखेंगे तो आप एक कानून कैसे बना सकते हैं वहीं मुस्लिम समाज में अपनी सगी बहन या भाई को छोड़कर सभी से शादी कर सकती है अगर यदि इसी कल्चर से मुझे या किसी और को कोई फर्क नहीं पड़ रहा है तब तक हमें इस बात से क्यों परेशान होना चाहिए ये प्रश्न तो उठता ही है तो हमें अब क्या करना चाहिए एक कानून बनाकर उस समाज धर्म जाति के कुछ कल्चरों को हटा देना चाहिए?

(4) कई लोगों का मानना है कि एक कानून होना चाहिए जो सभी लोगों के लिए समान होना चाहिए चाहे वो किसी भी धर्म जाति सम्प्रदाय का ही क्यों ना हो सब के लिए एक कानून इसका मतलब यह नहीं कि हिंदुओं की शादी काजी कराएं और मुसलमानों की शादी ब्राह्मण कराएं जो जीस धर्म है वह उसी धार्मिक प्रथाओं के अनुसार विवाह करें कौन किस प्रथा या रस्म के अनुसार शादी करें इसमें कोई रोक टोक नहीं पर जब कोई धर्म का व्यक्ति शादी करेगा तो उस शादी का रजिस्ट्रेशन करना होगा और उसके सम्पत्तिका वितरण या तलाक इन सब मामलों में 100 फ़ीसदी समानता होगी इसे कहते है शुद्ध समान नागरिक संहिता।

बहुत से लोग इसे ही लागू करने को कहते हैं लेकिन अगर हम भारत के संदर्भ में देखें तो यहाँ का सामाजिक/ धार्मिक ताना बानामें बहुत विविधताएं हैं बहुत हीविभिन्नताएँ हैं हम किसी और देश का नकल नहीं कर सकते हैं जैसे -हम जर्मनी, फ्रांस, सऊदी अरब, इराक जैसे देशों में आम तौर से एक ही कल्चर है इन देशों में एक ही कल्चर के अनुसार कानून चलाए जाते हैं ये वहाँ हो सकता है पर भारत जैसे विविधता मूलक राष्ट्र में यह करना कर पाना असंभव सा प्रतीत होता है जैसे हिंदू समाज ने संपत्ति का बंटवारा पाप से बेटे की ओर चलती है लेकिन केरल के नायर समाज में माँ से बेटी की ओर चलती है वहीं मेघालय में जाये तो खासी जनजाति के लोगों में भी भी माँ से बेटी की ओर ओर चलता है अगर कुछ समाज में बाप से बेटे की और चल रहा है और कुछ समाज में माँ से बेटी की और चल रहा है तो हमें बस इतना कर लेना है कि किसी समाज में भेदभाव नहीं होने देंगे तो परंपरा भी बने रहेंगी और तनाव

भी नहीं होगा आखिरकार हम तो एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है।

*समान नागरिक संहिता का इतिहास-इसकी उत्पत्ति औपनिवेशिक भारत के दौरान 1835 मैं ब्रिटिश सरकार के एक रिपोर्ट से होती है जिसमें मुख्य तौर पर अपराधों, सबूतों और अनुबंधो से संबंधित कानूनों में एकरूपता लाने पर ज़ोर दिया जाता है हालांकि इस रिपोर्ट में कहा गया था कि हिंदू और मुस्लिम के व्यक्तिगत कानूनों को इससे बाहर रखा जाएगा। इसके बाद साल 1941 जब भारत लगभग आजाद होने वाला ही था और ब्रिटिश सरकार का शासनकाल लगभग समाप्त होने वाला थालेकिन यही वो साल था जब भारत में धार्मिक ढांचा और अधिक जटिल हो गया था और इसी जटिलता को ध्यान में रखते हुए ब्रिटिश सरकार ने हिंदू कानूनों को संहिताबद्ध करने के लिए एक बी एन राव समिति का गठन किया और यह समिति अपनी रिपोर्ट स्वतंत्रता के बाद दी जिसमें कुछ सिफारिशें इस प्रकार थी-

(1)हिंदू बौद्ध जैन और सिखों के कानूनों का संहिताकरण

(2)हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम पारित हो

हालांकि मुस्लिम ईसाई और पारसियों के लिए अलग अलग कानून चलते रहने दिया गया। इसलिए हम कह सकते हैं कि भारत में समान नागरिक संहिता का इतिहास काफी पुराना है।

*अब आगे हम ये देखेंगे कि इस संबंध में भारतीय संविधान और सर्वोच्च न्यायालय का क्या मत है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद44 में हमें इसका जिक्र देखने को मिलता है जिसमें कहा गया है कि राज्य समग्र भारतीय क्षेत्र में नागरिकों के लिये समान नागरिक संहिता लागू करने का प्रयास करेंगे आपको यह जानकारी होगी कि अनुच्छेद 44 राज्य के नीति निर्देशक तत्वों का हिस्सा है।राज्य के नीति निर्देशक तत्व में एक अनुच्छेद है 37 इसके अनुसार यह एक गैर परिवर्तनीय है यानी कि इसे कोई व्यक्ति या संस्था कोर्ट जाकर इसे लागू करने की मांग नहीं रखता जिससे हम यह कह सकते हैं कि संविधान हमें समान नागरिक संहिता की गारंटी नहीं देता है।

अब हम बात करते हैं न्यायपालिकाइसे किस दृष्टि से देखता है। न्यायपालिका समय-समय पर सरकार कोसमान नागरिक संहिता के महत्त्व कोबतातेआरहहै औरसमय-समय पर सरकार को यह निर्देश भी जारी किया है कि समान नागरिक संहिता को लागू किया जाए उदाहरण के लिए(1) साल 1985 के शाहबानो विवाद को हम सभी जानते हैं हैं (2) सरला मुद्गल केस 1995दो विवाह प्रथा के मुद्दे को संबोधित किया और समान नागरिक संहिता लागू करने को लेकर सरकार को आदेश दिए।

*समान नागरिक संहिता के भारत के लिए क्या निहितार्थ हैं?:-इससे सबसे पहले जो निहितार्थ निकल कर आता है वह है संवेदनशील वर्गों का संरक्षण सुनिश्चित किया जा सकता है बीआर अंबेडकर ने इस पर कहा है कि इसका उद्देश्य महिलाओं समेत अन्य संवेदनशील वर्गों की सुरक्षा प्रदान करना है और राष्ट्रवादी भावनाओं को और बढ़ावा दिलाना है भारत में जो भी सिविल कानून लागू है उस पर धर्म के आधार पर कानून लागू किया गया है उसमें महिलाओं को ज्यादा अधिकार नहीं दिए गए हैं क्योंकि भारत में प्राचीन काल से ही महिलाओं को हमेशा से ही भेदभाव किया आता रहा है इस वजह से जब भारत में एक समान कानून लागू होंगे तो महिलाएं और पुरुष के बीच बराबरी और अधिक होगी।

*कानूनों का सरलीकरण:- हमारे भारत में विवाह, तलाक, विरासत, उत्तराधिकार, गोद लेने संबंधित अलग-अलग कानून है तथा भारत के पर्सनल ला फेम वर्ग में काफी जटिलताएं हैं ऐसे में अगर एक समान नागरिक संहिता लागू

किया जाए तो ऐसे कानूनों में सरलीकरण की संभावनाएं ज्यादा होगी व्यक्तिगत कानून किसी भी देश के विकास में बाधा पहुंचाते हैं अगर आप अमेरिका और ब्रिटेन को देखें तो समझ सकते हैं वहां पर व्यक्तिगत कानून नहीं है।

*समान नागरिक संहिता के निहितार्थ:- व्यक्तिगत कानून तर्कहीन मान्यताओं पर आधारित होते हैं और समय के साथ समाज और राष्ट्र के विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं समान नागरिक संहिता से इन कुप्रथा को समाप्त किया जा सकता है और देश के विकास को और सुनिश्चित किया जा सकता है।*न्यायपालिका पर कमबोझ:- यह भी माना जाता है कि जब समान नागरिक संहिता लागू होगी तो देशभर में पड़े लंबित केस का बोझ नया ले पर से कम होगा एक आंकड़े के अनुसार उच्च न्यायालय में 4.50 मिलियन मामले लंबित है और जिला न्यायालय में 30 मिलियन मामले लंबित है और इसका प्रमुख कारण है कि भारत में पर्सनल ला काफी जटिल है इस न्यायपालिका को इस कानून को लागू करने इसका सही ढंग से पालन सुनिश्चित करने में ज्यादा समय लगता है इसलिए मामले लंबे समय तक खींचते जाते हैं

*क्या-क्या चुनौतियां मौजूद है:- संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार इस तरह के प्रावधानों को विरोधाभासी माना जाता है उदाहरण के लिए अनुच्छेद 25 को ले लीजिए जिसमें कहा गया है कि सभी व्यक्तियों को अंतः करण की स्वतंत्रता है और धर्म के अवाध रूप से मानने का अधिकार है तथा अनुच्छेद 26 में सभी धर्मों को अपने धार्मिक मामलों को प्रबंधित करने का अधिकार प्रदान है ऐसे में यदि भारत सरकार द्वारा समान नागरिक संहिता को लागू किया जाता है तो जाहिर तौर पर इन अनुच्छेदों का उल्लंघन माना जाएगा ऐसे में यदि भारत सरकार समान नागरिक संहिता को लागू करना चाहती है तो सरकार को भारत के संविधान में कुछ बदलाव करने होंगे कुछ संशोधन करने होंगे जो सरकार के लिए एक बड़ी चुनौती बन सकती है।इस प्रकार इस संबंध में यह भी एक चुनौती है कि देश की विविधता के लिए खतरा न हो जाए हम जानते हैं कि भारत में अलग-अलग धर्म विचार संप्रदाय के लोग रहते हैं जिनकी अपनी-अपनी धार्मिक मान्यताएं हैं और अलग-अलग सिद्धांत है ऐसे में इन सभी लोगों को एक ही नजरिए से देखना जाहिर तौर पर भारत की विविधता को खतरा उत्पन्न करेगा।

इसलिए इस को ध्यान में रखकर विधि आयोग में समान नागरिक संहिता की आवश्यकता को 2018 में नकार दिया क्योंकि विधि आयोग का मानना था कि इस अवधारणा को जमीनी स्तर पर लागू करना बहुत कठिनाई का कार्य है जाहिर तौर पर देश के विविधता पर खतरा हो सकता है इसके बाद इस संबंध मेंयह भी अवधारणा है कि अल्पसंख्यकों के बीच अपनी पहचानको खो देने का डर रहेगा।अल्पसंख्यक लोगों को लगेगा कि यह कानून उस पर जबरन लागू किया गया है और अल्पसंख्यकों को विश्वास में लेना भी एक बड़ी चुनौती पूर्ण कार्य होगा।

*सरकार क्या मानती है:- इस संबंध में सरकार के दो पक्ष रहे हैं सबसे पहला पक्ष 1990 से 2014 तक के यह पक्ष मुख्य तौर पर इस विषय में हस्तक्षेप नहीं करने को कहता है सरकार का मानना है कि अल्पसंख्यक समुदाय के कानून तब तक हस्तक्षेप नहीं करेंगे जब तक इस तरह के बदलाव की शुरुआत उस समुदाय के बीच से ना हो इसके बाद दूसरा पक्ष 2014 से लेकर 2019 के बीच इसमें सरकार की नीतियों में कुछ बदलाव देखने को मिलते हैं और सरकार हित धारकों से परामर्श पर अधिक जोर देती है इस पूरी नीति के तहत सरकार ने समान नागरिक संहिता की अवधारणा तहत सरकार ने समान नागरिक संहिता की अवधारणा और आवश्यकता को स्वीकार किया और उसे लगा कि अब समय आ गया है कि इस कानून को लागू किया जाए और इसी नीति के तहत साल 2019 में विधि आयोग ने समान नागरिक संहिता से संबंधित विभिन्न मुद्दों की जांच करने के लिए विधि आयोग से आग्रह किया।

गरीबों की बस्ती

विजय महतो, सहायक/कै व वै /मेट्टुपालयम

ये गरीबों की बस्ती है, मत गुजरो साहब
लगेगी फिर ठोकर, तो मत कहना साहब।
इन हवाओं में महलो सी खशुबू नहीं है
शहरों की जैसी यहाँ सड़के नहीं है।
यहाँ दिन है ढलती पसीनों में साहब
और रातें कटती अंधेरो में साहब।
यहाँ न मिलेगी वह मखमल सी बिस्तर
कटेगी सर्द राते यूँ करवटे बदलकर।

यहाँ न आयेगी वह सपने सुहाने
यहाँ न मिलेगी वह मोटर और वाहने।
दिखेगी तुम्हें यहाँ घुटनो तक पानी
कैसी है कटती मजदूरों की जवानी।
यहाँ तुम जो ठहरे तो तड़पोगे साहब
मेघो की गर्जन सी गड़जोगे साहब।
सह न सकोगे यह मुश्किल तुम साहब
ये गरीबो की बस्ती है, मत गुजरो साहब
लगेगी फिर ठोकर तो, मत कहना साहब।
दर्द कितना भी हो ,मुस्कुराए जा रहा हूँ।
दिल में उठीं चिंगारी को ,अश्कों से बुझाए जा रहा हूँ।
मुश्किलो से मिलती है, सच्चाई यहाँ
सच्चे दुश्मनों से ही रिश्ता निभाए जा रहा हूँ।
चारों ओर झूठ की सफेद चादरें बिछीं हैं,मन की ब्लैक बोर्ड मे लिखी सफेदी को मिटाए जा रहा हूँ।
देख ली मैंने भी जीवन की चलन
आसुओं का सागर बहाए जा रहा हूँ।
ना मानता ये दिल इश्क करने से
हसिनाओं से दिल को बचाए जा रहा हूँ।
उठीं थी हसरतें पक्षी बन उड़ जाऊ ईन फिजाओं मे
कटी पंतगो की तरह हवाओं मे खुद को बहाएँ जा रहा हूँ।
काटों के बीच ही उगते है गुलाब
अब काटों की राह को ही सफर बनाए जा रहा हूँ।
आसानी से नहीं मिलती मंजिलें ख्वाबों की
सूरज की भांति खुद को जलाए जा रहा हूँ।
दर्द कितना भी हो, बस मुसकुराए जा रहा हूँ|

हस्त लिखित संविधान

सपना सोनी, स्टेशन मास्टर/बुड्डिरेड्डिपट्टि

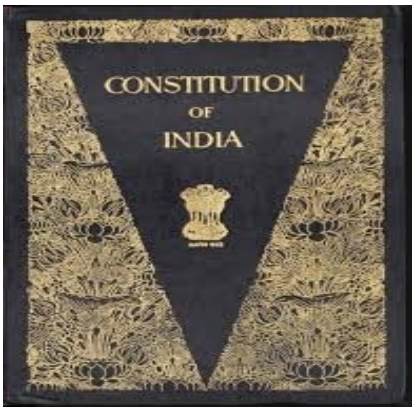

भारत का संविधान दुनिया का सबसे बड़ा लिखित संविधान है ।इसे 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा स्वीकृत किया गया था ।इसलिए इस दिन को देश भर में संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है।इसी आधार पर भारत को दुनिया का सबसे बड़ा गणतंत्र कहा जाता है। भारतीय संविधान में 448 अनुच्छेद 12 अनुसूचियां शामिल है। यह 2 साल 11 महीने 18 दिन में बनकर तैयार हुआ था। जनवरी 1948 को संविधान का पहला प्रारूप चर्चा के लिए प्रस्तुत किया गया। 4 नवंबर 1948 से शुरू हुई यह चर्चा तकरीबन 32 दिनों तक चली थी । इस अवधि के दौरान 7635 संशोधन प्रस्तावित किए गए जिनमें से 2473 पर विस्तार से चर्चा हुई ।

लेकिन कितने भारतीय जानते हैं कि भारत का संविधान हाथ से लिखा गया है पूरे संविधान को लिखने के लिए किसी भी उपकरण का इस्तेमाल नहीं किया गया था। दिल्ली के रहने वाले प्रेम बिहारी रायजादा ने अपने हाथों से इटैलिक शैली में इस विशाल ग्रंथ, संपूर्ण संविधान को लिखा।

प्रेम बिहारी उस समय के प्रसिद्ध सुलेख लेखक थे ।उनका जन्म 16 दिसंबर1901 को दिल्ली के एक प्रसिद्ध हस्त लेखन शोधकर्ता के परिवार में हुआ था। उन्होंने कम उम्र में ही अपने माता पिता को खो दिया था। वह अपने दादा राम प्रसाद सक्सेना और चाचा चतुर बिहारी नारायण सक्सेना के लिए एक विशेष आदमी बन गए ।उनके दादा रामप्रसाद एक सुलेख लेखक थे।वह फारसी और अंग्रेजी के विद्वान थे ।उन्होंने अंग्रेजी सरकार के उच्च पदस्थ अधिकारियों को फारसी पढ़ाया था। दादा रामप्रसाद कम उम्र से ही सुंदर लिखावट के लिए प्रेम बिहारी को सुलेख कला सिखाते थे। सेंट स्टीफन कॉलेज दिल्ली से स्नातक होने के बाद, प्रेम बिहारी ने अपने दादा से सीखी गई सुलेख कला का अभ्यास शुरू किया।धीरे-धीरे सुंदर लिखावट के लिए उनका नाम दूर-दूर तक फैलने लगा। जब संविधान छपाई के लिए तैयार हुआ, तब भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने प्रेम बिहारी को बुलाया।नेहरू जी संविधान को हस्तलिखित सुलेख में प्रिंट के बजाय इटैलिक अक्षरों में लिखना चाहते थे।

इसलिए उन्होंने प्रेम बिहारी को बुलाया प्रेम बिहारी के उनसे संपर्क करने के बाद,नेहरू जी ने उन्हें इटैलिक शैली में संविधान को हस्तलिखित करने के लिए कहा और उनसे पूछा इसके लिए वह क्या शुल्क लेंगे? प्रेम बिहारी जी ने नेहरू जी से कहा,"एक पैसा भी नहीं"। भगवान की कृपा से मेरे पास सब कुछ है और मैं अपने जीवन से काफी खुश हूं। इतना कहने के बाद उन्होंने नेहरू जी से निवेदन किया कि "मेरा एक अनुरोध है- कि संविधान के प्रत्येक पृष्ठ पर मैं अपना नाम लिखूंगा और अंतिम पृष्ठ पर अपने दादा के नाम के साथ अपना नाम लिखूंगा।" नेहरू जी ने उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया ।

प्रेम बिहारी जी को यह संविधान लिखने के लिए घर लिया गया था। प्रेम बिहारी जी ने वहीं बैठ कर पूरे संविधान की पांडुलिपि लिखी।

प्रेम बिहारी जी लेखन शुरू करने से पहले 29 नवंबर 1950 को नेहरू जी के कहने पर भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री राजेंद्र प्रसाद के साथ शांतिनिकेतन आए थे। उन्होंने प्रसिद्ध चित्रकार नंदलाल बसु के साथ चर्चा की और तय किया कि प्रेम बिहारी जी कैसे और किस हिस्से से लिखेंगे। आचार्य नंदलाल जी ने पन्ने के बाकी खाली हिस्से को अपनी चित्रकारी से सजाया है।

नंद लाल जी बसु और शांति निकेतन के उनके कुछ छात्रों ने इन अंतरालो को त्रुटिहीन कल्पना से भर दिया मोहनजोदड़ो की मुहरें, रामायण, महाभारत, गौतम बुद्ध का जीवन, सम्राट अशोक द्वारा बौद्ध धर्म का प्रचार,विक्रमादित्य की बैठक,सम्राट अकबर और मुगल साम्राज्य।इसके प्रस्तावना पेज को सजाने का काम राम मनोहर सिन्हा ने किया है।वह नंदलाल बोस के ही शिष्य थे।

संविधान की मूल प्रति हिंदी और अंग्रेजी दोनों में हस्तलिखित है इसमें टाइपिंग या प्रिंट का इस्तेमाल नहीं किया गया है और दोनों ही भाषाओं में संविधान की मूल प्रति को प्रेम बिहारी रायजादा ने लिखा है। रायजादा का खानदानी पेशा कैलीग्राफी का था। प्रेम बिहारी जी को भारतीय संविधान लिखने के लिए 432 पेन होल्डर की जरूरत थी और उन्होंने नंबर 303 का इस्तेमाल किया। निब इंग्लैंड और चेकोस्लोवाकिया से लाए गए थे।उन्होंने भारत के संविधान हाल के एक कमरे में 6 महीने तक पूरे संविधान की पांडुलिपि लिखी। संविधान लिखने के लिए 251 पन्नों के चर्मपत्र कागज का इस्तेमाल करना पड़ा। संविधान का वजन 3 किलो 650 ग्राम है। संविधान 22 इंच लंबा और 16 इंच चौड़ा है। संविधान की मूल प्रति भारतीय संसद की लाइब्रेरी में ही हीलियम से भरे केस में रखी गई है । प्रेम बिहारी नारायण रायजादा का निधन 17 फरवरी 1986 को हुआ था।

हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी , पंथनिरपेक्ष,लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिए तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करनेवाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर 1949 ई0 (मिति मार्ग शीर्ष शुक्ल सप्तमी, सम्वत् दो हजार छह विक्रमी) को एतदद्वारा

इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

जिंदगी की चाय

शिरंजीवी राव, मुख्य कार्यालय अधीक्षक, राजभाषा अनुभाग

फिजा में घुल रही है, महक अदरक की,

आज सर्दी भी चाय की तलबगार हो गई,

अंदाज तो देखिए बदमाश चायपत्ती की,

जरा दूध से क्या मिली शर्म से लाल हो गई।

थोडा पानी रंज का उबालिए खूब सारा,

दूध खुशियों का, थोडी पत्ती ख्यालों की,

थोडा गम को कूटकर बारिक सा,

हंसी की चीनी मिला दीजिए,

उबलने दीजिए ख्वाबों को कुछ देर तक

यह जिंदगी की चाय है जनाब,

इसे तसल्ली के कप में छानकर

घूंट- घूंट का मजा लीजिए।

'एक रिश्ता'

बलिराम प्रसाद, स्टेशन मास्टर/लोकूर

"आज मेरे पास बिल्डिंग है, प्रॉपटी है, बैंक बैलेंस है, बंगला है, गाड़ी है, क्या है, क्या है तुम्हारे पास?" अमिताभ बच्चन की लगभग चीखती हुई आवाज के सामने शशि कपूर एकदम धीमी आवाज में कहते हैं, मेरे पास माँ है, उनके इस छोटे से संवाद के सामने अमिताभ का सारा दंभ मानो चकनाचूर हो जाता है। ये संवाद 1975 में बनी हिन्दी भाषी फिल्म 'दीवार' की है। जिसके द्वारा यह बताया गया है कि दुनिया में सबसे कीमती चीज अगर कोई है तो वह माँ है। फिल्मों में दिखाए गए रील लाइफ और हमारी जिन्दगी की रीयल लाइफ में काफी अन्दर होता है। लेकिन माँ की ममता पर आधारित फिल्में रीयल लाइफ से प्रेरित होती है। (कुछ अपवादों को छोड़कर) जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास होता गया वैसे – वैसे हमारी जीवन प्रणाली भी बदलती गई। खानाबदोश की जिन्दगी छोड़कर हम लोग स्थाई निवास बनाकर रहने लगे। परिपार और समाज का निर्माण हुआ। ताकि हम लोग सुरक्षित और संगठित होकर सुख शांति से अपना जीवन व्यतीत कर सके। लेकिन समय के साथ – साथ हमारे परिवार और समाज भी विकृत होते गए। मौजूदा दौर में जितने भी अपराध हो रहे है, ज्यादातर परिवार में ही हो रहे है। रिश्ते नाते नाममात्र के रह गए हैं। कब दूट जायेंगे कोई नहीं जानता। पति पत्नी का रिश्ता जो दुनिया का सबसे पवित्र रिश्ता है। जिससे सात जन्म तक साथ निभाने का वादा होता है। आज इस रिश्ते की उम्र कांच के समान हो गया है। कब इसमें दरार पड़ जाये, कब टूटकर बिखर जाए स्वयं पति – पत्नी भी नहीं जानते। रिश्ते नाते तभी तक कायम रहते है जब तक निजी स्वार्थ की पूर्ति होती रहती है। स्वार्थ की पूर्ति खत्म, रिश्ता खत्म।लेकिन एक रिश्ता आज भी वैसे ही है जो हजारों वर्ष पूर्व था वह है, माँ का रिश्ता अगर कोई मुझसे माँ की परिभाषा पूछे तो मैं यही कहूँगा माँ कोई व्यक्ति या शब्द नहीं बल्कि एक अहसास है, जिसका वर्णन करना बहुत मुश्किल है, माँ शब्द की कोई परिभाषा नहीं है यह शब्द अपने आप में पूर्ण है। माँ घर का गूगल होती है। जिसे हर चीज पता है। चाहे सामान हो या हमारी भावनाएं। माँ पृथ्वी पर ईश्वर का वह रूप है जो बिना सौदा किए बिना सोचे समझे कुर्बानी देने के लिए हमेशा तैयार रहती है। इसी से संबंधित एक कहानी सुनाने जा रहा हूँ। जो बड़ा ही मार्मिक और हृदयस्पर्शी है।

किसी गाँव में एक विधवा माँ अपने बेटे के साथ रहती थी। माँ दर्जी थी। कपड़े सीने का काम करती थी। वह अपने बेटे से बहुत प्यार करती थी। वह हमेशा सोचती रहती थी कि जब मेरा बेटा बड़ा हो जाएगा तो मैं उसकी शादी बड़ी धूम धाम से बहुत ही सुन्दर लड़की के साथ करूँगी। भले ही मेरे बेटे का बाप नहीं है। फिर भी शादी में कोई कमी नहीं होगी। दिल खोलकर खर्चा करूँगी। इसके लिए वह दिन रात सिलाई का काम करती थी। अपने इस सपने को साकार करने के लिए अपनी सारी इच्छाओं की श्रद्धांजलि दे-कर एक – एक पैसा इकट्ठा कर रही थी। वह अपनी बेटे की कोई भी इच्छा पूरी कर देती थी। उस माँ के लिए उसका बेटा ही उसका दुनिया था। वह इसी आस में बैठी थी कि जब उसका बेटा बड़ा हो जाएगा, तो उसे दर्जी का काम नहीं करना पडेगा और उसके सारे दुख तकलीफ दूर हो जाएंगे। धीरे-धीरे उसका लड़का बड़ा होने लगा पर उसकी माँ पहले की तरह ही अपने बेटे को खाना खिलाती माथा पुचकारती और ढेर सारी दुआएँ देती रहती थी।

लेकिन वह बच्चा अपनी माँ की भावनाओं से अंजान था।

उस विधवा औरत का लड़का एक लड़की के प्यार में इस कदर गिर गया कि उसे और कुछ नहीं सूझ रहा था सिवाय उससे प्यार के। उस लड़के ने लड़की से कहा कि मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ। तुम मुझसे शादी कर लो बदले में तुम्हें जो चाहिए माँगो। मैं तुम्हें वह चीज दूंगा। मैं तुम्हारे बिना जी नहीं सकता हूँ। उस लड़की ने लड़के की परीक्षा लेने को सोची। उसने उस लड़की से कहा कि तुम मुझे अपनी माँ का दिल लाकर दो। अगर तुम ऐसा करते हो तो मैं खुशी – खुशी तुमसे शादी रचाऊँगी। प्यार में अंधा होकर वह चाकू लेकर अपने घर पहुँचा। विधवा औरत का लड़का उस लड़की के प्यार में इस कदर पागल हो गया था कि उसे पाने के लिए अपनी माँ कि हत्या करके दिल निकालने वाला था। उस बेसहारा विधवा माँ को कुछ भी नहीं पता था कि आज उसके साथ क्या होने वाला है। माँ ने रोज की तरह उसे खाना दिया और साथ ही साथ उसे देखते हुए खुशी से सौ-सौ दुआएँ भी देने लगी। लड़का ने खाना फेंक दिया और चाकू से अपनी माँ के सीने पर वार कर दिया और अपनी माँ का दिल निकाल लिया वह बेहया बेरहम ऐसा कर्म करके खुशी से इतरा रहा था, यह सोचते हुए कि अपनी प्रेमिका से जो वादा किया है। वह अब पूरा होने वाला है। वह खून से लथपथ अपनी माँ का दिल लेकर जा रहा था। तभी रास्ते में उसे ढोकर लगी। वह धरती पर मुंह के बल गिर गया। माँ के दिल से रुआँसे स्वर में आवाज आई संभल कर चल बेटा। सच बता बेटा, तुझे कहीं चोट तो नहीं लगी। मुझे उठा और अपनी ख्वाहिश पूरी कर। तेरी खुशी में ही मेरी खुशी है। वह अपनी माँ का दिल उठाया और अपनी प्रेमिका के पास जाकर बोला कि जानु मैं तेरे इम्तिहान में पास हो गया। देख, मैं अपनी माँ का दिल लाया हूँ। मैं तेरा सच्चा प्रेमी हूँ, आज मैंने ये साबित कर दिया है। लड़के की इस वहशीपना कृत्य को देखकर उसकी प्रेमिका चीख पड़ी। वह बहुत क्रोधित होते हुए बोली तूने मेरे लिए अपनी माँ को मार दिया। जिसने तुझे जन्म दिया, जो दिन-रात मेहनत करके तुम्हारी सारी जरूरतों की पूर्ति करती रही, तू ने उसी माँ को मार दिया। आज तू ने माँ और बेटे जैसे पवित्र रिश्ते को कलंकित कर दिया। जो अपनी सगी माँ का नहीं हुआ, वह मेरा क्या होगा। तुम भरोसा करने लायक नहीं हो। क्या पता कल तुम मेरी भी हत्या कर दोगे। तू अभी यहाँ से जल्दी निकल जा तुम मेरे प्यार के काबिल नहीं हो। उसकी फटकार से, लानतों की मार से वह कलंकी सिर पीट-पीट कर रोने लगा। वह अपने किए गए कर्म पर शर्मसार हो रहा था। वह अपनी माँ का दिल हाथों में लेकर पागलों की तरह रोने लगा। उस विधवा माँ का दिल ने जब अपने बेटे को इस हालत में देखा तो उससे बर्दाश्त नहीं हुआ। धीरे धीरे उसकी धड़कना कम होती गई। अन्त में वह निष्प्राण हो गया। वह लड़का मानसिक रूप से विक्षिप्त हो चुका था। वह जहाँ भी जाता, लोग उसे धिक्कारते हुए पत्थर से मारने लगते थे। अन्त में पागल हो कर वह भी मर गया।

इस कहानी के माध्यम से हमें यह पता चलता है कि माँ के दिल से बड़ा दुनिया में कोई दिल नहीं है। माँ-बेटे का रिश्ता एक पवित्र रिश्ता होता है। माँ और बाप में देखा जाए तो बच्चा जन्म से ही अपनी माँ के पास ज्यादा रहता है। बाप से अधिक माँ के अन्दर अपने बच्चों को लेकर ममता होती है। ममता की यह चरमता केवल माताओं में ही नहीं, वरन सभी मादा जीवों में देखने को मिलती हैं। अपने बच्चों को भोजन न मिलने पर हवासिल (पेलिकन) नाम की जल पक्षी अपना पेट चीर कर अपने बच्चों को अपना रक्त मांस खिला देती है। माँ का रिश्ता रूह से जुड़ा रहता है।

यही कारण है कि जब हम किसी मुसीबत में रहते है या कहीं गिर पड़ते हैं तो हमारे मुख से अनायास ही निकल पड़ते हैं हे माँ, है अम्मा, मम्मी ....., ऊई अम्मा इत्यादि। माँ बूढ़ी हो कर भी माँ बनी रहती है। लेकिन हम बड़े हो कर बदल जाते है जीवन भर हम पर प्यार लुटाने वाली माँ बूढ़ी होने पर भी हमारे प्यार और सम्मान की अधिकारी है।

माँ को सम्मान देने के लिए प्रत्येक वर्ष मई महीने के दूसरे रविवार को मातृ-दिवस के रूप में मनाया जाता है। ताकि समाज में माँ के प्रति जागरूकता पैदा हो। उम्र के अंतिम पड़ाव में माँ वृद्धाश्रम की बजाय हमारे अपने घर में रहे। माँ एक ऐसा रिश्ता है, जिस के बारे में जितना लिखा जाए कम है।

किसी ने ठीक ही कहा है माँ के बारे में -

माँ के लिए मैं क्या लिखूं
माँ ने तो खुद मुझे लिखा है.....
माँ से छोटा कोई शब्द हो तो बताओ
माँ से बड़ा भी कोई हो तो बताओ .....
लोग कहते हैं कि आज माँ का दिन है
वह कौन सा दिन है जो माँ के बिना है.....
मौत के लिए तो बहुत रास्ते हैं
पर जन्म लेने के लिए केवल माँ ही है ....
दवा न असर करें तो नजर उतारती है
एक माँ ही है जो कभी नहीं हार मानती है.....
शायद गिनती नहीं आती मेरी माँ को यारों
तभी तो मैं एक रोटी माँगता हूँ तो,
जो दो लेकर आती है .....
एक अच्छी माँ हर किसी के पास होती है
पर एक अच्छी औलाद हर माँ के पास नहीं होती ...
जन्नत का हर लम्हा मैंने दीदार किया था
गोद में उठा कर जब माँ ने मुझे प्यार किया था.....
मारो माँ को देख मुस्करा लिया करो
क्या पता किस्मत में हज तीरथ लिखा ही न हो.....

भारत में विभिन्न व्यंजन और युवाओं में रेस्टोरेंट में खाना खाने की प्रवृत्ति

इमरान खान, कॉन्स्टेबल /रेलवे सुरक्षा बल /सेलम

यह तो अवश्य सभी ने सुना होगा," घर की मुर्गी दाल बराबर"। घर का खाना चाहे जितना अच्छा बना हो परंतु वह क्योंकि रोज सब खाते हैं और आसानी से उपलब्ध होता है इसलिए, व्यक्ति उससे बहुत जल्दी ऊब जाता है। ऐसे में उसको बाहर का खाना खाने की इच्छा जागृत होती है। घर से सपरिवार तैयार होकर जाने और खाना खाने में एक आउटिंग भी हो जाती है।खाना बनाने से छुट्टी मिलती है। रोज से कुछ अलग लोग खाते हैं तथा थोड़ी बहुत शॉपिंग भी अक्सर कर ली जाती है। इससे वे खुश हो जाते हैं और उनका मूड बदल जाता है। रेस्टोरेंट में सुंदर बर्तनों में सजाया हुआ खाना देखकर उनकी भूख जग जाती है और साधारण स्वाद भी अपने घर के खाने से बेहतर लगने लगता है। इसके अतिरिक्त आज के इस दिखावे के युग में जहां हर छोटी से छोटी बात को सोशल मीडिया पर डाल देने का प्रचलन हो गया है, कोई भी पीछे रहना नहीं चाहता। कुछ लोग इसीलिए बाहर खाना खाने जाते हैं जिससे अच्छी फोटो खींचकर फेसबुक पर डाल सकें। आज के इस भाग -दौड़ भरे समय में व्यक्ति अकेला भी बहुत हो गया है । पहले लोग रिश्तेदारों के यहां जाते थे और भोजन भी रिश्तेदार बहुत आग्रह से खिलाते थे। अब यह लगभग समाप्त है। इसलिए भी डेली रूटीन से ऊबने के बाद कुछ अलग हो इसके लिए बाहर जाकर खाना सब को बहुत अच्छा लगता है । आज के एकल परिवार में घर की महिला के पास भी इतना समय नहीं रहता कि वह आए दिन रचकर बहुत सारे व्यंजन बना सके। अब तो बर्थडे और एनिवर्सरी में भी लोगों को अच्छा लगता है कि बाहर जाकर घूमें और खाना खाकर ही लौटे। अच्छा खाना सभी की चाहत होती है।

घर के खाने और होटल के खाने में अंतर —

घर के खाने और होटल के खाने में बहुत बड़े अंतर हैं। घर के खाने बनाने में आत्मीयता होती है, उसे पूरी शुद्धता और सफाई के साथ बनाया जाता है, उसमें पौष्टिक तत्व होते हैं जबकि होटल का खाना केवल व्यवसायिक दृष्टि से बनाया जाता है, उसको बनाने में आत्मीयता का अभाव होता है और ना ही उसमें पौष्टिकता को महत्व दिया जाता है। होटल का खाना केवल जीभ को सूचना देने के लिए बनाया जाता है। होटल वाले अपना खाने में इस तरह के तत्व डालते हैं, जिनसे होटल के खाने का स्वाद तो बढ़ता है, लेकिन हो सकता है वह कोई केमिकल आदि हो जिससे शरीर को नुकसान पहुंचता हो। लेकिन होटल वालों को केवल अपने खाने के स्वाद के आधार पर अपना व्यापार बढ़ाना होता है इसके लिए वह ऐसे केमिकल टाइप तत्वों का प्रयोग करते हैं। घर के खाने में ऐसी कोई बात नहीं होती। घर का खाना बिना केमिकल के पूर्ण शुद्धता के साथ बनाया जाता है और उसे बनाने में जो अपनापन लगता होता है, उससे खाने का स्वाद बढ़ जाता है। इस कारण घर का साधारण विधि से सामान्य सामग्री के साथ बनाया खाना भी बेहद स्वादिष्ट लगता है जबकि होटल का खाना तमाम तरह की महंगी-महंगी सामग्रियों से युक्त करके भी घर के खाने जैसा मजा नहीं दे पाता।घर का खाना स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा ही होता है उससे खाने से पेट जल्दी खराब नहीं होता जबकि होटल का खाना स्वास्थ्य की दृष्टि से बेहद नुकसानदायक हो सकता है। नियमित रूप से होटल का खाना खाने से बीमार पड़ना निश्चित है, जबकि घर का खाना जीवन भर भी खाएंगे तो भी बीमार पड़ना जरूरी नहीं।घर का खाना स्वास्थ्य, पैसे और स्वाद तीनों दृष्टि से उत्तम होता है, जबकि होटल का खाना पैसे की दृष्टि से भी महंगा होता है। स्वाद भी उसमें उतना नहीं होता और अगर स्वाद होता भी है तो वो स्वाद उस व्यक्ति के स्वास्थ्य की कीमत पर होता है।इसलिये हम कहें कि घर का खाना होटल के खाने से हर दृष्टि से उत्तम होता है, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

बहुजातीय संस्कृति : भारत में बहुजातीय संस्कृति होने के कारण यहां के भोजन की एक विशाल और वृहद श्रृंखला है। भारत के स्वादिष्ट और आकर्षक व्यंजनों की खासियत इसमें होने वाला मसालों और जड़ी बूटियों का सूक्ष्म इस्तेमाल है। भारत मे भोजन एक क्षेत्र से लेकर दूसरे क्षेत्र तक व्यापक रुप से भिन्न है। विभिन्न क्षेत्रों ने अलग अलग भोजन को अपनाया है। पूरी दुनिया में सबसे विविध व्यंजन परोसने का गौरव भारत को प्राप्त है।हर क्षेत्र की अपनी अलग विशेषताएं और खाना पकाने का अपना अलग तरीका है। परिदृश्य के हिसाब से खाना पकाने, स्वाद और उनकी विशेषताएं बदलती हैं। ज्यादातर भारतीय भोजन शाकाहारी होता है लेकिन भारतीयों को मछली, भेड़, बकरी, चिकन और अन्य मांस से बने मांसाहारी व्यंजन भी बहुत पसंद आते हैं। भोजन हमेशा से भारतीय संस्कृति का अहम हिस्सा रहा है।

पूर्वी भारतीय भोजन: भारत के पूर्वी हिस्से में बिहार, पश्चिम बंगाल और उड़ीसा जैसे राज्य आते हैं। चावल भारत के पूर्वी हिस्से का मुख्य भोजन है। अनुकूल जलवायु के कारण पूर्वी भारत में चावल बहुत उगता है। उत्तरी भारत में गेंहू प्रमुख है, लेकिन इसके बिलकुल विपरीत चावल पूर्वी भारत का अभिन्न अंग है। इसके अलावा इस क्षेत्र के तालाबों और नदियों में मछली भी बड़ी मात्रा में मिलती है। पूर्वी भारत के लोगों का एक पसंदीदा आइटम मछली भी है।मछली से विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं। हिल्सा पूर्वी भारत की सबसे लोकप्रिय मछली है। ज्यादातर मानसून में मिलने वाली यह मछली अपने कभी ना भूल पाने वाले स्वाद के लिए मशहूर है। हिल्सा से कई व्यंजन बनाए जाते हैं और इसके अलावा मछली की अन्य लोकप्रिय किस्मों में रोहू, वेटकी आदि हैं जो आपको मजेदार स्वाद देते हैं। भारत के इस भाग में सब्जियां भी बहुत उगाई जाती हैं। सब्जियां भी पूर्वी भारत के खाने का महत्वपूर्ण भाग है। यहां इस्तेमाल होने वाले मसाले भारत के अन्य हिस्सों में इस्तेमाल होने वाले मसालों से बहुत अलग होते हैं। मिठाई भी पूर्वी भारतीय भोजन की मुख्य विशेषता है। पूर्वी क्षेत्र के लोग मिठाई के शौकीन होते हैं। ज्यादातर पूर्वी भारतीय भोजन में मिठास होती है। पश्चिम बंगाल में रसगुल्ला एक ऐसी शानदार मिठाई है जो पूरी दुनिया में मशहूर है। यदि आप पूर्वी भारत में जाएं तो आपको मिष्टी दोई भी ज़रुर चखना चाहिए।

पश्चिम भारतीय भोजन: भौगोलिक विविधता के कारण भारत के पश्चिमी भाग में व्यंजनों में बहुत विविधता है। शुष्क रेगिस्तान से लेकर गीले तटीय इलाके जैसी विविध लैंडस्केप के कारण यहां के भोजन में इतनी विविधता है। इसके साथ ही पश्चिमी भारत में कई जातियां और कई परंपराएं हैं। इसलिए भी इनके व्यंजनों में इतनी विविधता है।चावल पश्चिमी भारत का भी मुख्य भोजन है। गुजरात और राजस्थान जैसे इलाकों में गेंहू, बाजरा और ज्वार भी खाया जाता है।गुजरात के इलाके में और मुंबई में खानपान पर आपको पारसी प्रभाव स्पष्ट नज़र आता है। शाकाहारी व्यंजन, जैसे पाव भाजी, भेलपुरी और ढोकला खाने के शौकीनों के पसंदीदा हैं। गुजरात में जैनियों की आबादी ज्यादा होने के कारण ये राज्य शाकाहारी खाने में अव्वल है और इनके खाने में मसालों का सूक्ष्म इस्तेमाल और रिच टेक्सचर होता है। महाराष्ट्र और गोवा के तटीय इलाकों में समुद्री मछली बहुतायत में उपलब्ध है। स्वादिष्ट मसालों में तैयार की गई समुद्री मछली आपकी स्वाद ग्रंथियों में जादू जगा देगी। पुर्तगाली प्रभाव होने के कारण गोवा के व्यंजन और आकर्षक सी-फूड, जैसे कंेकड़ा और झींगा भोजन प्रेमियों का दिल जीत लेते हैं।राजस्थान का भोजन मसालों से समृद्ध रहता है। अगर आप मसालेदार खाना खाने का दम रखते हैं तो आप राजस्थानी खाना खाने का आनंद उठा सकते हैं।

उत्तर भारतीय भोजन: उत्तर भारतीय भोजन मुख्य रुप से खाना पकाने की मुगल शैली से प्रभावित है। भारत में अपने लगभग 500 साल के राज में मुगलों ने भारतीय भोजन में बहुत योगदान दिया है। मुगल मूल रुप से मध्य एशिया के थे, इसलिए यहां के भोजन को पकाने की शैली में मध्य एशियाई प्रभाव दिखता है।बड़े पैमाने पर मक्खन आधारित करी और सूखे मेवों का प्रचुर मात्रा में इस्तेमाल उत्तर भारतीय भोजन की खासियतें हैं।

उत्तर भारत में बहुत ज्यादा उगने वाला गेंहू भी उत्तर भारतीय भोजन का मुख्य भाग है। दक्षिण भारत, जहां का मुख्य भोजन चावल है, इससे बिलकुल अलग गेंहू से बनने वाली रोटी, चपाती, पराठा और तंदूरी उत्तर भारत का मुख्य भोजन है। तेल, घी, मक्खन की ज्यादा मात्रा के साथ समृद्ध मसालों का इस्तेमाल उत्तर भारतीय भोजन को बहुत अच्छा स्वाद देता है।उत्तर भारतीय भोजन में मांस का भी खास स्थान है। कबाब और बिरयानी की विभिन्न किस्में मुगल विरासत की निशानी हैं।समोसा संभवतः उत्तरी भारत का सबसे पसंदीदा नाश्ता है। दही से बनने वाली लस्सी भी एक स्वाद भरा पेय है। गुलाब जामुन और मोतीचूर लड्ड्डू इस इलाके की पसंदीदा मिठाई हैं।उत्तर भारत के कुछ रोचक व्यंजनों में रेशमी कबाब, सींक कबाब, शामी कबाब, कश्मीरी पुलाव, तंदूरी चिकन और मटन हैं।

दक्षिण भारतीय भोजन: दक्षिण भारतीय भोजन भारत के अन्य हिस्सों में भी बहुत लोकप्रिय है। यदि भारत के किसी अन्य हिस्से में आप किसी से पूछें कि बदलाव के लिए आप कौन सा भारतीय भोजन खाना चाहेंगे तो सामान्य जवाब होगा दक्षिण भारतीय भोजन। चार अलग अलग राज्य - आंध्र, तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल मिलकर दक्षिण भारत बनता है। दक्षिण भारतीय भोजन में चार अलग अलग स्कूल हैं।दक्षिण भारतीय भोजन शाकाहारियों का पसंदीदा है। दक्षिण भारतीय भोजन की एक खासियत नारियल तेल है। नारियल का तेल दक्षिण भारतीय भोजन में एक खास स्वाद लेकर आता है। कई व्यंजनों में भी नारियल का बहुत इस्तेमाल होता है। चावल यहां का भी मुख्य भोजन है। दाल और चावल पीसकर बनाया गया इडली, डोसा, वड़ा और उत्तपम सबसे लोकप्रिय दक्षिण भारतीय व्यंजन हैं, खासकर तमिलनाडु में। यदि आप तमिलनाडु में हैं तो मसालेदार, तेलभरी और खुशबूदार चेट्टीनाद भोजन का भी मजा लें। दक्षिण भारत के कुछ भागों, जैसे आंध्र प्रदेश में चावल और मांस मिलाकर बनने वाली बिरयानी एक शानदार व्यंजन है। इस व्यंजन में मुगल मेल की समृद्ध विरासत है।केरल जैसे मालाबार तट में केंकड़ा और झींगा जैसे सी-फूड के शानदार व्यंजन बनाए जाते हैं। मसालों की तेज़ खूशबू भी मालाबार तट के भोजन का एक और आकर्षण है।

बाहर खाने के नुकसान :

अक्सर लोगों में बाहर का खाना खाने का शौक देखने को मिलता है, लोग अपने दोस्तों और परिवार के साथ बाहर के खाने का लुत्फ उठाते हैं। वहीं कुछ लोगों की बाहर खाने की मजबूरी होती है। अपने घर से दूर अकेले रह रहे स्टूडेंट और पेशेवर लोग मजबूरी में बाहर का खाना खाते हैं। रोज-रोज बाहर का खाना आपकी सेहत के लिए ठीक नहीं है। यह आपको कई तरह से नुकसान पहुंचा सकते हैं। अगर आज आप अपने दोस्तों के साथ बाहर खाना खाने का प्लान बना रहे हैं, तो बेहतर है कि आप अपनी योजनाओं को रद्द कर दें। यह आपके अपने स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है। दरअसल, आप इस तथ्य से अवगत नहीं हो सकते हैं, लेकिन नियमित रूप से बाहर खाना वास्तव में आपके स्वास्थ्य को खराब कर सकता है। यह शरीर में phthalates नामक रसायन के उत्पादन को बढ़ाता है और आपके स्वास्थ्य को सबसे खराब तरीके से नुकसान पहुंचाता है। यह प्राकृतिक हार्मोनल संतुलन को भी बिगाड़ता है और आपके संपूर्ण स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। इसके अलावा, कई और कारक हैं जो बताते हैं कि किसी को अक्सर या नियमित रूप से बाहर नहीं खाना चाहिए। आइए जानते हैं कि अक्सर बाहर का खाना खाने से स्वस्थ विकल्प क्यों नहीं है।

कम हाइजीनिक:

अगर आपको रेस्तरां या स्ट्रीट फूड खाना पसंद है तो आप जान रहे होंगे कि बाहर का खाना हाइजीनिक नहीं है। यह आपके द्वारा घर पर खाए गए भोजन की स्वच्छता से मेल नहीं खाता है। आखिरकार बाहर बहुत ज्यादा खाने से फूड पॉइजनिंग की समस्या हो सकती है।

रोजाना बाहर खाना खाने के दुष्प्रभाव क्या हैं?

बहुत अधिक चीनी और नमक:

जो भी भोजन आप बाहर खाते हैं, उसमें अतिरिक्त नमक और चीनी होता है। यह आपके स्वास्थ्य को सबसे खराब तरीके से परेशान करता है। चटनी, शक्कर का लेप, सलाद टॉपिंग आदि तैयार करते समय सोडियम या चीनी की मात्रा अधिक होती है, ऐसी स्थिति में आप आवश्यक मात्रा से अधिक चीनी या नमक का सेवन करते हैं।

वसा और कैलोरी:

स्ट्रीट फूड या रेस्तरां में पकाया जाने वाले भोजन में तेल होता है जिसमें वसा और कैलोरी की अधिक मात्रा होती है। इस प्रकार, इस बात का कोई पता नहीं है कि आपने एक दिन में कितनी वसा और कैलोरी का सेवन किया है। क्योंकि, यह आपका वजन बढ़ाता है।

सर्विंग प्लेट बिल्कुल भी साफ नहीं है:

आप यह सुनिश्चित नहीं कर सकते हैं कि जिस प्लेट का आप उपयोग कर रहे हैं वह पूरी तरह से साफ है और अंदर खाने के लिए स्वच्छ है। रेस्तरां अक्सर खाने की प्लेटों को ठीक से साफ नहीं करते हैं। इसलिए, बैक्टीरिया और रोगाणु प्लेटों में रहते हैं और आप बीमार पड़ जाते हैं।

जब आप बाहर खाते हैं तो आप अधिक खाते हैं:

आप अक्सर भूल जाते हैं कि आप एक डाइट को फॉलो कर रहे हैं और जब आप बाहर भोजन करते हैं तो बहुत अधिक खाते हैं। यह अंततः वजन बढ़ाने और सूजन, गैस्ट्रिक समस्या आदि का कारण बनता है।

घर मे खाने के फायदे:

पूरा परिवार जब एक साथ खाना खाता है तो उससे कुछ फायदे मिलते हैं । वहीं अगर रोजाना के खाने की बात करें तो घर का खाना ही सबसे बेस्ट होता है। साफ-सफाई, पौष्टिक तत्वों और मां के प्यार से बने हुए खाने की बात ही अलग है।

माँ के हाथ की रोटी में ...

कितना प्यार भरा होता है,
कितना लाड़ भरा होता है,
महक होती है मिठास सी,
ममता भरी होती है कुछ खास सी,
वो माँ के हाथों की बनी रोटी होती है,
जिसमें भूख प्यार बन जाती है
जो मन को सुखद एहसास कराती है,
ये वो रोटी होती है जो...
माँ को ख़ास बनाती है।
माँ की आस जगाती है।।

बता दें कि घर के खाने की तरह पूरे परिवार को एक साथ भोजन करने से भी कई फायदे मिलते हैं। आपने अक्सर फिल्मों और टीवी सीरियल में भी पूरे परिवार को एक साथ खाना खाते देखा होगा। आइए जानते हैं इसके पीछे की वजह और समझने की कोशिश करते हैं कि यह हमें कैसे फायदा पहुंचा सकता है।

गौतम - आह्वान

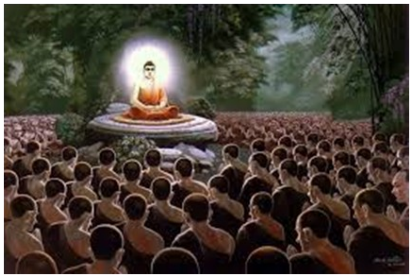

वीरेंद्र कुमार शर्मा, कनिष्ठ लिपिक/संकर्म/सेलम

हे बुद्ध ! जगत के प्राणप्रिय, फिर फैल रहा है अंधकार ।
कहीं भटक न जाए जग तेरा, हो रहा है गुरुतर धरा-भार ।।1।।
मुस्कुरा रहे हैं बमगोले, ले रहीं हैं तोपे अंगड़ाई ।
बज रहे हैं बिगुल नगारे फिर, गूंज रही है रण की शहनाई ।।2।।

हे मठ मंदिर के धर्मगुरु, लामा भिक्षु दलाई लामा !
फिर छलक रहा है महफिल में, जमकर नफरत का पैमाना ।।3।।
हे हर्ष, अशोक, कनिष्कशाह ! फिर बरस रही है अश्रुधार।
भर दे होठों पर मुस्कानें, हर दिल में अपना सरस प्यार ।।4।।

हे हिन्द, चीन, जावा, जापान, लंका, कोरिया, तिब्बत महान ।
लहरा दे जग के कण-कण में, फिर बन्धु प्रेम का मधुरगान।।5।।

जग जा नालन्दा, सारनाथ! चमका दे ज्ञान किरण जग में।
बरसा दे बौद्ध विहारों के विद्या-वैभव हर पग-पग में ।।6।।

हे परमपूज्य आनन्द देव! प्रभु गौतम के उत्तराधिकार ।
उमड़ा दे हर दिल में करूणा, फिर विश्व प्रेम की धवल धार ।। 7 ।।
हे बोधिवृक्ष! जीवनदाता, दम तोड़ रहा है सहज प्यार ।
दे दे नवजीवन फिर जग को, दिखला दे अपना चमत्कार ।।8।।

हे कपिलवस्तु, वन लुम्बिनी ! सर उठा लिया है दुराचार ।
दे दे फिर बुद्ध रतन जग को, कर दे वसुन्धरा का उद्धार ।19।।

हे बुद्ध प्रेमी जनता नेता ! नफरत का दाग मिटाना है ।
फिर सत्य अहिंसा के जल से, सारे जग को नहलाना है।।10।।

ऑनलाइन शिक्षा

सूरज पी.एस, ट्रैक मेंटेनर III, सेलम/दक्षिण

शिक्षा जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। शिक्षा हम किसी भी माध्यम द्वारा ग्रहण कर सकते है। शिक्षा मनुष्य को बौद्धिक रूप से तैयार करती है। पौराणिक काल से हम गुरुकुल या कक्षा में जाते हैं और शिक्षक के सामने बैठकर उनका ज्ञान प्राप्त करते हैं। आधुनिक युग में तकनीकी विकास के साथ शिक्षा के तरीके बदल गए है । आज शिक्षा भी ऑनलाइन प्राप्त हो रहा है । कोविड महामारी ने तो ऑनलाइन शिक्षा को और व्यापक बनाया । लॉकडाउन के कारण स्कूलों में अपने दोस्तों के साथ पढ़ते, खेलते और मस्ती करते बच्चे अचानक घर में बंद कर दिए और मोबाइल कंप्यूटर में शिक्षा प्राप्त करने लगे । हर एक चीज का दो पक्ष होते हैं । वैसे ही ऑनलाइन शिक्षा का भी कुछ गुण भी है और दोष भी ।

ऑनलाइन शिक्षा क्या है? ऑनलाइन शिक्षा को सरल भाषा में इंटरनेट आधारित शिक्षा व्यवस्था कहते है। यह शिक्षा का नवीनतम रूप है हम अपने शिक्षक से इंटरनेट की मदद सेलैपटॉप या मोबाइल के माध्यम से उनसे मिलते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं। सालों पहले ही ऑनलाइन शिक्षा को स्वीकृति मिली है। जिन्हें सामान्यतः दूरस्थ शिक्षा कहा जाता है। इसमें निर्धारित पाठ्यक्रम को डीवीडी और इन्टरनेट के माध्यम से सिखा दी जाती हैं।

ऑनलाइन शिक्षा के प्रकार— सिंक्रोनस शैक्षिक व्यवस्था: यह रियल टाइम लर्निंग या लाइव टेलीकास्ट लर्निंग है। इस शैक्षिक व्यवस्था में एक ही समय में शिक्षक और छात्रों के मध्य संवाद स्थापित होता है तथा अध्ययन की गतिविधियां संचालित की जाती हैं। ऑडियो और वीडियोकॉन्फ्रेंसिंग, लाइवचैट तथा वर्चुअल क्लासरूम आदि इसके उदाहरण हैं। असिंक्रोनस शैक्षिक व्यवस्था: इस शैक्षिक प्रणाली में छात्र अपनी स्वेच्छा से जब चाहे दी गई अध्ययन सामग्री को पढ़ या देख व सुन सकता हैं। इसमें रिकोर्डड क्लास विडियो, ऑडियो ई बुक्स, वेबलिंक्स, प्रेक्टिससेट आदि सम्मिलित हैं।

आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्त करने का एक सरल तरीका है ऑनलाइन शिक्षा। आधुनिक समय में ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली एक वरदान की तरह है। जिसने किसी कारण वश शिक्षा ग्रहण नहीं की वे ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली से नए आयाम हासिल कर सकता है। ऑनलाइन शिक्षा से समय बचता है औरछात्र शिक्षा को अपनी सुविधानुसार समय तथा जगहचुनकर आराम से ले सकते हैं। बच्चे लगातार अपने शिक्षकों को ऑनलाइन कक्षा में पढ़ने कीरूचि रखते हैं । ऑनलाइन शिक्षा में अलग से ट्यूशन याकोचिंग सेंटर का खर्च भी बचता है ।ऑनलाइन शिक्षा में, बच्चे कक्षाओं से डरते नहीं हैं तथा एक ही विषय संबंधित वीडियो को बार-बार देख सकते हैं इस प्रकार जल्दी-जल्दी मेंनोट्स बनाने की जरूरत भी नहीं हैं । ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली से छात्र घर में बैठे घर या विदेश में शिक्षा ग्रहण कर सकते है।ऑनलाइन शिक्षा से आप किसी भी विषय को समझ सकते है और अपने ज्ञान में बढ़ोतरी कर सकते है। कई छात्र ऐसे भी है जो कोचिंग सेंटर जाना चाहते है लेकिन दूर की वजह वे नहीं जा पाते है तो ऑनलाइन शिक्षा का लाभ उठा कर शिक्षा ग्रहण कर सकते है ।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली की कुछ कठिनाइयां भी है ऑनलाइन शिक्षा का संबंध सीधे इंटरनेट ऑरडिजिटल मीडिया से हैं । शिक्षा पाने में डिजिटल मीडिया की मदद ले सकते हैं । लेकिन पूर्ण रूप से डिजिटल मीडिया पर आश्रित होने का क्या प्रभाव होगा।

भारत में अभी ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली पर अमल इतनी नहीं हुआ है ।इंटरनेट प्रणाली अभी तक कुछ छात्रों तक सीमित है इसका सब छात्र इसका लाभ नहीं उठा पाते है ।इंटरनेट स्पीड भी एक बड़ी समस्या है । आज भी कई माध्यम वर्गीय परिवारों में स्मार्टफोन जैसी मूल सुविधा भी उपलब्ध नहीं हैं।

हर शिक्षा संस्थान का अपना शैक्षिक बोर्ड, विश्वविद्यालय है जिसमें अलग अलग पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षा ग्रहण की जाती है ।पाठ्यक्रम की असमानता एक बड़ी चुनौती है ।कई विषयों में व्यवहारिक शिक्षा की जरूरत होती है ।तकनीकी समझ भी सबसे बड़ी चुनौती है क्योंकि ये शिक्षा प्राप्त करने का नया माध्यम है ।शिक्षक और छात्र अधिकतर आठ घंटे ऑनलाइन टाइम बिताते ही जो कि मानसिक और शारीरिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं है।अपनी आर्थिक स्थिति के उलट जाकर माता- पिता बच्चों को मोबाइल, लेपटॉप, कम्प्यूटर जैसी सुविधा उपलब्ध करा देने पर भी बच्चे उससे सही शिक्षा ले रहे है कि नहीं इसपर निगरानी करनी होगी । ऑनलाइन शिक्षा में शिक्षक और छात्रों के सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते जितना स्कूली शिक्षा में होता है। अगर शिक्षा पारंपरिक हो तो बच्चा उसकी वक़्त विषय के बारे में बात कर सकता है ।जब कोई छात्र स्कूल में पढ़ाई में ध्यान नहीं लगा पाता तो ऑनलाइन में कैसे ध्यान कर पाना और मुश्किल हैं ।

ऑनलाइन शिक्षा के महत्व को हम नजर अंदाज नहीं कर सकते क्यूंकि संकंट के समय ऑनलाइन शिक्षा की वजह से बच्चों की पढ़ाई कभी रुकी नहीं । ऑनलाइन शिक्षा उन लोगों के लिए अत्यंत सुविधा जनक है जो काम करते हुए या घर संभालते हुए अपनी पढ़ाई करना चाहते है। यह एक नया शिक्षा प्रणाली है जो हर देश अपना रहा है। छात्रों को ज़रूरत है कि वह मन और ध्यान केंद्रित करके पढ़ाई करें। डिजिटल मीडिया का अस्वास्थ्यकर तरीके से उपयोग करने से बच्चों के बौद्धिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। दिन का अधिकांश समय ऑनलाइन कक्षाओं के लिए उपयोग करने के कारण, बच्चों में बुरा प्रभाव पड़ता है ।

यह कहना उचित होगा कि छोटे बच्चों के लिए पारंपरिक स्कूली शिक्षा उचित है । स्कूलों के माहौल और घर के माहौल में कई अंतर होते हैं। बच्चों को आमतौर पर स्कूलों में अपने साथियों के साथ खेलते हुए बड़ा होना चाहिए। इससे उनके बौद्धिक विकास और मानसिक विकास में मदद मिलेंगे। शिक्षा की प्रक्रिया केवल ज्ञान का अर्जन नहीं है - यह छात्र में नैतिक मूल्यों को विकसित करने, कौशल को बढ़ावा देने, अच्छी आदतें, समय पाबंदी और चरित्र लक्षण प्रदान करने की एक महान प्रक्रिया है जो व्यक्तित्व विकास के अंतिम लक्ष्य की ओर ले जाती है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के माध्यम से समाज का विकास है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है । समाज से निरंतर संपर्क से ही मनुष्य का विकास होता है ।

भारत में ऑनलाइन शिक्षा अपनी आरंभिक चरण में हैं । हमारे देश में हर कोने मेंडिजिटल उपलब्धता, कनेक्टिविटी, इंटरनेट स्पीड, इंफ्रास्ट्रक्चर आदि के मामले में और अधिक सुविधाओं की जरूरत है । तभी सऑनलाइन शिक्षा को संपूर्णता में अपना सकती है ।

स्वामी विवेकानंद

पी. अशोकन,तकनीशियन-I/सेलम

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी साल 1863 को कोलकाता में हुआ था. इस खास दिन को हर साल देश भर में राष्ट्रीय युवा दिवस (National Youth Day) के रूप में मनाया जाता है। एक युवा संन्यासी के रूप में भारतीय संस्कृति की सुगंध विदेशों में बिखेरनें वाले **स्वामी विवेकानंद** साहित्य, दर्शन और इतिहास के प्रकाण्ड विव्दान थे। स्वामी विवेकानंद – ने ' योग' , **'राजयोग'** तथा ' **ज्ञानयोग'** जैसे ग्रंथों की रचना करके युवा जगत को एक नई राह दिखाई है जिसका प्रभाव जनमानस पर युगों-युगों तक छाया रहेगा।

कन्याकुमारी में निर्मित उनका स्मारक आज भी स्वामी विवेकानंद महानता की कहानी बताता है। ऐसी सोच वाले व्यक्तित्व थे– स्वामी विवेकानंद। जिन्होनें अध्यात्मिक, धार्मिक ज्ञान के बल पर समस्त मानव जीवन को अपनी रचनाओं के माध्यम से सीख दी वे हमेशा कर्म पर भरोसा रखने वाले महापुरुष थे। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि अपने लक्ष्य को पाने के लिए तब तक कोशिश करते रहना चाहिए जब तक की लक्ष्य हासिल नहीं हो जाए।आधुनिक युग के बड़े ही प्रतिभावान चिंतक थे। उन्होंने अपने गुरुदेव श्री रामकृष्ण परमहंस के विचारों को सुदूर देशों में ही नहीं फैलाया,बल्कि वेदांत की शिक्षा के लिए अमेरिका और यूरोप में विभिन्न मिशनरियों की स्थापना भी की।

वे भारत की प्राचीन वर्ण व्यवस्था के विरोधी थे। उनके अनुसार आधुनिक युग में वर्ण व्यवस्था सामाजिक अत्याचारों को प्रोत्साहन देने वाली है। इस वर्ण व जाति व्यवस्था ने भारतीय समाज को खोखला कर दिया है।" वे एकाधिकारवाद के विरोधी थे। उन्होंने परम्परावादी ब्राह्मणों के पुरातन अधिकारवाद का खण्डन किया। यह अधिकार शूद्रों (देश की बहुसंख्यक जनता) को वैदिक ज्ञान से वंचित करना था। उनके अनुसार सभी मनुष्य बराबर हैं और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र का भेदभाव उचित नहीं।" सभी हर क्षेत्र में समान अधिकार होना चाहिए।

तेजस्वी प्रतिभा वाले महापुरुष स्वामी विवेकानंद के विचार काफी प्रभावित करने वाले थे जिसे अगर कोई अपनी जिंदगी में लागू कर ले तो सफलता जरूर हासिल होती है – यही नहीं विवेकानंद जी ने अपने अध्यात्म से प्राप्त विचारों से भी लोगों को प्रेरित किया जिसमें से एक विचार इस प्रकार है –

1. कभी ना मत कहो, कभी मत कहो, 'मैं नहीं कर सकता', क्योंकि तुम अनंत हो। सारी शक्ति आपके भीतर है। आपके द्वारा कुछ भी किया जा सकता है।
2. जब आप व्यस्त होते हैं तो सब कुछ आसान होता है। लेकिन जब आप आलसी हों तो कुछ भी आसान नहीं होता।
3. अपने जीवन में जोखिम उठाएं, यदि आप जीतते हैं, तो आप नेतृत्व कर सकते हैं! यदि आप हार जाते हैं, तो आप नेतृत्व कर सकते हैं।

5. अपने लक्ष्यों को अपनी क्षमताओं के स्तर तक कम न करें। इसके बजाय, अपनी क्षमताओं को अपने लक्ष्यों की ऊँचाई तक बढ़ाएँ।

6. ज्ञान का दान संसार का सर्वोच्च दान है।

7. दुर्बलता का उपाय दुर्बलता के बारे में सोचना नहीं है, अपितु सामर्थ्य के बारे में सोचना है।

8. एक विचार लो, अपने आप को उसके लिए समर्पित करो, धैर्य से संघर्ष करो, और सूरज तुम्हारे लिए उदय होगा। किसी और को दोष मत दो, अज्ञानियों की गलती मत करो।

9. धर्म में बोध होता है। हमें ईश्वर को महसूस करना चाहिए, ईश्वर को महसूस करना चाहिए, ईश्वर को देखना चाहिए, ईश्वर से बात करनी चाहिए। वह धर्म है।

10. सच्चा धर्म बातें, या सिद्धांत, या सिद्धांत नहीं है, और न ही यह सांप्रदायिकता है। यह आत्मा और ईश्वर के बीच का संबंध है। धर्म में मंदिरों का निर्माण, या गिरजाघरों का निर्माण, या सार्वजनिक पूजा में शामिल होना शामिल नहीं है। यह किताबों में, या शब्दों में, या व्याख्यानों में, या संगठनों में नहीं मिलता है।

11. पवित्रता, धैर्य और दृढ़ता सभी बाधाओं को दूर कर देती है। सभी महान चीजें अवश्य ही धीमी होनी चाहिए।

12. प्रत्येक सफल व्यक्ति के पीछे कहीं न कहीं जबरदस्त ईमानदारी, जबरदस्त ईमानदारी होनी चाहिए, और यही जीवन में उसकी सांकेतिक सफलता का कारण है। हो सकता है कि वह पूरी तरह से निःस्वार्थी न रहा हो; फिर भी वह इसकी ओर प्रवृत्त था। यदि वह पूरी तरह से निःस्वार्थ होता, तो वह बुद्ध या ईसा मसीह की सफलता के समान ही महान होता। निस्वार्थता की डिग्री हर जगह सफलता की डिग्री को चिह्नित करती है।

13. आत्म-बलिदान, आत्म-विश्वास नहीं, उच्चतम ब्रह्मांड का नियम है।

14. दिन में कम से कम एक बार खुद से बात करें। अन्यथा, आप इस दुनिया के एक उत्कृष्ट व्यक्ति से मिलने से चूक सकते हैं।

15. प्रत्येक मनुष्य के जीवन में एक मिशन होता है, जो उसके सभी अनंत पिछले कर्मों का परिणाम होता है।

16. जिसके हृदय की पुस्तक खुल गई है, उसे और किसी पुस्तक की आवश्यकता नहीं।

17. अपने आप पर विश्वास करें और दुनिया आपके चरणों में होगी।

18. आप जो सोचते हैं वो आप हो जायेंगे। यदि तुम अपने को कमजोर सोचते हो, तो तुम कमजोर हो जाओगे; अगर आप खुद को मजबूत सोचते हैं, तो आप बन जाएंगे।

19. पुस्तकें संख्या में अनंत हैं और समय कम है। ज्ञान का रहस्य यह है कि जो आवश्यक है उसे ग्रहण कर लो। इसे लें और इसे जीने की कोशिश करें।

20. मानव मन की शक्ति की कोई सीमा नहीं है। यह जितना अधिक केंद्रित होता है, उतनी ही अधिक शक्ति एक बिंदु पर सहन करने के लिए लाई जाती है।

वेकानंद ने अपने विचारों को सीधे लोगों, खासकर युवाओं तक पहुंचाया। **उनका संदेश जाति और पंथ की बेड़ियों को तोड़ता है और सार्वभौमिक भाईचारे की भाषा की बात करता है।** उन्होंने जो कहा वह आज हमारे देश में युवाओं के बीच उनके विचारों और आदर्शों के महान महत्व को दर्शाता है। स्वामी विवेकानंद के जीवन से हमें यह शिक्षा मिलती है कि **अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के कड़ी मेहनत करे नथा मानवता और धर्म के लिए जीवन जिए।**

पेट की भूख

भरत कांत, तकनीशियन III , डीजल शेड/ईरोड

दुनियां में लोगों को अलग-अलग प्रकार की भूख है , किसी को नाम की , किसी को दौलत की , किसी को शोहरत की । पर आज हम भूख की बात करेंगे वह है 'पेट की भूख' । इस पेट की भूख को शांत करने के लिए मानव किसी भी हद तक जा सकता है ।डब्ल्यूएचओ (WHO) यह भी कहता है कि अब तक शिशु मृत्यु के कुल में से आधे मामलों के लिए कुपोषण ही उत्तरदायी है। एफएओ (FAO) के अनुसार वर्तमान में 1 बिलियन से भी ज्यादा लोग, या इस ग्रह पर प्रति छह में से एक व्यक्ति भुखमरी से प्रभावित है।

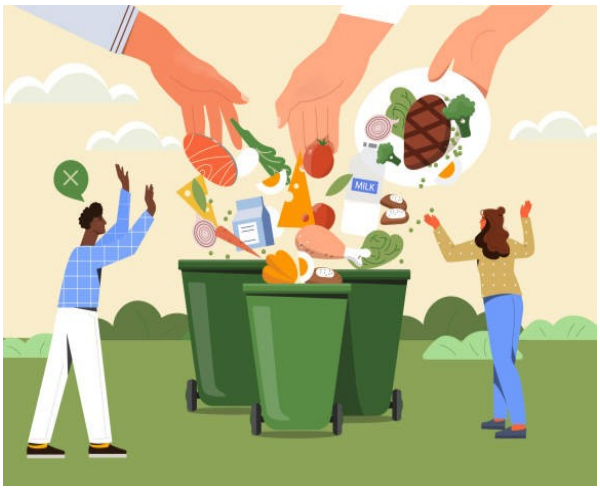

भुखमरी के दो आयाम होते हैं- मौसमी और दीर्घकालिक। इनमें अंतर इस प्रकार है- दीर्घकालिक भुखमरी— यह मात्रा और गुणवत्ता के आधार पर अपर्याप्त भोजन के कारण होती है। गरीब लोग अएपनी कमाई के कारण खाद्य पदार्थ नहीं खरीद पाते, और इस भुखमरी का शिकार हो जाते है। मौसमी भुखमरी- यह पूरी फसल प्रक्रिया में फेरबदल के कारण होती है।

आज विश्व की जनसंख्या लगभग 775.28 करोड़ है । शायद आपको जानकर हैरानी होगी कि इस जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग तकरीबन 100 करोड़ लोग जो कि प्रति दिन भूखा सोने को मजबूर है । वही यदि हम अपने भारत देश की बात करें तो आज हमारे देश की जनसंख्या लगभग 138 करोड़ है, जिसमें से तकरीबन 100 करोड़ लोग जो कि प्रतिदिन भूखा सोते हैं और इस भुखमरी की त्रासदी को झेल रहे हैं। आज भारत में ही प्रतिदिन 1000 से ज्यादा बच्चे भूख के कारण मौत का शिकार हो रहे हैं भुखमरी एक वैश्विक आपदा है , जिससे बचने के लिए विश्व के सभी देशों को मिलकर ठोस कदम उठाते होंगे, नहीं तो वह समय दूर नहीं जब ये भूख नामक दानव पूरे मानव समाज को दानव बना देगा । इस भुखमरी का कारण कौन है, हम, हमारा समाज, सरकार या तेजी से बढ़ रही जनसंख्या ?

भारत में भुखमरी की समस्या का एक मुख्य कारण यह भी है कि यहां विकसित देशों की तुलना में प्रति हेक्टेयर धान, गेहुँ का उत्पादन 3,500 किलो से ज्यादा है, वही भारत में बमुश्किल प्रति हेक्टेयर उत्पादन 2000 किलो तक ही हो पाता है।

आज तेजी से बढ़ रही जनसंख्या की रोजमर्रा की आवश्यकताओं की पूर्ति करना मुश्किल हो रहा है तो हम मान सकते हैं कि जनसंख्या वृद्धि भुखमरी के कारणों में प्रमुख घटक (कारण) है ।परंतु आपको ये जानकर हैरानी होगी कि भारत विश्व में खाना बर्बाद करने के मामले में दूसरे स्तर पर आता है । आंकड़ों के मुताबिक भारत में हर साल 608 करोड़ टन खाना बर्बाद होता है । इस खाने से न जाने कितने परिवारों की भूख शांत की जा सकती है ।

निजी कार्यक्रम हो या सार्वजनिक, सीमित मात्रा में व्यंजन होना चाहिए, जितना हम अलग-अलग प्रकार के व्यंजन बनाएंगे, भोजन उतना ही व्यर्थ होता है ।

शायद संपन्न वर्ग ये नहीं जानता कि जितना भोजन वे व्यर्थ फेंक रहे हैं, यदि उतना भोजन भी किन्हीं जरूरतमंद को मिल जाएगा तो शायद रात में उन्हें भूखा पेट नहीं सोना पड़ेगा। इसलिए इस भुखमरी नामक आपदा के लिए हम किसी एक को जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते। किंतु हम सब मिलकर इस आपदा से समाज को बाहर निकाल सकते हैं।

इस खाने की बरबादी का जिम्मेदार कहीं न कहीं हमारा समाज है। क्योंकि आज की चका चौंध भरी दुनिया में संपन्न परिवार अपने पारिवारिक कार्यक्रमों में अनेक तरह के व्यंजन बनवाते है, जिसे हम लोगों द्वारा आधा खाया व आधा बर्बाद किया जाता है।

शायद संपन्न वर्ग ये नहीं जानता कि जितना भोजन वे व्यर्थ फेंक रहे हैं, यदि उतना भोजन भी किन्हीं जरूरतमंद को मिल जाएगा तो शायद रात में उन्हें भूखा पेट नहीं सोना पड़ेगा। इसलिए इस भुखमरी नामक आपदा के लिए हम किसी एक को जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते। किंतु हम सब मिलकर इस आपदा से समाज को बाहर निकाल सकते हैं।

निजी कार्यक्रम हो या सार्वजनिक, सीमित मात्रा में व्यंजन होना चाहिए, जितना हम अलग-अलग प्रकार के व्यंजन बनाएंगे, भोजन उतना ही व्यर्थ होता है।

इसलिए हम सब को मिलकर काम करना होगा क्योंकि हमारे द्वारा बर्बाद होने से बचाया गया भोजन शायद किसी की रात का भरपेट खाना बन जाए और उसे भूखा न सोना पड़े।

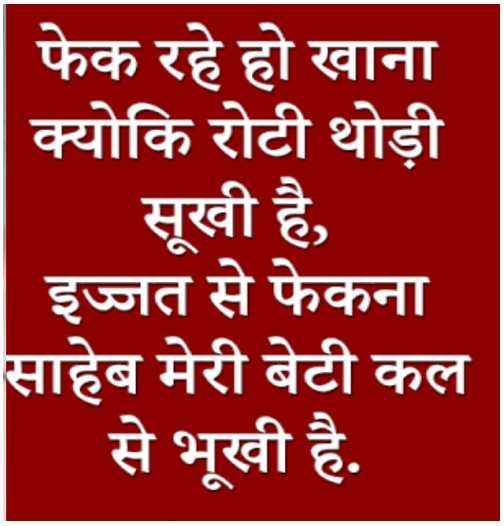

वाकिंग इनसाइक्लोपीडिया

रेखा आर., तकनीशियन-II/डीजल लोको शेड, ईरोड

मेरे घर का रास्ता बड़ा ही आसान है। पहाडियों जैसी सीढ़ियाँ है, सीढियां चढ़ते ही आगे बढ़ने पर एक संकरा रास्ता दिखता है । यह रास्ता आपको मेरे बरामदे तक पहुंचा देगा। इसके जरिए आप मेरे घर के मुख्य दरवाजे तक पहुंच सकते हैं। जब यह दरवाजा खुलता है तो एक चौड़ा गलियारा दिखाई देता है। यह घर मेरी दुनिया है और मेरी दुनिया सबसे अलग है। जैसे ही मैं यहां पहुंच जाती हूं तो मैं यह दरवाजा बंद कर देती हूं.....

वही मेरा साम्राज्य है.... मैं ही यहाँ का राजा, मंत्री, सेनापति, परिचारक और रसोइया हूँ।

यहाँ मैं बिलकुल अकेली नहीं हूँ, मेरे साथ मेरे पसंदीदा गाने और उसके मीठे बोल हैं....

क्या ये गाने और बोल (अक्षर) अकेलेपन की सबसे मजबूत दवा नहीं हैं ?

अपने अंदर समेटे हुए भावनाओं के उबार को कैसे महसूस किया जा सकता है, मेरे सिवाय यह समझने वाला इस दुनिया में कोई भी नहीं है।

यहाँ पर मेरे घर में एक कुर्सी है, जो मेरे वजन को संभालती है अर्थात जिस पर मैं बैठकर आराम करती हूँ। यह मेरे अकेले पन में मुझे मेरा कोई अपना है जैसा महसूस कराती है, ऐसे जैसे मेरी प्रिय सहेली। ऐसा लगता है यह कुर्सी जीवन भर मेरी सहेली रही है, उसने मेरे दिल को छू लिया, हमेशा मुझे सहारा दिया ।

मेरा हर सुख, हर दुख उसने देखा....

यह कमरा मेरा ब्रह्मांड है। यहां पर हमेशा संगीत ही गूंजता है....

यह संगीत मन को छू जाता है और मुझे हमेशा खुश कर देता है...

मेरे बेचैन मन को शांति प्रदान करता है ..

मेरी कुर्सी पर बैठकर मुझे ऐसा लगता है जैसे दीवार से संगीत बह रही हो ...

एक बेतुकी कहानी की तरह ...

मैं अपने को डोरी से बंधी बोरी की तरह महसूस कर रही हूं ।

हल्की हवा बह रही है । यह हवा अनन्नास की तरह महक रही है....

नहीं.. यह तो चंदन के साबुन की महक हैं.... और यह महक बहुत जाना पहचाना सा मालूम पड रहा है .....

मुझे कुछ याद आ रहा है हां अरे... यह मेरी दादी की गंध है ....

मैं चौंक पड़ी .....

मेरी दादी... जिन्होंने मुझे छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से महान सिद्धांत सिखाए.....

मैं हमेशा मौत से जुड़ी सपने देखती थी ।

लाल रेशम से ढके ताबूत का सपना देख कर डर के मारे मैं भागने वाली ही होती हूँ कि तभी मुझे सीने से

लगाकर मेरी दादी बोलती थी, मौत तो बस पुराने कपड़े छोड़कर नए कपड़े पहनने जैसा है और मृतकों की

दुनिया में हमेशा खुशी ही पाई जाती है, वहां हर तरफ फूलों की तरह खिलखिलाती हंसी ही होती है... वहां पर कोई डर नहीं, कोई दर्द नहीं....

दादी अपनी कहानियों से बहुत सारी सीख देती थी, इसमें महाभारत, भगवद गीता और उपनिषद की कहानियां भी शामिल हैं। दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं था जो दादी नहीं जानती थी ।

दादी को तो सब पसंद करते थे । मेरी और दादी का एक खूबसूरत सा रिश्ता है.... दादी का एक स्पर्श या देखना भर ही मुझे शांति के शिखर पर पहुंचाने के लिए काफी था।

एक बार टीवी पर एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम चल रहा था, उसमें नाटक 'ओथेलो' से संबंधित एक प्रश्न था....

दादी ने बिना कुछ बोले टीवी के सामने खड़ी होकर हमारे लिए गाना गाने लगी....

'कैसियो एक अच्छा प्रेमी और देखने में सुंदर है....."

"कैसियो एक अच्छा प्रेमी और देखने में सुंदर है...."

फिर मैं भी गायी "कैसियो एक अच्छा प्रेमी देखने में सुंदर है..."

अचानक मैं अपने सपने से बाहर आ गई....मैंने आँखे खोली....

अनान्नास की महक अभी भी आ रही थी .....

मेरी दादी.....मेरी दादी तो वॉकिंग इनसाइक्लोपीडिया थी.....

तारमंगलम कैलासनाथर मंदिर

एम.कनिमोळि, ट्रैकमेन-III /सेलम

सेलम जिला शास्त्रों और कलाओं के बेहतर पारंपरिक दृष्टिकोण के लिए अच्छी और प्रसिद्ध है जो हमें पौराणिक कथाओं और पुराने दिनों की लोक कथाओं के बारे में बताती है। सेलम में बहुत प्राचीन मंदिर भी हैं । तारमंगलम कैलासनाथर मंदिर सेलम जिले के खूबसूरत मंदिरों में से एक है जो सेलम से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। ये मूलतः शिव मंदिर है। मंदिर का निर्माण पत्थरों पर अच्छी नक्काशी से किया गया है और छतों पर पुराने शास्त्रों और कलाओं का अंकन हैं जो कि बहुत सुंदर है । छत के ऊपर एक रचनात्मक कमल का फूल है जो अधिकांश दर्शकों को अपने रंग और सुंदरता से मंत्रमुग्ध कर देता है।

इस मंदिर का इतिहास बहुत ही पुराना है। यह एक बार में बना हुआ मंदिर नहीं है। इसका कुछ हिस्सा 10वीं सदी के शुरू में ही अस्तित्व में था। 17वीं सदी से केट्टी मुदली के शाही परिवार ने मंदिर का विस्तार किया। बाद में, मुम्मुडि चोल और सियाळि राजा ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया और त्यौहार मनाए। यह मंदिर राजा वणंगामुडी के शासनकाल के दौरान पूरी तरह से बनकर तैयार हुआ था। इस मंदिर के चारों ओर 306' और 164' फीट का विशाल पत्थर की दीवार बनाया गया है। इसे 13वीं शताब्दी में बनाया गया था। मंदिर का सामने का मीनार 90 फीट ऊंचा है और पाँच परतों से मिलकर बना है। यह मीनार घोड़ों और हाथियों द्वारा खींचे गए एक विशाल रथ जैसा दिखता है।

दरवाजा खोलकर अंदर कदम रखने पर शरीर की सारी गर्मी खींचने के लिए दो फुट की दूरी पर एक बड़ा लाल रंग के मूंगा पत्थर से सीढ़ियाँ बनाय गया है। मंदिर के अंदर जो भी जाते हैं, वे इस पत्थर पर एक मिनट बिताता है सिर्फ बैठे रहने से हमे शीतलता का अनुभव होता है। इस लाल पत्थर से कई खूबसूरत मूर्तियां बनी हैं लेकिन यह पत्थर तमिलनाडु में उपलब्ध नहीं थे। सीढ़ियों में लगाने के लिए ये पत्थर बाहर से लाया गया है ।

कहा जाता है कि चंद्रमा और सूर्य इस मंदिर में आकर भगवान की पूजा करते हैं। हर साल उत्तरायण और दक्षिणायन के शुभ अवसर पर शाम के समय सूर्य की किरणें और चंद्रमा का प्रकाश शिवलिंग पर पड़ता है। मासी माह के 9, 10, 11 तिथि में सूर्य का प्रकाश नंदी के सींग से होकर गुजरता है और शिवलिंग पर तीसरे अर्धचंद्र की तरह गिरता है, इसे देखने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु उन तिथियों पर आते हैं।

एक मूर्ति इस प्रकार बनी है कि रति की मूर्ति से कामदेव दिखाई नहीं देते और कामदेव की मूर्ति से रति दिखाई देती है। इस मंदिर में पत्थर की जंजीर, पत्थर का कमल और शेर आदि मूर्तिकला के बेहतरीन उदाहरण देखने को मिलते हैं।

तारमंगलम मंदिर के सामने के एक खंभे पर भगवान राम और दूसरे पर बाली की छवि है। अगर हम बाली की मूर्ति पर अपनी दृष्टि रखेंगे तो हमें राम की छवि नहीं दिखेगी। यदि हम राम की मूर्ति पर अपनी दृष्टि रखेंगे तो हमें बाली की छवि दिखाई देगी। ऐसे कलात्मक स्वभाव के साथ कहानी कही गई है।

यह एकमात्र ऐसा मंदिर है जहां पर ऐसी एक मूर्ति है जिसमें सबसे छोटे जीव, चींटियों के प्रवेश के लिए छिद्रों को उकेरा गया है । चींटियों के प्रवेश करने के जितना छोटा द्वार के साथ एक आदमी के चेहरे को बनाया गया है रेंगने वाली चींटियां मूर्तिकला के कानों के माध्यम से प्रवेश कर सकती हैं और नाक के माध्यम से बाहर निकल सकती हैं और पीछे दाढ़ी के द्वार से प्रवेश करके दूसरी तरफ जाकर दूसरे कान से बाहर निकल सकती हैं।

चोल और पांड्य देशों की सारी संपत्ति लूटकर, अपने साथ आए हाथियों और ऊँटों पर लादकर लौटने का, केट्टी मुदली के सैनिकों ने अपनी मातृभूमि वापस जाते समय मलिकापुर पर हमला करने के लिए युद्ध की रणनीति बनाने का, मदुरै में लूटी गई सारी संपत्ति को हाथियों और ऊंटों पर ले जा रहे मलिकापुर के सैनिकों पर हमला कर के केट्टी मुदली के सैनिकों द्वारा सभी धन को लेने के बाद, एक हाथी बिना किसी बोझ के मलिकापुर जाने का आदि दृश्य मंदिर की पत्थर की दीवार पर उकेरी गई है।

पाताल लिंगम - यह इस मंदिर का एक बहुत ही खास जगह है। भक्तों का विश्वास है कि हर मंगलवार को हरे कपूर के साथ नीचे एक वायुरोधी कक्ष में स्थित इस पाताल लिंगम की, पूजा करने से विवाह, संतानोत्पत्ति और करियर में विकास होता है।

शेर के मुंह में लुढ़कता हुआ पत्थर

सुरकेश्वर- इस मंदिर में खास बात यह है कि सुरकेश्वर के 3 सिर और 3 पैर हैं। माना जाता है कि काली मिर्च के रसम के साथ चावल तैयार कर 'वडमाला' से उसकी पूजा करने से बुखार और गंभीर बीमारी दूर हो जाते हैं।

मेरे ख्वाब

निमिता के.वी, कनिष्ठ अनुवादक, राजभाषा अनुभाग

मन करता है, भाग जाऊ
दूर कहीं
फिर लगता है, मंजिल मेरा
दूर नहीं
सही रास्ता है, मंजिल तक का
पास कहीं
लग जाऊँ, कोशिश में
देर नहीं
मिल जाएंगे, ताज विजय का
हार नहीं

टूटा नहीं है ख्वाब मेरा
ऊंचा उड़ने का
हिम्मत मत करना काटने का
पंख मेरा
कभी कमजोर नहीं पड़ेगा
इरादा मेरा
एक दिन होगा मेरा
ख्वाब पूरा

संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण की कुछ झलकियाँ....

कवि सम्मेलन

पुस्तक परिचय कार्यक्रम

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 53वीँ बैठक एवं पुरस्कार वितरण

नराकास, अंतर विभागीय एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला

भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, एरकॉड

पावरग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया , के.आर. तोप्पूर

राजभाषा उत्सव- 2022-2023— पुरस्कार वितरण

प्रतियोगिता	दिनांक
हिंदी निबंध	05.09.2022
टिप्पण व आलेखन	
वाक्	06.09.2022
पुस्तकालय	
सामान्य प्रश्नोत्तरी	07.09.2022
हिंदी फिल्म गीत	

हिंदी निबंध

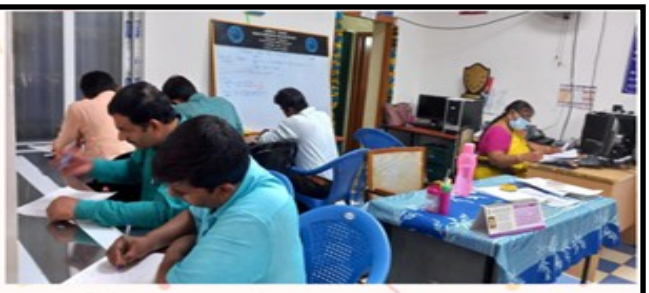

टिप्पण व आलेखन

वाक्

पुस्तकालय

राजभाषा उत्सव- 2022-2023— पुरस्कार वितरण

कोई भी भाषा बडी या छोटी नहीं होती है, वे तो ज्ञान का द्योतक है। उनमें हिंदी भाषा एक ऐसी भाषा है जो सभी भाषाओं को अपने में समाहित करके सदियों से अविरल बही जा रही है। अतः हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना हमारा कर्तव्य है।

स्टेशन राभाकास बैठक की झलकियां

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।

- बालकृष्ण शरमा "नवीन"

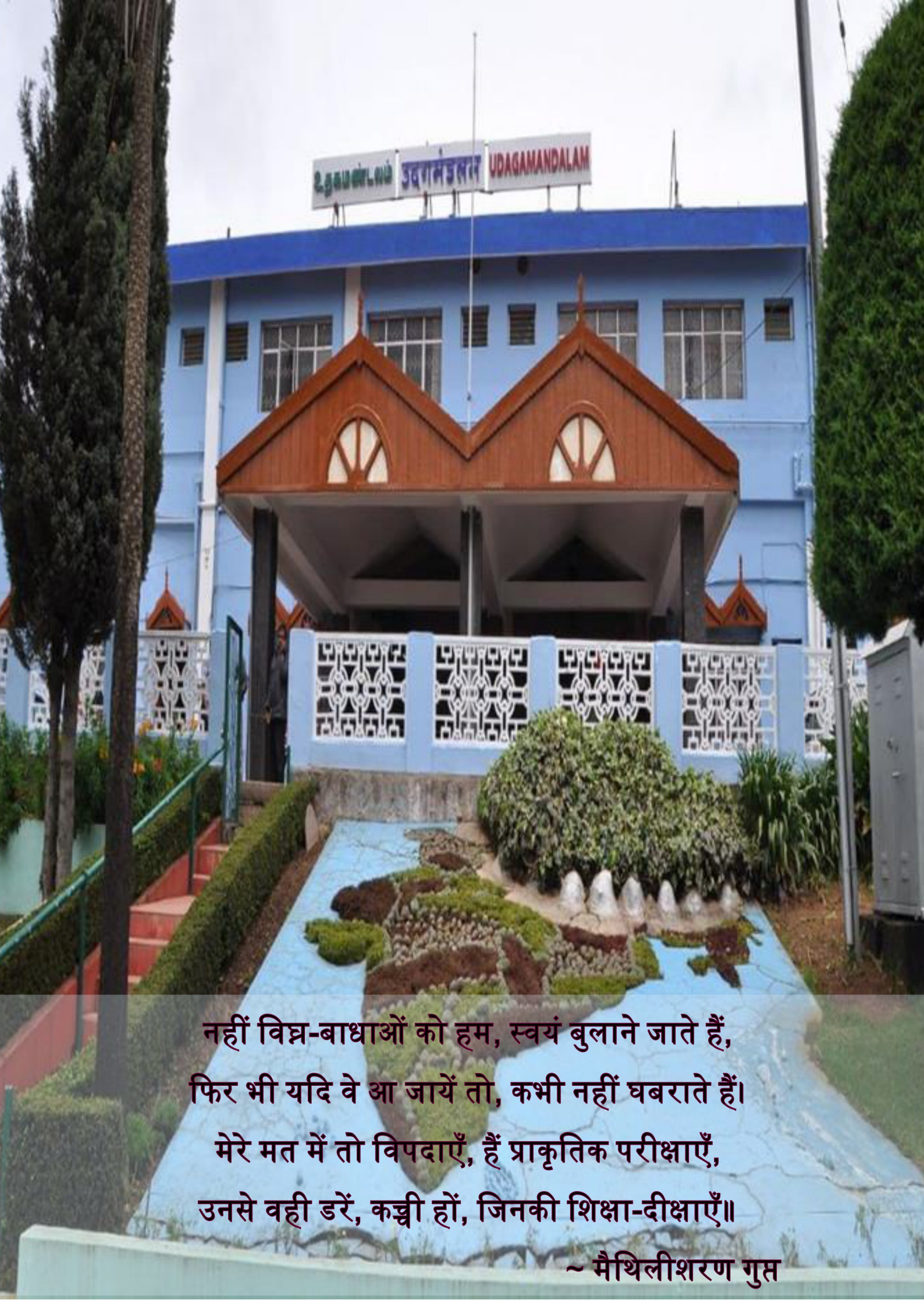

नहीं विघ्न-बाधाओं को हम, स्वयं बुलाने जाते हैं,
फिर भी यदि वे आ जायें तो, कभी नहीं घबराते हैं।
मेरे मत में तो विपदाएँ, हैं प्राकृतिक परीक्षाएँ,
उनसे वही डरें, कच्ची हों, जिनकी शिक्षा-दीक्षाएँ॥

~ मैथिलीशरण गुप्त